18-1-97

अपनी सूरत से बाप की सीरत को प्रत्यक्ष करो तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा

आज बापदादा दो विशाल सभायें देख रहे हैं। एक तो साकार रूप में आप सभी सम्मुख हो और दूसरी अव्यक्त रूप की विशाल सभा देख रहे हैं। चारों ओर के अनेक बच्चे इस समय अव्यक्त रूप में बाप को सम्मुख देख रहे हैं, सुन रहे हैं। दोनों ही सभा एक दो से प्रिय हैं। आज विशेष सभी के दिल में ब्रह्मा बाप की याद इमर्ज है क्योंकि ब्रह्मा बाप का इस ड्रामा में विशेष पार्ट है। सभी का ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है क्योंकि ब्रह्मा बाप का भी एक-एक बच्चे से अति प्यार है। जैसे आप बच्चे यहाँ साकार में ब्रह्मा बाप के गुण और कर्तव्य याद करते हो वैसे ब्रह्मा बाप भी आप बच्चों की विशेषताओं का, सेवा का गुणगान करते हैं। तो ब्रह्मा का अव्यक्त आवाज आप सबको पहुंचता है? आप सब विशेष अमृतवेले से लेकर जो मीठी-मीठी बातें करते हो वा मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हो, वह ब्रह्मा बाप सुनकर मुस्कराते रहते हैं और क्या गुण गाते हैं? वाह मेरे सिकीलधे, लाडले बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चे वाह! ब्रह्मा बाप अब बच्चों से क्या शुभ आशायें रखते हैं, वह जानते हो?

बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। जो भी देखे, जो भी संबंध में आये – वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे तब ही समय की समाप्ति होगी। सबके दिल से यह आवाज निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी सांइस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा – मेरा बाप आ गया। अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकट्ठा नगाड़ा बजना है। जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज सुनेंगे। आने वाले आ गये – इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। अभी नाम प्रसिद्ध हुआ है। पहला

कदम नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां - ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं। विद्यालय वा कार्य की, नॉलेज की अभी महिमा करते हैं, खुश होते हैं। यह भी समझते हैं कि ऐसा कार्य और कोई कर नहीं सकता, इतने तक पहुँचे हैं। यह बात स्पष्ट हुई है, चारों ओर इस बात की महिमा है। लेकिन इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं। अभी थोड़ा-थोड़ा पर्दा खुलने लगा है लेकिन स्पष्ट नहीं है। जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से वर्सा लेना है, यह दीवार अभी उमंग-उत्साह में आगे आ रही है, वो अभी होना है। एक कदम उठाते हैं, वो एक कदम है – सहयोग का। एक कदम उठने लगा है, सहयोग देने की प्रेरणा अन्दर आने लगी है, अभी दूसरा कदम है – स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आये। जब दोनों ही कदम मिल जायेंगे तो चारों ओर बाजे बजेंगे। कौन से बाजे? – मेरा बाबा। तेरा बाबा नहीं, मेरा बाबा। जैसे कार्य की महिमा करते हैं, ऐसे करन-करावनहार बाप की महिमा झूम-झूम कर गायें। होने वाला ही है। आपको भी यह नज़ारा आंखों के समाने दिल में, दिमाग में आ रहा है ना! क्योंकि बाप और दादा आये हैं – सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का, चाहे जीवनमुक्ति का, लेकिन वर्सा मिलना जरूर है। कोई भी वंचित नहीं रहेगा क्योंकि बाप बेहद का मालिक है, बेहद का बाप है। तो बेहद को वर्सा लेना ही है। भल योगबल से अपने जन्म-जन्म के पाप नहीं भी काट सकें लेकिन सिर्फ इतना भी जान लिया कि बाप आये हैं, तो कुछ न कुछ पहचान से वर्से के अधिकारी बन ही जायेंगे। तो जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें? तो ये शुभ भावना और शुभ कामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये? मौज में रहो, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरूषार्थ करना पड़ता है,

वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालू, मर्सी-फुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बाप-दादा को बच्चों की कौन सी बात अच्छी नहीं लगती है, जानते हो? बापदादा को बच्चों का मेहनत करना वा बार-बार युद्ध करना, यह अच्छा नहीं लगता है। बाप कहते भी हैं – हे मेरे योगी बच्चे, योद्धे बच्चे नहीं कहते हैं, योगी बच्चे। तो योगी बच्चों का क्या काम है? युद्ध करना। युद्ध करना अच्छा लगता है? परेशान भी होते हो और फिर युद्ध भी करते हो। आज प्रतिज्ञा करते हो कि युद्ध नहीं करेंगे और कुछ समय के बाद फिर योगी के बजाए योद्धे बन जाते हो। यह क्यों? बापदादा समझते हैं कि बच्चों को योग से प्यार कम है, युद्ध से प्यार ज्यादा है। तो आज से क्या करेंगे? योद्धे बनेंगे वा निरन्तर योगी बनेंगे?

बापदादा ने देखा – कितनी 18 जनवरी भी बीत गई! और विशेष ब्रह्मा बाप आप बच्चों का आह्वान कर रहा है कि मेरे बच्चे समान बन वतन में आ जाओ। वतन अच्छा नहीं लगता? क्या युद्ध करना ही अच्छा लगता है? युद्ध नहीं करो। आज से युद्ध करना बन्द करो। कर सकते हो? बोलो हाँ जी। फिर वहाँ जाकर पत्र नहीं लिखना कि माया आ गई, युद्ध करके भगा दिया। किसी को अपनी माया आती है और कोई-कोई दूसरों की माया को देख खुद माया के असर में आ जाते हैं। यह क्यों, यह क्या..... यह दूसरों की माया अपने अन्दर ले आते हैं। यह भी नहीं करना। माया से छुड़ाना बाप का काम है, आप स्व पुरूषार्थ में तीव्र बनो, तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी न दूसरे की जायेगी। इसलिए जैसे नये वर्ष में पुराने वर्ष को विदाई दी। अभी 96 नहीं कहेंगे, 97 के कहेंगे ना! अगर कोई गलती से कह दे तो आप कहेंगे 96 नहीं है, 97 है। ऐसे आज क्यों-क्या, ऐसे-वैसे, इन शब्दों को विदाई दे दो। क्वेश्चन मार्क नहीं करो। बिन्दी लगाओ, नहीं तो क्वेश्चन मार्क हुआ और व्यर्थ का खाता आरम्भ हुआ। और जब व्यर्थ का खाता आरम्भ हो जाता है तो समर्थी समाप्त हो जाती है। और जहाँ समर्थी समाप्त हुई, वहाँ माया भिन्न-भिन्न रूप से, भिन्न-भिन्न सरकमस्टांश से अपना ग्राहक बना देती है। फिर

क्या बन जाते? योगी या योद्धे? योद्धे नहीं बनना। पक्का प्रामिस किया? या बापदादा कहता है तो हाँ किया? पक्का किया? बाहर जब अपने देश में जायेंगे तो थोड़ा कच्चा होगा? शक्तियां क्या कहती हैं? होगा या नहीं? सब हाँ नहीं करते, माना थोड़ा अपने में शक्य है। (सबने हाँ जी कहा) देखना टी.वी. में फोटो निकल रहा है! फिर बापदादा टी.वी. की कैसेट भेजेंगे क्योंकि बाप का हर बच्चे के साथ – चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन जिसने दिल से कहा मेरा बाबा, सिर्फ कहा नहीं लेकिन माना और मानकर चल रहे हैं, उस एक-एक के साथ बाप का दिल का प्यार है, कहने वाला प्यार नहीं।

बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं – आज कहेंगे बाबा, ओ मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं ..... आप ही मेरा संसार हो, बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती, भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं – कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।

तो आज विशेष ब्रह्मा बाप हर बच्चे की रिजल्ट को देख रहे थे क्योंकि आज के दिन को आप सभी स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं। तो ब्रह्मा बाप देख रहे थे कि कितने समर्थी दिवस मना चुके हैं, लेकिन समर्थी सदाकाल की कहाँ तक आई है? तो क्या देखा होगा? अभी की रिजल्ट अनुसार बाप की नालेज से नालेजफुल और माया के भी नालेजफुल, ऐसे नालेजफुल कितने निकले होंगे! माया की नालेज से भी नालेजफुल बनना पड़े, जो माया को दूर से ही पहचान लें, कैच कर लें कि आज कुछ पेपर होने वाला है और पहले से ही समर्थ हो जाएं। समाचार में क्या लिखते हैं? माया आई, मैंने भगाया फिर भाग गई। लेकिन आई क्यों? माया को आने की छुट्टी दे दी है क्या कि भले कभी-कभी आया करो? यदि बिना छुट्टी कोई आता है, तो उसको आने दिया

जाता है क्या? माया पर रहम तो नहीं करते हो कि बिचारी आधाकल्प की साथी है! माया पर रहम नहीं करना। इतनी सारी आत्माओं पर तो रहम कर लो। तो रिजल्ट में फर्स्ट और सेकण्ड नम्बर में 50-50 देखा। सिर्फ फर्स्ट नहीं, फर्स्ट और सेकण्ड दोनों मिलाकर 50, लेकिन बापदादा को एक बात की बहुत खुशी है कि बच्चों को बाप के स्नेह से विजयी बन ही जाना है। अभी सभी के मस्तक पर विजय का तिलक ऐसा स्पष्ट दिखाई दे जो दूसरे भी अनुभव करें कि सचमुच यही विजयी रत्न हैं।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि इस फाइनल पढ़ाई में हर एक बच्चे को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं – एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट - यह सर्टीफिकेट और दूसरा बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट जब मिलें तब समझो पढ़ाई पूरी हुई। ऐसे नहीं समझना कि बापदादा तो हमारे से सन्तुष्ट हैं। लेकिन तीनों ही सर्टीफिकेट चाहिए, एक नहीं चलेगा। तो चेक करो तीन सर्टीफिकेट से कितने सर्टीफिकेट मिले हैं? बाप के बिना भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन परिवार की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट इससे भी बहुत कुछ मिलता है। परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टीफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधाकल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं, पूज्य की प्रारब्ध भी अभी बनती है। ऐसे नहीं समझो–हमारा तो बाप से ही काम चल जायेगा। नहीं। बाप का परिवार से कितना प्यार है। तो फालो फादर करो। ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। और प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है – अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। कोई भी है, कैसी भी है, घृणा भाव नहीं आवे, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे। नहीं। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने

के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। किससे? सिर्फ शिक्षा से नहीं, आजकल शिक्षा, सिवाए प्यार या शुभ भावना के कोई नहीं सुन सकता। यह तो फाइनल रिजल्ट है, शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो ब्रह्मा बाप को आज बहुत याद किया ना! तो फालो फादर। बाप समान बनने की हिम्मत है? मुबारक हो हिम्मत की। बापदादा आपके दिल की तालियां पहले ही सुन लेता है आप खुशी से तालियां बजाते हो लेकिन बाप को दिल की तालियां पहले पहुंचती हैं।

बापदादा भी हंसी की बात सुनाते हैं। ब्रह्मा बाबा की रूहरिहान चली! तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि मेरे को एक बात के लिए डेट कान्सेस-नेस है। बच्चों को तो कहते हैं डेडकानसेस नहीं बनो लेकिन ब्रह्मा बाप एक बात में डेट कान्सेस हैं, कौन सी डेट? कि कब मेरा एक-एक बच्चा जीवन मुक्त बन जाए! ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। उसके पहले जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आप जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो यह सेवा नहीं करनी है क्या? करनी है ना! तो आप ब्रह्मा बाप को डेटकान्सेस का जवाब दो। वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त हों? कोई बंधन नहीं। बंधनों की लम्बी लिस्ट वर्णन करते हो, क्लासेज कराते हो तो बंधनों की बड़ी लम्बी लिस्ट निकालते हो लेकिन बाप कहते हैं सब बन्धनों में पहला एक बंधन है–देह भान का बंधन। उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वत: ही खत्म हो जायेंगे। अपने को वर्तमान समय मैं टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ, मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ – इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्मा हूँ–यह पाठ अभी और पक्का करो। आप आत्मा का भान धारण करो तो यह आत्मिक भान, माया के भान को सदा के लिए समाप्त कर देगा। लेकिन आत्मा का भान – यह

अभी चलते फिरते स्मृति में रहे, वह अभी और होना चाहिए। ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया! दीवारों पर भी मैं आत्मा हूँ, परिवार वाले आत्मा हैं, एक-एक के नाम से दीवारों में भी यह पाठ पक्का किया। डायरियां भर दी–मैं आत्मा हूँ, यह भी आत्मा है, यह भी आत्मा है। आपने आत्मा का पाठ इतना पक्का किया है? मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ कुछ पक्का लगता है लेकिन आत्मा सेवाधारी हूँ, तो जीवनमुक्त बन जायेंगे। रोज़ शरीर में ऊपर से अवतरित हो, मैं अवतार हूँ, इस शरीर में अवतरित आत्मा हूँ, फिर युद्ध नहीं करनी पड़ेगी। आत्मा बिन्दू है ना? तो सब बातों को बिन्दू लग जायेगा। कौन सी आत्मा हूँ? रोज एक नया-नया टाइटल स्मृति में रखो। आपके पास बहुत से टाइटल की लिस्ट तो है ना। रोज़ नया टाइटल स्मृति में रखो कि मैं ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हूँ। सहज है या मुश्किल है? आत्मा बिन्दू रूप में रहेगी, तो ड्रामा बिन्दू भी काम में आयेगा और समस्याओं को भी सेकण्ड में बिन्दू लगा सकेंगे और बिन्दू बन परमधाम में बिन्दू जायेगी। जाना है या सीधा स्वर्ग में जायेंगे? कहाँ जायेंगे? पहले घर जायेगे या राज्य में जायेंगे? बाप के साथ घर तक तो चलना है ना कि सीधा राज्य में चले जायेंगे, बाप को पूछेंगे नहीं! तो बिन्दू बाप के साथ बिन्दू बन पहले घर जाना है। वैसे राज्य का पासपोर्ट नहीं मिलेगा। परमधाम से राजधानी में जाने का पासपोर्ट आटोमेटिक मिल जायेगा, किसको देने की आवश्यकता नहीं। जितना नजदीक होंगे, उतना नम्बरवार परमधाम से राज्य में आयेंगे, परमधाम से पहली आत्मा कौन सी जायेगी? किसके साथ जायेंगे? ब्रह्मा बाप के साथ जायेंगे! सभी राज्य में भी साथ में जायेंगे या दूसरे तीसरे जन्म में आयेंगे? जाना है ना? प्यार है ना? ब्रह्मा बाप को छोड़ेंगे तो नहीं, साथ जायेंगे? तो बापदादा को डेट बतायेंगे या नहीं? (बापदादा बतायें) बापदादा तो कहते हैं अभी बनो। तो बाप भी डेट कानसेस से बदल जायेगा। देखो, ब्रह्मा बाप ने कल को देखा? तुरत दान महादान किया। तीव्र पुरूषार्थ, पहला पुरूषार्थ किया। कल को नहीं देखा। कल क्या होगा! परिवार कैसे चलेगा! सोचा? जो आज हो रहा है वह अच्छा और जो कल होगा वह भी अच्छा। तभी तो तुरत दान महापुण्य और पहला नम्बर का महान बना। अभी बच्चों को तुरत दानी बनना चाहिए। संकल्प किया और तुरत दान महाबलि बनें। जब हाथ उठवाते हैं कि पहले डिवीजन में कौन आयेगा? तो सभी हाथ

उठाते हैं। अभी भी उठवायेगे तो सब उठायेगे। बापदादा जानते हैं कि कोई भी हाथ नीचे नहीं करेंगे। जब पहले डिवीजन में आना है तो पहले नम्बर को फालो तो करो। फालो करना सहज है – बस ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। कापी करो। कापी करना आता है कि नहीं आता है! फालो करना आता है? तो फालो करो और क्या करना है!

विशाल सभा को देख खुशी हो रही है ना! (सभी ने जोर से तालियां बजाई) सभी को एक हाथ की ताली सिखाओ (सभी ने एक हाथ हिलाया) यह अच्छी है। अच्छा।

इस बारी सभी ज़ोन के आये हैं ना! मैजॉरिटी सभी तरफ से आये हैं।

महाराष्ट्र और बाम्बे :- हाथ उठाओ। महाराष्ट्र सेवा के निमित्त हैं ना। अच्छी सेवा का सबूत दे रहे हैं। सभी खुशी से सेवा कर रहे हैं। नींद आती है कि रात भी सेवा में गुज़र जाती है? रात दिन सेवा यह महा पुण्य बन रहा है। रात भी हो तो सेवाधारी सेवा के लिए हाजिर हैं। ऐसे है ना महाराष्ट्र? अच्छी रिजल्ट है। पहले गुजरात ने किया, अभी महाराष्ट्र कर रहा है। हर सेवाधारी ग्रुप की अपनी-अपनी विशेषता है। गुजरात को भी टर्न मिला ना। अच्छा है। देखो सेवा के कारण आपको डबल चांस मिला है। अपने टर्न में भी आ सकते हो और सेवाधारी बनकर भी आये तो सेवाधारियों को डबल चांस है। अच्छा।

दिल्ली– दिल्ली वाले डायमण्ड जुबली की समाप्ति का समारोह मना रहे हैं, अच्छा है। देहली से आवाज चारों ओर सहज फैलता है। इसलिए अच्छी हिम्मत से कार्य कर रहे हैं और डायमण्ड जुबली की सम्पन्न समाप्ति धूमधाम से होनी ही है। अच्छा।

गुजरात – गुजरात तो पड़ोसी है ताली बजाओ तो हाजिर हो जाए।

(कनार्टक, आन्ध्रा, पंजाब, इस्टर्न, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, इन्दौर, यू.पी., बनारस, भोपाल, तामिलनाडु, राजस्थान, आगरा, मधुबन, डबल विदेशी आदि सभी ज़ोन से बापदादा हाथ उठवाकर मिल रहे हैं)

डबल विदेशी तो मधुबन की सभा का श्रृंगार हैं। डबल विदेशी यादप्यार देने और लेने में बहुत होशियार हैं। भारत, भारत है लेकिन विदेश भी कम नहीं है। हर समय अपनी भिन्न-भिन्न रूप में याद भेजते रहते हैं। अभी भी नये वर्ष की याद बहुत ही बच्चों ने भेजी है और विशेष इस दिन बहुत बच्चे विधिपूर्वक

याद करते हैं। दिल से भी याद भेजते तो कार्ड और पत्रों द्वारा भी भेजते हैं। बापदादा के पास विशेष डबल विदेशियों के यादप्यार के पत्र और कार्ड भी मिले हैं। बापदादा सभी को पदमगुणा यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। अभी भी कई स्थानों से फरिश्ते रूप में मधुबन सभा में पहुंचें हुए हैं। बापदादा सामने देख रहे हैं और रिजल्ट में याद और सेवा के उंमग-उत्साह की विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी डबल विदेशी मैजारटी याद और सेवा में अनुभवी हो गये हैं और आगे भी होते रहेंगे। अभी पहला नटखट का बचपन मैजारिटी का समाप्त हुआ है और आगे भी हो रहा है। इसलिए डबल विदेशियों को तीव्र पुरूषार्थ की बापदादा मुबारक के साथ यह स्लोगन भी सुना रहे हैं –कि माया की नज़र से सदा बचे रहने वाले अपने नज़रों में सदा बाप को समाने वाले, जब बाप नज़रों में है तो माया की नज़र लग नहीं सकती है। इसलिए सदा बच्चे बचे रहें, रहना ही है। अच्छा।

अभी-अभी सभी जो भी बैठे हैं एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाओ। शरीर भान में नहीं आओ। आत्मा, परम आत्मा से मिलन मना रही है। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

ऐसा अभ्यास बार-बार कर्म करते, करते रहो। स्विच आन किया और सेकण्ड में अशरीरी बनें। यह अभ्यास कर्मातीत स्थिति का अनुभव करायेगा।

चारों ओर के सदा समर्थ आत्माओं को, सदा बापदादा को फालो करने वाले सहज पुरूषार्थी बच्चों को, सदा एक बाप, एकाग्र बुद्धि, एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले, बिन्दू बन बिन्दू बाप के साथ चलने वाले ऐसे सर्व बाप के स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से - निर्विघ्न मेले की समाप्ति हुई ना!

(सायं 7.30 बजे, ग्लोबल हस्पताल में लण्डन की शैली बहन ने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली, यह समाचार बापदादा को सुनाया गया) कोई न कोई का यादगार रहता है। जिसका जो पार्ट है वह कहाँ भी कैसे भी हो, उसको निभाना ही है। डबल फारेनर्स भी तो एडवांस पार्टी में चाहिए ना। एडवांस पार्टी के गुलदस्ते में भिन्न-भिन्न फूल जमा हो रहे हैं। (पूरी सरेन्डर थी, दो मास से यहाँ थी, लास्ट के तीन-चार दिन साइलेन्स में थी, अचानक तबियत

खराब हुई और 2-3 दिन हास्पिटल में ट्रीटमेंट चली) ऐसे अच्छे-अच्छे ही चाहिए ना, जो वायब्रेशन से कार्य कर सकें। तो यह जाना नहीं कहेंगे, सेवा में आना कहेंगे। यह भी कई आत्माओं को बेहद का वैराग्य दिलाने के लिए निमित्त बनी है। इतने बड़े विशाल मेले से जाना यह भी बेहद मेले में बेहद का पार्ट बजाना है। तो आप कहेंगे क्या चली गई? नहीं, चली नहीं गई लेकिन भिन्न-भिन्न ड्रेस से भिन्न पार्ट बजाने आई। (लण्डन में खास सभी ने उसके प्रति योग किया) इन सभी को भी सुनाओ, सभी उसे याद का सहयोग देवें, वायब्रेशन देवें। (निर्वैर भाई ने उसी समय सभी को समाचार सुनाया तथा एक मिनट के लिए सभी ने उस आत्मा को योगदान दिया)

विदाई के समय – सभी को यह शान्तिवन का विशाल हाल पसन्द है? (हाँ जी) तो किसने बनाया? आप सभी के सहयोग के अंगुली से यह विशाल हाल तैयार हुआ है। बाप तो है लेकिन बच्चों के सहयोग की अंगुली भी जरूरी है। तो पसन्द है ना? अच्छा इससे बड़ा बनायें? अच्छा है, सभी बच्चों के सहयोग से बना है और आगे भी जो कार्य रहा हुआ है, वह होना ही है। तो आप सभी को यह मेला, पट में सोना, खाना पसन्द है? तकलीफ नहीं है! तकलीफ हुई? देखो भक्ति के मेले तो बहुत किये हैं, उसमें तो खाने के साथ मिट्टी भी खाते हैं, मिट्टी में सोते हैं, मिट्टी में खाते हैं। आपको तो ब्रह्माभोजन अच्छा मिला ना। ब्रह्माभोजन ठीक मिला? कोई को ब्रह्मा भोजन में तकलीफ हुई? तबियत खराब तो नहीं हुई! अच्छा बीमार भी ठीक हो गये? तो यह शान्तिवन का मेला विशेष ब्राह्मणों के लिए हुआ और होता रहेगा लेकिन इस शान्तिवन को सेवा में भी लगाओ। ब्राह्मण माना सेवाधारी। तो जो आपके सम्बन्ध, सम्पर्क में हैं और चाहते हैं कि हमें भी कोई चांस मिले, लेकिन स्थान के कारण आप उन्हों की सेवा नहीं कर सके हैं, अभी बड़ी दिल से इतने ही हजारों में सेवा कर सकते हो क्योंकि ऊपर आपको हद मिलती है, यहाँ एक ही हाल में दो तीन ग्रुप बनाकर योगशिविर करा सकते हो, कोर्स करा सकते हो और साथ में वारिस बना सकते हो। यहाँ की पालना से वारिस बनना बहुत सहज होगा क्योंकि यहाँ का वायुमण्डल और अनुभवी दादियों की दृष्टि, पालना सहज परिवर्तन कर सकती है। एक प्रोग्राम ब्राह्मणों के रिफ्रेशमेंट का और एक प्रोग्राम सेवा का भिन्न-भिन्न रूप से एक ही समय पर ग्रुप-ग्रुप बनाकर एक ही हाल में और जो

रहने के अच्छे बड़े हाल हैं, उसमें भी रख सकते हो। तो आप जैसे खुद आये हैं ना, वैसे फिर अपने सम्पर्क वालों का प्रोग्राम बनाते रहना। ऐसे नहीं है कि यह बड़ा हाल कैसे काम में आयेगा, यह बड़े से छोटा भी हो सकता है, छोटे से बड़ा भी हो सकता है। तो इतनी संख्या तैयार करेंगे? इस हाल द्वारा 9 लाख तैयार करो। कर सकते हो? (इच वन टीच वन करें) यह अच्छी आइडिया है, जितने आप बैठे हो एक, एक को लायेगा तो कितने हो जायेंगे? अभी समय के प्रमाण सेवा भी बेहद बड़ी करो, छोटे-छोटे ग्रुप तो ऊपर भी होते हैं लेकिन यहाँ ज्यादा संख्या में प्रजा बना सकते हो, रॉयल प्रजा बना सकते हो, वारिस बना सकते हो। पसन्द है? तो दूसरी बारी क्या करेंगे? जितने बैठे हो ना–उतने लाना। ज्यादा भले लाना, कम नहीं लाना।

आप लोगों को रिफ्रेशमेंट चाहिए! आपकी भट्ठियां रखें? लेकिन यहाँ भट्ठी करो और वहाँ बैठ जाओ, ऐसे नहीं करना। भट्ठी माना सदा का परिवर्तन। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो सब खुश हो जाएं। मिनिस्टर जो हैं, प्राइममिनिस्टर, प्रेजीडेंट सब आपके अनुभव से प्रभावित हों। कम से कम गवनर्मेन्ट भी यह तो कहे कि अगर भारत का कल्याण होना है तो यहाँ से ही होना है। तो अभी फास्ट सेवा करो। समझा। अभी बाकी जो भी रहा हुआ है उसको ठीक कराते रहो, करने वाले सभी मिलकर पहाड़ उठाने चाहें तो यह क्या है! बापदादा को भी विशाल मेला अच्छा लगता है। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की। अच्छा।

ओम् शान्ति।

23-2-97

साथी को साथ रख साक्षी और खुशनुमः के तख्तनशीन बनो

आज विश्व कल्याणकारी बाप विश्व के चारों तरफ के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी बच्चों के स्नेह और सहयोग की रेखायें बच्चों के चेहरे से दिखाई दे रही हैं। हर एक के दिल से ''मेरा बाबा'', यह गीत बापदादा सुन रहे हैं। बापदादा भी रेसपान्ड में कहते हैं ''ओ मेरे अति प्रिय, अति स्नेही लाडले बच्चे''। हर एक बच्चा प्रिय भी है, लाडले भी हैं, क्यों? कोटों में कोई और कोई में भी कोई हो। तो लाडले हुए ना! तो बापदादा भी लाडले बच्चों को देख खुश होते हैं। बच्चों को भी सदा खुशी में डांस करते हुए देखते हैं और सदा देखने चाहते हैं। खुशी में रहते तो हैं लेकिन बाप सदा चाहते हैं। सदा खुश रहते हो या खुशी में फर्क पड़ता है? कभी बहुत खुशी, कभी थोड़ी कम और कभी बहुत कम!

बाप ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय आप बच्चों की विश्व को इस सेवा की आवश्यकता है जो चेहरे से, नयनों से, दो शब्द से हर आत्मा के दुःख को दूर कर खुशी दे दो। आपको देखते ही खुश हो जाएं। इसलिए खुशनुमा चेहरा या खुशनुमा मूर्त सदा रहे क्योंकि मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई देती है। कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दुःख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। आज मन की खुशी के लिए कितना खर्चा करते हैं, कितने मनोरंजन के नये-नये साधन बनाते हैं। वह हैं अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना उन आत्माओं को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय ले आवें और वाह-वाह लेकर जाये। वाह कमाल है – परमात्म आत्माओं की! तो यह सेवा करो। समय प्रति समय जितना अल्पकाल के साधनों से परेशान होते जायेंगे, ऐसे समय पर आपकी खुशी उन्हों को सहारा बन जायेगी क्योंकि आप हैं ही खुशनसीब। खुशनसीब हैं या नहीं? अधूरे तो नहीं? हैं ही खुशनसीब। आप जैसा खुशनसीब सारे कल्प में कोई आत्मायें नहीं। इतना नशा चेहरे और चलन से अनुभव कराओ। करा सकते हो या कराते भी हो?

ब्राह्मण जीवन में अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण बनकर क्या किया! ब्राह्मण जीवन अर्थात् खुशी की जीवन। कभी-कभी बापदादा देखते हैं, कोई-कोई के चेहरे जो होते हैं ना वह थोड़ा सा.... क्या होता है? अच्छी तरह से जानते हैं, तभी हंसते हैं। तो बापदादा को ऐसा चेहरा देख रहम भी आता और थोड़ा सा आश्चर्य भी लगता। मेरे बच्चे और उदास! हो सकता है क्या? नहीं ना! उदास अर्थात् माया के दास। लेकिन आप तो मास्टर मायापति हो। माया आपके आगे क्या है? चींटी भी नहीं है, मरी हुई चींटी। दूर से लगता है जिंदा है लेकिन होती मरी हुई है। सिर्फ दूर से परखने की शक्ति चाहिए। जैसे बाप की नालेज विस्तार से जानते हो ना, ऐसे माया के भी बहुरूपी रूप की पहचान, नालेज अच्छी तरह से धारण कर लो। वह सिर्फ डराती है, जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना तो उनको माँ बाप निर्भय बनाने के लिए डराते हैं। कुछ करेंगे नहीं, जानबूझकर डराने के लिए करते हैं। ऐसे माया भी अपना बनाने के लिए बहुरूप धारण करती है। जब बहुरूप धारण करती है तो आप भी बहुरूपी बन उसको परख लो। परख नहीं सकते हैं ना, तो क्या खेल करते हो? युद्ध करने शुरू कर देते हो हाय, माया आ गई! और युद्ध करने से बुद्धि, मन थक जाता है। फिर थकावट से क्या कहते हो? माया बड़ी प्रबल है, माया बड़ी तेज है। कुछ भी नहीं है। आपकी कमजोरी भिन्न-भिन्न माया के रूप बन जाती है। तो बापदादा सदा हर एक बच्चे को खुशनसीब के नशे में, खुशनुमा चेहरे में और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त और सदा खुशी के खजानों से सम्पन्न देखने चाहते हैं। जीवन में चाहिए क्या? खुराक और खजाना। और क्या चाहिए? तो आपके पास खुशी की खुराक है या स्टॉक कभी खत्म हो जाता है? खुशी का खजाना अखुट है। अखुट है ना? और जितना खर्चो उतना बढ़े। अगर और कोई भी पुरूषार्थ नहीं करो सिर्फ एक लक्ष्य रखो - कुछ भी हो जाए, चाहे अपने मन के स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाए, मुझे खुशी नहीं छोड़नी है। यह तो सहज पुरूषार्थ है ना या खुशी खिसक जाती है? सहज है या कभी-कभी मुश्किल है? दृढ़ संकल्प रखो और बातों को भूल जाओ। एक ही बात पक्की रखो - मुझे खुश रहना है। तो बातें क्या लगेंगी? खेल। और अपनी खेल देखने की साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो। चाहे कोई अपमान करने वाला हो, आपको परेशान कर अपने साक्षीपन की शान से

नीचे उतारने वाले हों, लेकिन आप साक्षीपन की सीट से नीचे नहीं आओ। नीचे आ जाते हो तभी खुशी कम हो जाती है।

बापदादा ने पहले भी दो शब्द सुनाये हैं - साथी और साक्षी। जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मजबूत रहती है। कहते सभी हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है लेकिन माया का प्रभाव भी पड़ता रहता और कहते भी रहते हो बापदादा साथ है, बापदादा साथ है। साथ है, लेकिन साथ को ऐसे समय पर यूज़ नहीं करते हो, किनारे कर देते हो। जैसे कोई साथ में होता है ना, कोई बहुत ऐसा काम पड़ जाता है या कोई ऐसी बात होती है तो साथ कभी ख्याल नहीं होता, बातों में पड़ जाते हैं। ऐसे साथ है यह मानते भी हो, अनुभव भी करते हो। कोई है जो कहेगा साथ नहीं है? कोई नहीं कहता। सब कहते हैं मेरे साथ है, यह भी नहीं कहते कि तेरे साथ है। हर एक कहता है मेरे साथ है। मेरा साथी है। मन से कहते हो या मुख से? मन से कहते हो?

बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन हैं। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है। आप लोग प्रजा हैं क्या! प्रजा तो नहीं बनना है ना? राज़े, महाराजे, विश्व राजे हो ना! प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो। राजा बनने वाले, प्रजा बनाने वाले हो। तो राजा कहाँ बैठता है? तख्त पर बैठता है ना! जब प्रैक्टिकल में राजा के नशे में होता है तो तख्त पर बैठता है ना! तो साक्षीपन का तख्त छोड़ो नहीं। जो अलग-अलग पुरूषार्थ करते हो उसमें थक जाते हो। आज मन्सा का किया, कल वाचा का किया, सम्बन्ध-सम्पर्क का किया तो थक जाते हो। एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमः तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। कोई राजा ऐसे सीरियस होकर तख्त पर बैठे, बैठा तख्त पर हो लेकिन बहुत क्रोधी हो, आफीशियल हो तो अच्छा लगेगा? कहेंगे यह तो राजा नहीं है। तो आप सदा तख्तनशीन है ना! वह राज़े तो कभी तख्त पर बैठते, कभी नहीं बैठते लेकिन साक्षीपन का तख्त ऐसा है जिसमें हर कार्य करते भी तख्तनशीन, उतरना

नहीं पड़ता है। सोते भी तख्तनशीन, उठते-चलते, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते तख्तनशीन। तख्त पर बैठना आता है कि बैठना नहीं आता है, खिसक जाते हो? साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप ऊपर तख्तनशीन होंगे। समस्या आपके लिए सिर नहीं उठा सकेगी, नीचे दबी रहेगी। आपको परेशान नहीं करेगी और कोई को भी दबा दो तो अन्दर ही अन्दर खत्म हो जायेगा ना। तो बापदादा को ऐसे समय पर आश्चर्य लगता है, आप नहीं आश्चर्य करना। अपने पर भले करना, दूसरे पर नहीं करना। तो आश्चर्य लगता है कि यह मेरे बच्चे क्या कर रहे हैं! तख्त से उतर रहे हैं। जब तख्तनशीन रहने के संस्कार अब से ही डालेंगे तब विश्व के तख्त पर भी बैठेंगे। यहाँ सदाकाल तख्तनशीन नहीं होंगे तो वहाँ भी सदा अर्थात् जितना समय फुल है, उतना समय नहीं बैठ सकेंगे। संस्कार सब अभी भरने हैं। फिर वही भरे हुए संस्कार सतयुग में कार्य करेंगे। रॉयल्टी के संस्कार अभी से भरने हैं। ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पड़ा है, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हाँ तैयार हो! सब अचानक होना है। आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें? अचानक ही सन्देश मिला, प्रदर्शनी देखी, सम्पर्क-सम्बन्ध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो दो हजार सोचा था – वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोड़ा रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है ...., ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! इसलिए पहले ही सुना देते हैं - अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चार ही सबजेक्ट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोड़ी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भण्डार हैं, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति

चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपाल मदद नहीं करता।

डबल विदेशी बच्चों को देख बाप को भी डबल खुशी होती है। क्यों होती है? क्योंकि डबल विदेशियों को स्वयं को परिवर्तन करने में डबल मेहनत करनी पड़ी। इसीलिए जब बापदादा डबल विदेशी बच्चों को देखते हैं तो डबल खुशी होती है, वाह मेरे डबल विदेशी बच्चे वाह! डबल विदेशी हाथ उठाओ। (विश्व के अनेक देशों के करीब 1 हजार भाई बहिनें सभा में उपस्थित हैं) वाह बहुत अच्छा। डबल ताली बजाओ। बापदादा विदेश की सेवा के समाचार सुनते रहते हैं, देखते भी रहते हैं, रिजल्ट में सेवा का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। सिर्फ कभी-कभी अपने ऊपर सेवा का थोड़ा सा बोझ उठा लेते हो। बोझ नहीं उठाओ। बोझ बाप को दे दो। बाप के लिए वह बोझ कुछ भी नहीं है लेकिन आप सेवा का बोझ उठा लेते हो तो थक जाते हो। सेवा बहुत अच्छी करते हो, सेवा के समय नहीं थकते हो। उस समय बहुत अच्छे चेहरों का फोटो निकालने वाला होता है लेकिन कोई-कोई (सभी नहीं) सेवा के बाद थोड़ा सा थकावट के चेहरे में दिखाई देते हैं। बाप कहते हैं बोझ उठाते क्यों हो? क्या बोझ उठाना अच्छा लगता है या आदत पड़ी हुई है? बोझ नहीं उठाओ। बोझ तब लगता है जब बाप साथ नहीं है। मैंने किया, मैं करती हूँ, मैं करता हूँ तो बोझ हो जाता है। बाप साथ है, बाप का कार्य है, बाप करा रहा है तो बोझ नहीं होगा। हल्के हो नाचते रहेंगे। जैसे डांस बहुत अच्छी करते हो ना। डबल विदेशियों की डांस देखो तो बहुत अच्छी होती है। अपने को थकाते नहीं हैं, फरिश्ते माफिक करते हो। इन्डियन जो करेंगे वह पांव थकायेंगे, हाथ भी थकायेंगे। लेकिन विदेशी डांस भी लाइट करते हो, तो ऐसे सेवा भी एक डांस समझो, खेल समझो। थको नहीं। बापदादा को वह फोटो अच्छा नहीं लगता है। सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है और यह भी रिजल्ट बाप के पास है कि अभी थोड़ी सी बात में हलचल में आने की परसेन्टेज बहुत कम है। मैजॉरिटी ठीक हैं, बाकी थोड़ी संख्या कभी-कभी थोड़ा सा हलचल में दिखाई देती है। लेकिन आदि की रिजल्ट और अब की रिजल्ट में बहुत अच्छा अन्तर है। ऐसा दिखाई देता है ना? अभी नाज़ुकपन छोड़ते जा रहे हैं। बापदादा को रिजल्ट देख करके खुशी है।

अभी छोटे-छोटे माइक भी तैयार कर रहे हैं। अभी छोटे माइक हैं, लेकिन छोटे से बड़े तक भी आ जायेंगे। बापदादा को याद है–आदि में यह विदेशी

टीचर्स कहती थी कि वी.आई.पीज को मिलना ही मुश्किल है, आना तो छोड़ो, मिलना ही मुश्किल है। और अभी सहज हो गया है क्योंकि आप भी वी.वी.वी.आई.पी. हो गये तो आपके आगे वी. आई. पी. क्या हैं! टोटल विदेश की रिजल्ट अच्छी है। सेन्टर्स भी अच्छे हैं, वृद्धि को प्राप्त करते जा रहे हैं। भारत में हैण्डस नहीं हैं, नहीं तो भारत में भी सेवाकेन्द्र तो बहुत खुल जायें। एक-एक ज़ोन वाला कहता है – हैण्डस नहीं हैं। तो अभी इस वर्ष हैण्डस निकालने की सेवा करो। हैण्डस मांगो नहीं, निकालो; और ही दान-पुण्य करो।

विदेश में यह बहुत अच्छा तरीका है – जहाँ भी सेन्टर खुलता है, वहाँ के ही लौकिक कार्य भी करते हैं सेन्टर भी चलाते हैं। कैसे चलेगा, कौन चलायेगा, यह प्राब्लम कम है। आप लोग यह नहीं सोचना कि हम लौकिक काम क्यों करें! यह तो आपकी सेवा का साधन है। लौकिक कार्य नहीं करते हो लेकिन अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए लौकिक कार्य करते हो। जहाँ भी जाते हो वहाँ सेन्टर खोलने का उमंग रहता है ना। तो लौकिक कार्य कब तक करेंगे–यह नहीं सोचो। लौकिक कार्य अलौकिक कार्य निमित्त करते हो तो आप सरेन्डर हो। लौकिकपन नहीं हो, अलौकिकपन है तो लौकिक कार्य में भी समर्पण हो। लौकिक कार्य को छोड़कर समर्पण समारोह मनाना है – यह बात नहीं है। ऐसा करने से वृद्धि कैसे होगी! इसीलिए लौकिक कार्य करते अलौकिक कार्य के निमित्त बनते हो, तो जो निमित्त लौकिक समझते हैं और रहते अलौकिकता में हैं, ऐसी आत्माओं को डबल क्या, पदम मुबारक है। समझा। इसीलिए यह नहीं कहना–दादी हमको छुड़ाओ, हमको छुड़ाओ। नहीं, और ही डबल प्रालब्ध बना रहे हो। हाँ आवश्यकता अगर समझेंगे तो आपेही छुड़ायेंगे, आपको क्या है! जिम्मेवार दादियां हैं, आप अपने लौकिकता में अलौकिकता लाओ। थको नहीं। लौकिक काम करके थक कर आते हैं तो कहते हैं क्या करें! नहीं खुशी-खुशी में दोनों निभाओ क्योंकि देखा गया है कि डबल विदेशी आत्माओं में दोनों तरफ कार्य करने की शक्ति है। तो अपनी शक्ति को कार्य में लगाओ। कब छोड़ेंगे, क्या होगा .... यह बाप और जो दादियां निमित्त हैं उनके ऊपर छोड़ दो, आप नहीं सोचो। कौन-कौन हैं जो लौकिक कार्य भी करते हैं और सेन्टर भी सम्भालते हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप निश्चिंत रहो। नम्बर आप लोगों को वैसे ही मिलेंगे, जो सारा दिन करते हैं उन्हों जितना

ही मिलेगा। सिर्फ ट्रस्टी होकर करना, मैं-पन में नहीं आना। मैं इतना काम करती हूँ, मैं-पन नहीं। करावनहार करा रहा है। मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ। पावर के आधार पर चल रही हूँ।

आज डबल विदेशियों का टर्न है ना। आप लोगों को भी डबल विदेशियों को देख खुशी होती है ना! तो सभी डबल विदेशी खुशनुम: हो? हाथ की ताली बजाओ। अभी मधुबन में तो माया नहीं आती है ना?

भारत की टीचर्स और डबल विदेशी दोनों का मेल देखो कितना अच्छा है। आप टीचर्स ने डबल विदेशियों की सीजन कम ही देखी होगी और डबल विदेशियों ने सभी टीचर्स का संगठन पहले बारी देखा होगा। दोनों के मेले में अच्छा लग रहा है ना। टीचर्स को अच्छा लगता है? डबल विदेशियों को अच्छा लगता है? अच्छा है। टीचर्स भी निमन्त्रण पर पहुंच गई हैं। ऐसा कभी सोचा था कि ऐसा निमन्त्रण आयेगा? यह भी देखो अचानक हुआ तो अच्छा लगा ना! अच्छा–सभी टीचर्स हाथ उठाओ जो निमन्त्रण पर आई हैं।

दिल्ली वालों ने भी अच्छा सन्देश दिया। बापदादा को विशेष यह खुशी है कि संगठित रूप में निर्विघ्न होकर कार्य किया, इसकी मुबारक हो। निमित्त तो कोई बनता ही है। बापदादा ने रिजल्ट देखी कि निमित्त बच्चों ने चाहे रात हो, चाहे दिन हो, चाहे खड़े हों, चाहे बैठे हों, लेकिन अथक बन लक्ष्य रखा, उस लक्ष्य की सफलता हुई। प्राइममिनिस्टर आना, प्रेजीडेंट आना या कोई का भी आना–यह लक्ष्य की सफलता है। जब लक्ष्य एक होता है कि हम सबको अंगुली देनी है और खुशी-खुशी से करना है, अथक बनना है–यह लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप में आया, इसीलिए यह दृढ़ता सफलता की चाबी बन गई। कहाँ भी कार्य करो लेकिन यह लक्ष्य पक्का करके संगठित रूप में करो। एक भी यह नहीं कहे कि हमने कार्य नहीं किया। कोई भी कार्य करे लेकिन सबका संगठित रूप में सहयोग होना चाहिए और सबको खुशी होनी चाहिए कि हम प्रोग्राम कर रहे हैं। ऐसे नहीं कि फलाने कर रहे हैं, हम तो देख रहे हैं, नहीं। हम देखने वाले नहीं हैं, करने वाले हैं। चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा। छोटे बड़े जो भी हैं, चाहे स्टेज पर कार्य करें, चाहे घर बैठे मन्सा सेवा करें, वाचा सेवा करें, लेकिन सबको सेवा में सहयोग की अंगुली देनी ही है।

दिल्ली को वरदान है और उसमें भी आदि रत्न जगदीश को वरदान

है–स्थापना के कार्य में। इस बारी बापदादा ने देखा एक भी दिल्ली का सेन्टर ऐसे नहीं रहा जिसका कोई न कोई सहयोग नहीं हो। 100 से ही ज्यादा होंगे, दूर वाले स्थान की बात छोड़ो, लेकिन जो दिल्ली में थे उनमें से हर एक ने अपने खुशी से सेवा ली और प्रैक्टिकल किया तो यही सफलता का साधन है। ऐसे था ना? जगदीश से पूछते हैं। तो कहाँ भी करो, पहले सबको मिलाओ। चाहे मीटिंग करो, चाहे फोन में बात करो, समय नहीं हो तो फोन में ही मीटिंग हो सकती है। इन्होंने भी मीटिंग की, एक ही दिल्ली है ना तो दिल्ली में मीटिंग होना सहज है। लेकिन एक बात यह समझ लो कि जहाँ संगठन की शक्ति है वहाँ विजय है। बाकी विघ्न तो आने ही हैं। नहीं तो विघ्न-विनाशक नाम क्यों रखा है! विघ्न विनाशक का अर्थ क्या है? विघ्न आवे और विनाश करो। यह तो होना ही है। विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विनाशक बनना। इसकी परवाह नहीं करो। यह खेल है। खेल में खेल और खेल देखने में तो मजा है ना।

दूसरी बात सभी यह ध्यान रखें कि जहाँ भी जो भी सहयोगी आत्मायें हैं, मानों लण्डन में कोई प्रोग्राम करते हैं और अमेरिका में कोई नजदीक वाला सहयोगी विशेष आत्मा है, तो ऐसे टाइम पर जो जहाँ सहयोगी हो सकते हैं, जैसा कार्य है उस अनुसार सहयोगी आत्माओं को निमित्त बनाओ। जिसको बापदादा कहते हैं छोटे माइक। उसका भी प्रभाव पड़ता है, और जो सम्पर्क में आते हैं उन्हों को समय प्रति समय सहयोगी बनाते रहो। सिर्फ कान्फ्रेन्स होवे तो आप जाओ, आओ और फिर अपनी सेवा में लग जाओ। नहीं। नई-नई सेवा करते रहते हो और जो पुरानी आत्मायें, सम्पर्क में आने वाली हैं उनके लिए फुर्सत कम निकालते हो। अब ऐसा सहयोगियों का ग्रुप तैयार करो। कहाँ भी हो, चाहे विदेश में हो तो इन्डिया में उसका लाभ ले सकते हो या विदेश का विदेश में, इन्डिया का इन्डिया में, लेकिन सहयोगियों से लाभ लो।

दिल्ली वाले हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। साथ भी एक दो को अच्छा दिया है। बृजमोहन कहाँ है। देखो निमित्त बनने वालों के हाँ जी, हाँ जी करने से, एक दो के सहयोग से सफलता समीप आई। इसलिए इस पाठ को सदा याद रखना। स्वभाव-संस्कारों को सेवा के समय देखो ही नहीं। देखते हैं ना–इसने यह किया, इसने यह कहा –तो सफलता दूर हो जाती है। देखो ही नहीं। बहुत

अच्छा, बहुत अच्छा। हाँ जी और बहुत अच्छा, यह दो शब्द हर कार्य में यूज़ करो। स्वभाव वैरायटी हैं और रहने भी हैं। स्वभाव को देखा तो सेवा खत्म। बाबा करा रहा है, बाबा को देखो, बाबा का काम है। इसकी ड्यूटी नहीं है, बाबा की है। तो बाप में तो स्वभाव नहीं है ना। तो स्वभाव देखने नहीं आयेगा। बाकी दिल्ली ने एक अच्छा नक्शा तैयार कर दिया। तो बापदादा भी दिल्ली वालों को मुबारक देते हैं।

फारेन का जो स्नेह मिलन (आबू फोरम वा रिट्रीट) का प्रोग्राम चला, वह भी हर वर्ष सफलता मिल रही है। फाउण्डेशन तैयार हो रहा है। बापदादा के घर में धरनी तैयार होती है। बाकी बीज को बढ़ाना, यह आप लोगों का अपने-अपने स्थान का काम है। बापदादा ने यहाँ मधुबन में धरनी भी तैयार की, बीज भी डाला अभी पानी देना, फल निकालना आपका काम है। निकलेंगे फल। सिर्फ एक ग्रुप बनाओ जो लिस्ट को देख करके सम्पर्क करता रहे। नई-नई सेवाओं में बिजी हो जाते हो ना तो यह थोड़ा ढीला हो जाता है। बाकी डबल विदेशियों की वृद्धि भी है और विधि भी बहुत अच्छी बनाते जाते हो इसलिए निमित्त जनक को और आप सब राइट हैण्डस को, सभी ब्राह्मण परिवार की तरफ से मुबारक हो। अच्छा।

सब खुश हैं और खुश सदा रहने वाले हैं। ऐसे है ना! बापदादा ठीक कहता है या कोई पेपर आयेगा तो चेहरा बदल जायेगा? नहीं, बदले नहीं। उस समय पता है क्या होता है? बापदादा को क्या दिखाई देता है? जैसे आजकल का फैशन है – स्वांग बनाते हैं तो और शक्ल (मास्क) लगा देते हैं ना। उस समय जैसे आप लोगों का चेहरा ओरीज्नल नहीं होता, मास्क लगा देते हो। कोई लोभ का कोई मोह का, कोई अभिमान का, कोई मैं पन का, कोई मेरे पन का, चेहरे ही बदल जाते हैं। फिर परेशान होते हैं ना। दूसरा फेस अगर लगा लो तो परेशान होते हैं ना। गर्मी लगती है ना, यह क्या पहना है तो और फेस नहीं लगाओ। अपना ओरीज्नल स्वरूप का चेहरा सदा रखो। बापदादा के पास हर एक के बहुत फोटो हैं। यहाँ साकार दुनिया में तो जगह ही नहीं है जो आपके फोटो रखें।

अच्छा–एक सेकण्ड में बिल्कुल बाप समान अशरीरी बन सकते हो? तो एक सेकण्ड में फुल स्टॉप लगाओ और अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाओ।

(बापदादा ने 3 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा–यह सारे दिन में बार-बार अभ्यास करते रहो।

चारों ओर के सर्व मायाजीत, प्रकृतिजीत, साक्षीपन के तख्तनशीन, साथी के साथ का सदा अनुभव करने वाले, सदा दृढ़ता से सफलता को गले का हार बनाने वाले, सदा बाप समान लाइट रहने वाले, सदा अपने माइट द्वारा विश्व को दु:ख-अशान्ति की कमजोरी से छुड़ाने वाले ऐसे मास्टर सुख के सागर, खुशी के सागर, प्रेम के सागर, ज्ञान के सागर बाप समान बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

6-3-97

शिव जयन्ती की गिफ्ट – मेहनत को छोड़ मुहब्बत के झूले में झूलो

आज स्वयं शिव पिता अपने चारों ओर के आये हुए बच्चों से अपनी जयन्ति मनाने आये हैं। कितना बच्चों का भाग्य है जो स्वयं बाप मिलने और मनाने आये हैं। दुनिया वाले तो पुकारते रहते हैं – आओ, कब आयेंगे, किस रूप में आयेंगे, आह्वान करते रहते हैं और आप बच्चों से स्वयं बाप मनाने के लिए आये हैं। ऐसा विचित्र दृश्य कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा, लेकिन आज साकार रूप में मनाने के लिए भाग-भाग कर पहुंच गये हो। बाप भी चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित होते हैं – वाह सालिग्राम बच्चे वाह! वाह साकार स्वरूपधारी होवनहार फरिश्ता सो देवता बच्चे वाह! भक्त बच्चों और आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में कितना अन्तर है। भगत भावना का, अल्पकाल का फल पाकर खुश हो जाते हैं। वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं और आप ज्ञानी तू आत्मायें बच्चे थोड़ा सा अल्पकाल का फल नहीं पाते लेकिन बाप से पूरा वर्सा ले, वर्से के अधिकारी बन जाते हो। तो भक्त आत्मायें और ज्ञानी तू आत्मा बच्चों में कितना अन्तर है! मनाते भक्त भी हैं और मनाने आप भी आये हैं लेकिन मनाने में कितना अन्तर है! शिव जयन्ती मनाने आये हो ना! भाग-भाग कर आये हैं कोई अमेरिका से, कोई लण्डन से, कोई आस्ट्रेलिया से, कोई एशिया से, कितना स्नेह से आकर पहुंचे हैं। तो बापदादा, बाप की जयन्ती साथ में बच्चों की भी जयन्ती है, तो बाप के साथ बच्चों के भी जयन्ती की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। क्योंकि अकेला बाप इस साकार दुनिया में सिवाए बच्चों के कोई भी कार्य कर नहीं सकता। इतना बच्चों से प्यार है। अकेला कर ही नहीं सकता। पहले बच्चों को निमित्त बनाते फिर बैकबोन होकर वा कम्बाइन्ड होकर, करावनहार होकर निमित्त बच्चों से कार्य कराते हैं। साकार दुनिया में अकेला, बच्चों के बिना नहीं पसन्द करता। निराकारी दुनिया में तो आप बच्चे बाप को अकेला छोड़कर चले जाते हो। बाप की आज्ञा से ही जाते हो लेकिन साकार दुनिया में बाप बच्चों के बिना रह नहीं सकते। बच्चे जरूर साथ चाहिए। बच्चों का भी वायदा है साथ रहेंगे, साथ चलेंगे – सिर्फ निराकारी दुनिया तक।

बापदादा देख रहे थे कि सभी बच्चों को बाप की जयन्ती मनाने का कितना

उमंग-उत्साह है। तो बाप भी देखो बच्चों के स्नेह में आपके साथ साकार शरीर का लोन लेकर पहुंच गये हैं। इसको कहते हैं अलौकिक प्यार। बच्चे बाप के बिना नहीं रह सकते और बाप बच्चों के बिना नहीं रह सकते। प्यार भी अति है और फिर न्यारे भी अति हैं, इसीलिए बाप की महिमा ही है न्यारा और प्यारा। बच्चे बाप के लिए बहुत प्रकार की गिफ्ट चाहे कार्ड, चाहे कोई चीज़ें, चाहे दिल के उमंग के पत्र, जो भी लाये हैं बाप के पास आज के दिन वतन में सब गिफ्ट का म्युजियम लगा हुआ है। आपका म्युजियम है सेवा का और बाप का म्युजियम है स्नेह का। तो जो भी सभी लाये हैं वा भेजे हैं सबका स्नेह सम्पन्न गिफ्ट बाप के पास अभी भी म्युजियम लगा हुआ है। जिन्हों को देख-देख बाप हर्षाते रहते हैं। चीज़ बड़ी नहीं है लेकिन जब चीज़ में स्नेह भर जाता है तो वह छोटी चीज़ भी बहुत महान बन जाती है। तो बापदादा चीज को नहीं देखते हैं, कागज के कार्ड को या पत्र को नहीं देखते हैं लेकिन उसमें समाये हुए दिल के स्नेह को देखते हैं। इसीलिए कहा कि बाप के पास स्नेह का म्युजियम है। ऐसा म्युजियम आपके वर्ल्ड में नहीं है। है ऐसा म्युजियम? नहीं है। जब बाप एक-एक प्यार की गिफ्ट को देखते हैं तो देखते ही बच्चे की सूरत उसमें दिखाई देती है। ऐसा कैमरा है आपके पास? नहीं है। गिफ्ट को देखते हुए बापदादा को एक शुभ संकल्प उठा, बतायें? करना पड़ेगा। करेंगे, तैयार हैं? सोचना नहीं।

बापदादा को संकल्प उठा यह गिफ्ट तो बाप के पास पहुंच गई लेकिन साथ में बापदादा को एक और भी गिफ्ट चाहिए। आप लोगों की गिफ्ट बहुत अच्छी है लेकिन बापदादा को और भी चाहिए। तो देंगे गिफ्ट? वैसे भी यह जो यादगार मनाते हैं, शिव जयन्ती अर्थात् कुछ न कुछ अर्पण करते हैं। बलिहार जाते हैं। तो बापदादा ने सोचा, बलिहार तो सब बच्चे गये हैं। बलिहार हो गये हैं या अभी थोड़ा-थोड़ा अपने पास सम्भालकर रखा है? आज के दिन व्रत भी लेते हैं। तो बापदादा को संकल्प आया कि बच्चे जो कभी-कभी थोड़ा सा चलते-चलते थक जाते हैं, मेहनत बहुत महसूस करते हैं या निरन्तर योग लगाना मुश्किल अनुभव करते हैं, सोचते हैं हो तो जायेगा.... बाप को दिलासे देते हैं – आप फिकर नहीं करो, हो जायेगा। लेकिन बापदादा को बच्चों की थकावट वा अकेलापन या कभी-कभी, कोई-कोई थोड़ा सा दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, पता नहीं हमारा भाग्य है या नहीं है .... कभी-कभी ऐसा सोचते हैं तो यह बाप

को अच्छा नहीं लगता। सबसे ज्यादा बाप को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। मालिक और मेहनत! बाप के भी बालक सो मालिक हैं। भगवान के भी मालिक और फिर मेहनत करें! तो अच्छा लगेगा? सुनना भी अच्छा नहीं लगता। तो बाप को संकल्प आया कि बच्चे बर्थ डे की गिफ्ट तो जरूर देते ही हैं तो क्यों नहीं आज के दिन सभी बच्चे यह गिफ्ट के रूप में दें। वह स्थूल गिफ्ट जो दी वह तो वतन में इमर्ज हो गई, लेकिन निराकारी दुनिया में तो यह गिफ्ट इमर्ज नहीं होगी। वहाँ तो संकल्प की गिफ्ट पहुंचती है। तो बाप को संकल्प आया कि आज के दिन सब बच्चों से गिफ्ट लेनी है। तो गिफ्ट देंगे या देकर फिर वहाँ जाकर वापस ले लेंगे? कहेंगे, मधुबन का मधुबन में रहा और अपने देश में अपना देश है, ऐसे तो नहीं करेंगे? बच्चे बड़े चतुर हो गये हैं। बाप को कहते हैं कि हम चाहते तो नहीं हैं वापस आये, लेकिन आ जाती है। आ जाती है तो आप स्वीकार क्यों करते हो? आ जाती है यह राइट है, लेकिन कोई चीज़ आपको पसन्द नहीं है और कोई जबरदस्ती भी दे तो आप लेंगे या वापस दे देंगे? वापस देंगे ना? तो स्वीकार क्यों करते हो? माया तो वापस लायेगी लेकिन आप स्वीकार नहीं करो। ऐसी हिम्मत है? सोचकर कहो। फिर वहाँ जाकर नहीं कहना - बाबा क्या करूं, चाहते नहीं हैं लेकिन हो गया। ऐसे पत्र तो नहीं लिखेंगे? आपकी हिम्मत और बाप की मदद। हिम्मत कम नहीं करना फिर देखो बाप की मदद मिलती है या नहीं। सभी को अनुभव भी है कि हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती है और मिलनी ही है, गैरन्टी है। हिम्मत आपकी मदद बाप की। तो संकल्प क्या हुआ? चेहरे देख रहे हैं – हिम्मत है या नहीं है! हिम्मत वाले तो हो, क्योंकि अगर हिम्मत नहीं होती तो बाप के बनते नहीं। बन गये – इससे सिद्ध होता है कि हिम्मत है। सिर्फ छोटी सी बात करते हो कि समय पर हिम्मत को थोड़ा सा भूल जाते हो। जब कुछ हो जाता है ना तो पीछे हिम्मत वा मदद याद आती है। समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण यूज करना इसको कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।

बापदादा को एक बात की बहुत खुशी है, पता है किस बात की? बोलो। (बहुतों ने सुनाया) सब ठीक बोल रहे हो लेकिन बाप का संकल्प और है। आप बहुत गुह्य सुना रहे हो, नालेजफुल हो गये हो ना।

बापदादा खुश हो रहे थे कि कई बच्चों ने पत्र और चिटकी लिखी है कि

हम 108 में आयेंगे, बहुत चिटकियां आई हैं। बापदादा ने सोचा जब इतने 108 में आयेंगे, तो 108 की माला पांच लड़ियों की बनानी पड़ेगी। तो 5-6-7-8 लड़ियों की माला बनायें ना? जिन्होंने संकल्प किया है, लक्ष्य रखा है बहुत अच्छा है। लेकिन सिर्फ इस संकल्प को बीच-बीच में दृढ़ करते रहना। ढीला नहीं करना। ऐसे तो नहीं कहेंगे माया आ गई – अब पता नहीं आयेंगे या नहीं! पता नहीं, पता नहीं...नहीं करना। पता कर लिया, आना ही है। दृढ़ता का ठप्पा लगाते रहना। हाँ मुझे आना ही है, कुछ भी हो जाए, मेरा निश्चय अटल है, अखण्ड है। ऐसा अटल-अखण्ड निश्चय है? तो माया को हिलाने के लिए भेजें? नहीं? डरते हो? माया आपसे डरती है और आप माया से डरते हो? माया अपने दरवाजे देखती है, यहाँ खुला हुआ है, यहाँ खुला हुआ है। ढूंढती रहती है। आप घबराते क्यों हो? माया कुछ नहीं है। कुछ नहीं कहो तो कुछ नहीं हो जायेगी। आ नहीं सकती, आ नहीं सकती, तो आ नहीं सकती। क्या करें....? तो माया का दरवाजा खोला, आह्वान किया। तो अच्छी बात है कि बहुत बच्चों ने 108 में आने की प्रामिस किया है। किया है ना? जिन्होंने कहा है कि हम 108 में आयेंगे - वह लम्बा हाथ उठाओ। अच्छी तरह से ड्रिल करो। बहुत अच्छा, मुबारक हो। यह नहीं सोचो कि 108 में कितने आयेंगे, हम कहाँ आयेंगे – यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं – दादी आयेंगी, दीदी आयेंगी, फिर दादे भी आयेंगे, एडवांस पार्टी वाले भी आयेंगे। हमारा नम्बर आयेगा या नहीं, पता नहीं! बापदादा ने कहा कि बापदादा 8-10 लड़ों की माला बना देंगे, इसलिए आप यह चिंता नहीं करो। औरों को नहीं देखो, आपको नम्बर मिल ही जाना है, यह बाप की गैरन्टी है। आप किनारा नहीं करना। माला के बीच में धागा खाली नहीं करना। एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गैरन्टी है आप जरूर आयेंगे।

आज तो मनाने आये हैं, मुरली चलाने थोड़ेही आये हैं। तो और जो भी हो वह माला में आ जाओ, 108 की माला में सबको वेलकम है। यह तो भक्ति मार्ग वालों ने 108 की माला बना ली। बापदादा तो कितनी भी बढ़ा सकता है। सिर्फ इसमें गिफ्ट तो बाप जरूर लेगा, गिफ्ट को नहीं छोड़ेगा। छोटी सी गिफ्ट है कोई बड़ी नहीं है, क्योंकि बाप ने सभी बच्चों का 6 मास का चार्ट देखा। तो

क्या देखा? अगर कोई भी बच्चे थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हैं, अचल से हलचल में आते हैं तो उसका कारण सिर्फ 3 बातें मुख्य हैं, वही तीन बातें भिन्न-भिन्न समस्या या परिस्थिति बनकर आती हैं। वह तीन बातें क्या हैं?

अशुभ वा व्यर्थ सोचना। अशुभ वा व्यर्थ बोलना और अशुभ वा व्यर्थ करना। सोचना, बोलना और करना – इसमें टाइम वेस्ट बहुत होता है। अभी विकर्म कम होते हैं, व्यर्थ ज्यादा होते हैं। व्यर्थ का तूफान हिला देता है और पहले सोच में आता है, फिर बोल में आता है, फिर कर्म में आता है और रिजल्ट में देखा तो किसी का बोल और कर्म में नहीं आता है लेकिन सोचने में बहुत आता है। जो समय बनाने का है, वह सोचने में बीत जाता है। तो बापदादा आज यह तीन बातें सोचना, बोलना और करना – इनकी गिफ्ट सभी से लेने चाहते हैं। तैयार हैं? जिन्होंने दे दी वह हाथ उठाओ। हाथ का वीडियो अच्छी तरह से एक-एक साइड का निकालो। बड़ा हाथ उठाओ। ड्रिल नहीं करते हो इसीलिए मोटे हो जाते हो। अच्छा–सभी ने यह दे दिया। वापस नहीं लेना। यह नहीं कहना कि मुख से निकल गया, क्या करें? मुख पर दृढ़ संकल्प का बटन लगा दो। दृढ़ संकल्प का बटन तो है ना? क्योंकि बापदादा को बच्चों से प्यार है ना। तो प्यार की निशानी है, प्यार वाले की मेहनत देख नहीं सकते। बापदादा तो उस समय यही सोचते कि बापदादा साकार में जाकर इनको कुछ बोले, लेकिन अब तो आकारी, निराकारी है। बिल्कुल सभी मेहनत से दूर मुहब्बत के झूले में झूलते रहो। जब मुहब्बत के झूले में झूलते रहेंगे तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मेहनत को खत्म करें, खत्म करें नहीं सोचो। सिर्फ मुहब्बत के झूले में बैठ जाओ, मेहनत आपेही छूट जायेगी। छोड़ने की कोशिश नहीं करो, बैठने की, झूलने की कोशिश करो।

शिव जयन्ती अर्थात् बच्चों के मेहनत समाप्त की जयन्ती। ठीक है ना? बाप को भी बच्चों पर फेथ है। पता नहीं कैसे कोई-कोई किनारा कर लेते हैं जो बाप को भी पता नहीं पड़ता। छत्रछाया के अन्दर बैठे रहो। ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है झूलना, माया में नहीं। माया भी झुलाती है। अमृतवेले देखो माया ऐसे झुलाती है जो सूक्ष्मवतन में आने के बजाए, निराकारी दुनिया में आने के बजाए निद्रालोक में चले जाते हैं। कहते हैं योग डबल लाइट बनाता है लेकिन माथा भारी हो जाता है। तो माया भी झूला झुलाती है लेकिन माया के झूले में नहीं

झूलना। आधाकल्प तो माया के झूले में खूब झूलकर देखा है ना। क्या मिला? मिला कुछ? थक गये ना! अभी अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, खुशी के झूले में झूलो। शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। इतने झूले आपको मिले हैं जो यहाँ के प्रिन्स-प्रिन्सेज को भी नहीं होंगे। चाहे जिस झूले में झूलो। अभी प्रेम के झूले में झूलो, अभी आनंद के झूले में झूलो। अभी ज्ञान के झूले में झूलो। कितने झूले हैं! अनगिनत। तो झूले से उतरो नहीं। जो लाडले होते हैं ना तो मां-बाप यही चाहते हैं कि बच्चे का पांव मिट्ठी में नहीं पड़े या गोदी में हो या झूले में हो या गलीचों में हो। मिट्टी में पांव नहीं जाये। ऐसे होता है ना? तो आप कितने लाडले हो! आप जैसा लाडला कोई है? परमात्म लाडले बच्चे अगर देहभान में आते हैं तो देह क्या है? मिट्टी है ना! देह को क्या कहते हैं? मिट्टी, मिट्टी में मिल जायेगी। तो यह मिट्टी है ना। मिट्टी में पांव क्यों रखते हो? मिट्टी अच्छी लगती है? कई बच्चों को मिट्टी अच्छी लगती है, कई मिट्टी खाते भी हैं। लेकिन आप नहीं खाना, पांव भी नहीं रखो। संकल्प आना अर्थात् पांव रखना। संकल्प में भी देह-भान नहीं आवे। सोचो, याद रखो कि हम कितने लाडले हैं, किसके लाडले हैं! सतयुग में भी परमात्म लाडले नहीं होंगे। दिव्य आत्माओं के लाडले होंगे। लेकिन इस समय परमात्म बाप के लाडले हो। तो बच्चों ने हिम्मत के हाथ से गिफ्ट दी इसलिए बापदादा उसकी थैंक्स करते हैं, शुक्रिया, धन्यवाद।

अच्छा – आज डबल विदेशियों का विशेष दिन है। आये भी बहुत हैं। जो डबल विदेशी बैठे हैं वह हाथ उठाओ। हाल में पौना हिस्सा डबल विदेशी हैं। बाप भी स्वागत करते हैं भले आये, सदा आओ। देखो, बच्चे बढ़ते जाते हैं और पृथ्वी छोटी होती जाती है। जब यह हाल बना था तो सोचते थे इतना हाल भरेगा? अभी हाल तो क्या लेकिन कितनी नीचे गीता पाठशालायें बन गई हैं। बहुत बच्चे नीचे बैठे हैं। (मधुबन में मुरली सुन रहे हैं) अभी देखो नीचे (शान्तिवन) का हाल बनाया तो भी कहते हैं कि संख्या देनी पड़ेगी। इतना बड़ा हाल क्यों बनाया? संख्या देने के लिए या फ्रीडम देने के लिए? इससे क्या सिद्ध होता है? आप सभी को विश्व का मालिक बनना है। तो विश्व का मालिक बनने वाले इतने बड़े, उनके लिए सब छोटा हो जाता है। हाल तो कुछ भी नहीं है, सारी विश्व आपको मिलनी ही है।

(बापदादा ने ड्रिल कराई) मन के मालिक हो ना! तो सेकण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाए। ऐसा नहीं आप कहो स्टॉप और मन चलता रहे, इससे सिद्ध है कि मालिकपन की शक्ति कम है। अगर मालिक शक्तिशाली है तो मालिक के डायरेक्शन बिना मन एक संकल्प भी नहीं कर सकता। स्टॉप, तो स्टॉप। चलो, तो चले। जहाँ चलाने चाहो वहाँ चले। ऐसे नहीं कि मन को बहुत समय की व्यर्थ तरफ चलने की आदत है, तो आप चलाओ शुद्ध संकल्प की तरफ और मन जाये व्यर्थ की तरफ। तो यह मालिक को मालिकपन में चलाना नहीं आता। यह अभ्यास करो। चेक करो स्टॉप कहने से, स्टॉप होता है? या कुछ चलकर फिर स्टॉप होता है? अगर गाड़ी में ब्रेक लगानी हो लेकिन कुछ समय चलकर फिर ब्रेक लगे, तो वह गाड़ी काम की है? ड्राइव करने वाला योग्य है कि एक्सीडेंट करने वाला है? ब्रेक, तो फौरन सेकण्ड में ब्रेक लगनी चाहिए। यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा। संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास। कर्मातीत का अर्थ ही है हर सबजेक्ट में फुल पास। 75 परसेन्ट, 90 परसेन्ट भी नहीं, फुल पास। यह अवस्था तब आयेगी जब अपने अनुभव में सर्व शक्तियों का स्टॉक प्रैक्टिकल यूज़ में आवे। पहले भी सुनाया – सर्वशक्तियां बाप ने दी, आपने ली लेकिन समय पर यूज़ होती हैं या नहीं, सिर्फ स्टॉक ही है! सिर्फ स्टॉक है लेकिन समय पर यूज नहीं हुआ तो होना या न होना एक ही बात है। यह अनुभव करो परिस्थिति बहुत नाजुक है लेकिन आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी। सामना नहीं करेगी। आसन नहीं छोड़ो, आसन में बैठने का अभ्यास ही सिंहासन प्राप्त करायेगा। अगर आसन पर बैठना नहीं आता है, कभी-कभी बैठना आता है तो सिंहासन में भी कभी-कभी बैठेंगे। आसन ही सिंहासन प्राप्त कराता है। अब आसन है फिर सिंहासन है। हलचल वाला आसन पर एकाग्र होकर बैठ नहीं सकता। इसीलिए कहा व्यर्थ समाप्त, अशुभ समाप्त – तो अचल हो जायेंगे और अचल स्थिति के आसन पर सहज और सदा स्थित हो सकेंगे। देखो आप सबका यादगार यहाँ अचलघर है। अचलघर देखा है ना? यह किसका यादगार है? आप सबके स्थिति का यादगार यह अचलघर है। अनुभव करो, ट्रायल करते जाओ, यूज करते जाओ। ऐसे नहीं समझ लेना, हाँ सब शक्तियां तो हैं ही। समय पर यूज हों। यूज नहीं करेंगे तो

समय पर धोखा मिल सकता है। इसलिए छोटी-मोटी परिस्थिति में यूज करके देखो। परिस्थितियां तो आनी ही हैं, आती भी हैं। पहले भी बापदादा ने कहा है कि वर्तमान समय अनुभव करते हुए चलो। हर शक्ति का अनुभव करो, हर गुण का अनुभव करो। ऐसे अनुभवी मूर्त बनो जो कोई भी आवे तो आपके अनुभव की मदद से उस आत्मा को प्राप्ति हो जाए। दिन-प्रतिदिन आत्मायें शक्तिहीन हो रही हैं, होती रहेंगी। ऐसी आत्माओं को आप अपनी शक्तियों की अनुभूतियों से सहारा बन अनुभव करायेंगे। अच्छा। मालिक हैं ना! तो मालेकम सलाम, बाप कहते हैं – मालिकों को सलाम। अच्छा।

(66 देशों से बाबा के बच्चे आये हैं) 66 देशों के बच्चों को पदमगुणा मुबारक हो। आखिर तो विश्व में आप ही चारों ओर फैल जायेंगे। जहाँ देखेंगे वहाँ सफेद वस्त्रधारी फरिश्ते दिखाई देंगे। अच्छा।

अमेरिका:- अमेरिका के कितने देशों से आये हैं? (19) 19 देशों के हाथ उठाओ। अमेरिका क्या जलवा दिखायेंगे? देखो नाम बहुत अच्छा है- अमेरिका माना आ मेरे आ। तो अमेरिका सभी खोये हुए बच्चों को आ मेरे, आ मेरे कहके बाप का बना देंगे। ऐसे है ना? बढ़ रहे हैं ना वहाँ? बढ़ते रहेंगे।

अफ्रीका:- (अफ्रीका के 13 देश वाले आये हैं) सब हाथ उठाओ। इसमे साउथ अफ्रीका, मौरीशियस भी है? अफ्रीका क्या करेंगे? अफ्रीका आफरीन के लायक बनेंगे। सेवा का ऐसा नगाड़ा बजायेंगे जो चारों ओर से यही निकले आफरीन है, आफरीन है।

एशिया:- (एशिया के 13 देशों से आयें हैं) एशिया क्या करेगा? सर्व आत्माओं की आशायें पूरी करे। जब सब आत्माओं की आशायें पूरी होंगी तो सब कहेंगे वाह एशिया वाह!

यूरोप:- (यूरोप के 17 देशों से आये हैं) उसमें लण्डन भी है? यूरोप तो विदेश का फाउण्डेशन है। तो फाउण्डेशन सदा ही सबकी नज़रों में आता है कि फाउण्डेशन कितना पक्का है! यूरोप से ही फाउण्डेशन फैला है और भिन्न-भिन्न शाखायें फैली हैं। पहले नम्बर में दो पत्ते निकलते हैं, जब बीज डालते हैं तो दो पत्ते निकलते हैं। तो पहले सेन्टर कौन से निकले? लण्डन और साथ में हांगकांग। तो दो पत्तों की ही कमाल हुई ना। दो पत्तों से तना निकला, तना से डालियां निकली, डालियों से शाखायें निकली और डबल विदेश का वृक्ष हरा

भरा हो गया। तो यूरोप के दो पत्ते लण्डन और हांगकांग को बहुत-बहुत पदमगुणा मुबारक हो। (यूरोप वाले हाथ उठाओ) पहले पत्ते हैं तो विस्तार तो होगा ना।

मिडिल ईस्टः- (3 देशों से आये है) यह अच्छे हैं, अभी-अभी आगे बढ़ रहे हैं। अभी थोड़े हैं, अभी मिडिल को मॉडल लेना चाहिए। इतनी सेवा बढ़ाओ जो सब देश वाले आपको मिडिल नहीं, मॉडल लेने वाले कहें। बढ़ायेंगे ना? विश्व का कल्याण होना है तो मिडिल वालों का कल्याण तो करना ही है। नहीं तो विश्व का एक कोना छूटा रह जायेगा तो अच्छा नहीं है। इसीलिए जब भी कोई आपको कहे ना मिडिल ईस्ट है तो कहो नहीं मॉडल इस्ट है।

रशियाः- रशिया के टोटल हाथ उठाओ। अच्छे हैं। रशिया वाले क्या करेंगे? रशिया में ज्यादा समय कम्युनिस्ट का राज्य रहा है और अभी रशिया में देवताओं का राज्य होगा क्योंकि भारत के नजदीक है ना। तो भारत के आस-पास आ जायेगा, स्वर्ग बन जायेगा। जो दूर दूर देश हैं, वह दूर होंगे। रशिया नजदीक है, तो देवताओं का राज्य अभी तो नहीं है लेकिन बहुत समय कम्युनिस्ट का रहा है ना, अभी स्वतन्त्र है। अभी फिर राजा-रानी का राज्य होगा। राजा-रानी का राज्य पसन्द है? बहुत अच्छा। वृद्धि बहुत जल्दी-जल्दी हो रही है। बापदादा सेवा से खुश हैं। रशिया वालों ने कहा था ना कि हम बापदादा को फूलों की पंखुडियां डालेंगे, तो ऐसे हाथ कर लो, डल गई और ही खुशबू आ गई। दिल के स्नेह के पुष्प बाप के पास पहुंच गये। अच्छा।

आस्ट्रेलिया- आस्ट्रेलिया हाथ उठाओ। आस्ट्रेलिया के कम आये हैं। आस्ट्रे-लिया को अभी फर्स्ट जाना है। आस्ट्रेलिया में बापदादा के बहुत अच्छे आदि रत्न हैं लेकिन अभी थोड़े गुप्त हो गये हैं। भट्ठी में चले गये हैं। अभी रिट्रीट हाउस मिला है ना तो अभी बाहर आयेंगे। फिर आस्ट्रेलिया का झुण्ड दिखाई देगा। आस्ट्रेलिया नक्शे में बहुत बड़ा है तो ब्राह्मण परिवार में भी बड़ा होगा। थोड़ा भट्ठी में पक रहे हैं। आस्ट्रेलिया से बापदादा का बहुत प्यार है क्योंकि लण्डन और आस्ट्रेलिया की रेस थी, लण्डन से भी ज्यादा संख्या आस्ट्रेलिया की थी, अभी गुप्त हो गये हैं। प्रत्यक्ष होंगे। अभी अननोन हैं, वेलनोन हो जायेंगे। अच्छा। डबल विदेशी रिफ्रेश हो गये? आपके लिए खास बापदादा आये हैं। डबल विदेशियों से डबल प्यार है।

फ़र्स्ट टाइम वालों से:- फर्स्ट टाइम वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। आज बाप की जयन्ती है तो आप जो पहली बारी आये हैं, तो बाप उन्हों का भी विशेष आज के दिन नया बर्थ डे मना रहे हैं। बर्थ डे का गीत गाओ। अच्छा है। अलौकिक बर्थ डे की पदमगुणा मुबारक हो, बधाई हो। अच्छा।

(आज शिवबाबा के बर्थ डे पर ब्रह्मा बाबा ने कौन सी गिफ्ट बाप को दी?) ब्रह्मा बाप ने सब पहले ही दे दी है, कुछ रखा ही नहीं। जब सम्पूर्ण बनें तब सब दे दी। उसके पास कुछ है ही नहीं। बच्चों के पास छिपा हुआ है तब तो देंगे। अभी सिर्फ ब्रह्मा बाप आप बच्चों का इन्तजार कर रहा है। रोज़ बांहे पसार कर आओ बच्चे, आओ बच्चे कहते हैं। तो बाप समान बनो और चलो वतन में। परमधाम का दरवाजा ही नहीं खोलते हैं। आपके लिए रुका हुआ है। ब्रह्मा बाबा तो बीच-बीच में कहते हैं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। लेकिन बाप कहते हैं अभी थोड़ा रुको, थोड़ा रुको।

अच्छा–डबल विदेशी सब अच्छी तरह से मिले ना! बड़ा परिवार तो बड़े परिवार में सब बांटना पड़ता है। छोटे परिवार में तो छोटे में बांटा जाता है। बड़ा हो गया तो बड़े के अनुसार ही बांटा जाता है। आप सोचो बड़ा नहीं हो तो राज्य किस पर करेंगे! 5-10 पर करेंगे क्या? इतने 108 माला के दाने तैयार हो गये हैं, तो लोग तो चाहिए जिस पर राज्य करो। इसीलिए बड़ा परिवार होना ही है। अच्छा।

चारों ओर के अति-अति भाग्यवान बच्चे जो स्वयं शिव बाप से शिवजयन्ती मना रहे हैं, ऐसे पदमगुणा तो क्या लेकिन जितना भी ज्यादा में ज्यादा कहो वह भी थोड़ा है। ऐसे महान भाग्यवान आत्मायें, सदा बाप की आज्ञा पर हर कदम रखने वाले बाप के स्नेही और समीप आत्मायें, सदा मालिकपन के अचल आसन निवासी सो भविष्य सिंहासन निवासी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ-साथ मौज से मुहब्बत के झूले में झूलते हुए साथ चलने वाले ऐसे बापदादा के साथी बच्चों को बापदादा का बर्थ डे की मुबारक और यादप्यार स्वीकार हो, बाप का सभी मालिकों को नमस्ते।

दादियों से:- अपने-अपने आसन पर बैठ जाओ, छोटी सी राज दरबार है ना। स्वराज्य अधिकारी राजायें अपनी दरबार में बैठ जाओ। (सभा से) आप सभी को भी राज दरबार अच्छी लगती है ना? यह संगम की दरबार है। आप

सभी भी नीचे नहीं बैठे हो, ऊपर बैठे हो। देखो यह सिंहासन पर हैं और आप सभी दिल के सिंहासन पर हैं। यह सिंहासन तो छोटा है, दिल का सिंहासन तो बहुत बड़ा है।

(निर्वैर भाई ने बापदादा को गुलदस्ता दिया और मुबारक दी) आपको भी मुबारक। सभी पाण्डवों की तरफ से यह आपकी याद ले आये इसीलिए पाण्डवों को खास मुबारक हो। शक्तियों की तरफ से तो बहुत शक्तियां आई ही हैं इसलिए बहुत-बहुत मुबारक।

आप लोगों को नशा रहता है ना कि हम सिंहासन के अधिकारी हैं? आज फरिश्ते और कल तख्तनशीन। एक एक बच्चा तख्तनशीन बनना ही है। ऐसे नहीं समझना हम शायद प्रजा में जायेंगे, नहीं। रॉयल फैमिली में आना ही है। जब बाप के बने हो तो संगमयुग के वर्से के साथ चाहे राजा बनो, चाहे रॉयल फैमिली के बनों। बनना ही है। राज्य परिवार में आना ही है। समझा।

डबल विदेशियों के बीच में भारतवासी छिप गये हैं। भारतवासी हाथ उठाओ। भारतवासी तो हर एक के मुख पर हैं ही। भारत महान है, भारत स्वर्ग है, भारत ऊंचा है। तो भारतवासी तो ऊंचे हैं ही लेकिन भारतवासी महादानी हैं, डबल विदेशियों को चांस देते हैं इसलिए **महादानी भवः।**

(बाबा भी भारत का है) बाबा विश्व का है, सिर्फ भारत का नहीं है। विश्व कल्याणकारी है, भारत का कल्याणकारी तो छोटा हो जायेगा। विश्व कल्याणकारी अर्थात् विश्व का बाप है। भारत तो हद हो जायेगी। इसलिए बाप स्वर्ग में नहीं आता, हद हो जायेगी ना। बेहद का बाप बेहद में ही रहता है। डबल विदेशी सदा सर्व वरदानों से भरपूर भवः। बापदादा जानते हैं कितनी मेहनत से एक-एक डालर कहो या जो भी मनी है, वह जमा करके आते हैं। मेहनत और मुश्किलात भारतवासियों को है, विदेशियों को तो प्लेन में बैठे और आ गये। भारतवासियों को तो ट्रेन और बसों में आना पड़ता है लेकिन एक-एक डालर जमा करने की जो टैक्ट (युक्ति) है, वह डबल विदेशियों में ज्यादा है।

शान्तिवन के लिए भी अपने पेट की रोटी बचाकरके भी कर रहे हैं। बापदादा जानते हैं खुद दाल रोटी खायेंगे, शान्तिवन में भेजेंगे। चाहे भारतवासी भी, चाहे विदेशी - सबकी ज्ञान सरोवर चाहे शान्तिवन में जान लगी हुई है। दिल से प्यार है। (आगे क्या होना है?) आगे भी हो जायेगा। शान्तिवन भी अभी पूरा बना नहीं है इसीलिए नेक्स्ट नहीं कहते हैं।

(विनाश के पहले एक-एक कान्टीनेंट में एक-एक बार बाबा आये) देखो, ड्रामा। बाप लण्डन में भी आये, लेकिन मधुबन की महिमा तो मधुबन की है। आगे चलकर क्या होता है, वह बताने से मजा खत्म हो जायेगा। इसीलिए देखो आगे क्या होता है! अच्छा, सौगात को पार्शल कर दिया! वापस नहीं लेना। अच्छा-डबल विदेशी खुश हैं? डबल विदेशी सब आराम से रहे हुए हैं? (सभी भवन फुल हैं) कोई पटरानी नहीं बने हैं? अभी पटरानी बनायेंगे। आपकी जो अटैची है ना, उसको बिस्तरा बनाना, कम से कम तकिया तो बन सकता है। यह भी दृश्य अच्छा होगा ना, अटैची का तकिया होगा, सब आराम से विष्णु के माफिक लेटे हुए होंगे। कितना अच्छा होगा। डबल विदेशियों को पटरानी जरूर बनायेंगे। देखो शुरू-शुरू में स्थापना में पहले यह सभी विशेष आत्मायें तीन फुट की जगह पर सोई हैं। चार फुट भी नहीं, तीन फुट, पट में। विशेष महारथी पट में सोते थे तो जो आदि में हुआ वह आप अन्त में करेंगे ना! कारण तो नहीं बतायेंगे कि कमर में दर्द हो गया? जब कोई भी दर्द होता है ना तो डाक्टर्स भी कहते हैं – सीधा-सीधा पट जैसा सोओ। बेड पर नहीं सोओ, संदल पर सीधा सोओ तो हेल्थ भी ठीक हो जायेगी। यह तो सब एवररेडी हैं। डबल विदेशी अर्थात् डबल एवररेडी। अच्छा। खूब मनाओ।

(बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा लहराया तथा सबको शिवजयन्ती की बधाईयां दी)

सभी बच्चों ने शिव पिता का झण्डा लहराया। ऐसे ही जैसे इस हाल में झण्डा लहराया है, ऐसे सारे विश्व के हाल में यह न्यारा और प्यारा झण्डा जल्दी से जल्दी लहरायेंगे। सबके मुख से, दिल से यही गीत बजेगा, आ गया, आ गया, हमारा बाप आ गया। सबकी दिल से खुशी की तालियां बजेंगी। इसलिए यह झण्डा तो निमित्त-मात्र है लेकिन बहुत ऊंचे ते ऊंचा बाप आ गया, आ गया, जो आना था वो आ गया। हम सबको ले जाने वाला आ गया, यही मन से झण्डा विश्व में लहरेगा। आप सब देखेंगे और आप सबको सफेद-सफेद फरिश्तों के रूप में देखेंगे। बाप के साथ आप सभी के भी गीत गायेंगे। हमारे पूज्य देवी-देवतायें आ गये, आ गये। सिर्फ आप थोड़ा जल्दी तैयार हो जाओ फिर बहुत जल्दी झण्डा लहरायेंगे। फिर सभी पेरशानी से छूट जायेंगे। अच्छा–सभी को प्यारे और न्यारे झण्डे की मुबारक हो।

3-4-97

पुराने संस्कारों को खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी बनो

आज बापदादा अपने चारों ओर से विश्व के बाप के लव में लवलीन और लक्की बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य पर बाप को भी नाज़ है कि मेरे बच्चे वर्तमान समय इतने महान हैं जो सारे कल्प में चाहे देवता स्वरूप में, चाहे धर्म नेताओं के रूप में, चाहे महात्माओं के रूप में, चाहे पदमपति आत्माओं के रूप में किसी का भी इतना भाग्य नहीं है जितना आप ब्राह्मणों का भाग्य है। तो अपने ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखते हो? सदा यह अनहद गीत मन में गाते रहते हो कि वाह भाग्य विधाता बाप और वाह मुझ श्रेष्ठ आत्मा का भाग्य! यह भाग्य का गीत सदा आटोमेटिक बजता रहता है? बाप बच्चों को देख-देख सदा हर्षित होते हैं। बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन कभी-कभी बीच में अपने भाग्य को इमर्ज करने के बजाए मर्ज कर देते हैं। जब बाप देखते हैं कि बच्चों के अन्दर अपने सौभाग्य का नशा, निश्चय मर्ज हो जाता है तो क्या कहेंगे? ड्रामा। लेकिन बापदादा सभी बच्चों को सदा ही भाग्य के स्मृति स्वरूप देखने चाहते हैं। आप भी सभी चाहते यही हैं 'लेकिन'.. बीच में आ जाता है। किसी से भी पूछो तो सब बच्चे यही लक्ष्य रख करके चल रहे हैं कि मुझे बाप समान बनना ही है। लक्ष्य बहुत अच्छा है। जब लक्ष्य श्रेष्ठ है, बहुत अच्छा है फिर कभी इमर्ज रूप, कभी मर्ज रूप क्यों? कारण क्या? बापदादा से इतने अच्छे-अच्छे वायदे भी करते हैं, रूहरिहान भी करते हैं फिर भी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर क्यों? तो बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि कारण क्या है? वैसे तो आप सब जानते हैं, नई बात नहीं है फिर भी बापदादा रिवाइज कराते हैं।

बापदादा ने देखा तीन बातें हैं – एक है सोचना, संकल्प करना। दूसरा है बोलना, वर्णन करना और तीसरा है कर्म में प्रैक्टिकल अनुभव में और चलन में लाना, कर्म में लाना। तो तीनों का समान बैलेन्स कम है। जब बैलेन्स होता है तो निश्चय और नशा इमर्ज होता है और जब बैलेन्स कम है तो निश्चय और नशा

मर्ज हो जाता है। रिजल्ट में देखा गया कि सोचने की गति बहुत अच्छी भी है और फास्ट भी है। बोलने में रफ्तार और नशा वह भी 75 परसेन्ट ठीक है। बोलने में मैजारिटी होशियार भी हैं लेकिन प्रैक्टिकल चलन में लाने में टोटल मार्क्स कम हैं। तो दो बातों में ठीक हैं लेकिन तीसरी बात में बहुत कम हैं। कारण? जब संकल्प भी अच्छा है, बोल भी बहुत सुन्दर रूप में हैं फिर प्रैक्टिकल में कम क्यों होता है? कारण क्या, जानते हो? हाँ या ना बोलो। जानते बहुत अच्छा हैं। अगर किसी को भी कहेंगे इस टापिक पर भाषण करो या क्लास कराओ तो कितना अच्छा क्लास करायेंगे! और बड़े निश्चय, नशे, फलक से भाषण भी करेंगे, क्लास भी करायेंगे। कराते हैं। बापदादा सबके क्लासेज़ सुनते हैं क्या-क्या बोलते हैं। मुस्कराते रहते हैं, वाह! वाह बच्चे वाह!

मूल बात है – बापदादा ने पहले भी सुनाया है यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो बाप कहते हैं कि कारण एक ही है, ज्यादा भी नहीं है, एक ही कारण है और बापदादा समझते हैं कि कारण को निवारण करना मुश्किल भी नहीं है, बहुत सहज है। लेकिन सहज को मुश्किल बना देते हैं। मुश्किल है नहीं, बना देते हैं, क्यों? नशा मर्ज हो जाता है। एक ही कारण है जो भी धारणा की बातें सुनते हो, करते भी हो, चाहे शक्तियों के रूप में, चाहे गुणों के रूप में, धारणा की बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हो, इतनी अच्छी करते हो जो सुनने वाले चाहे अज्ञानी, चाहे ज्ञानी सुनकर बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहकर खूब तालियां बजाते हैं, बहुत अच्छा कहा। लेकिन, कितने बार 'लेकिन' आया? यह 'लेकिन' ही विघ्न डाल देता है। 'लेकिन' शब्द समाप्त होना अर्थात् बाप समान समीप आना और बाप के समीप आना अर्थात् समय को समीप लाना। लेकिन अभी तक 'लेकिन' शब्द कहना पड़ता है। बाप को अच्छा नहीं लगता, लेकिन कहना ही पड़ता है। तो कारण क्या? जो भी कहते हो, धारण भी करते हो, धारणा के रूप से धारण करते हो और वह धारणा किसकी थोड़ा समय, किसकी ज्यादा समय भी चलती है लेकिन धारणा प्रैक्टिकल में सदा बढ़ती चले उसके लिए यही मुख्य बात है कि जैसे द्वापर से लेकर अन्तिम जन्म तक जो भी अवगुण वा कमजोरियां हैं उसकी धारणा संस्कार रूप में बन गई हैं और संस्कार बनने के कारण मेहनत नहीं करना पड़ता। छोड़ना भी चाहते हैं, अच्छा नहीं लगता है फिर भी कहते हैं क्या करें, मेरा संस्कार ऐसा है। आप बुरा नहीं

मानना, मेरा संस्कार ऐसा है। संस्कार बना कैसे? बनाया तभी तो बना ना! तो जब द्वापर से यह उल्टे संस्कार बन गये, जिससे आप समय पर मजबूर भी होते हो फिर भी कहते हो क्या करें, संस्कार हैं। तो संस्कार सहज, न चाहते हुए भी प्रैक्टिकल में आ जाते हैं ना! किसी को क्रोध आ जाता है, थोड़े समय के बाद कहते हैं आप बुरा नहीं मानना, मेरा संस्कार है। क्रोध को संस्कार बनाया, अवगुण को संस्कार बनाया और गुणों को संस्कार क्यों नहीं बनाया है? जैसे क्रोध अज्ञान की शक्ति है और ज्ञान की शक्ति शान्ति है। सहन शक्ति है। तो अज्ञान की शक्ति क्रोध को बहुत अच्छी तरह से संस्कार बना लिया है और यूज़ भी करते रहते हो फिर माफी भी लेते रहते हो। माफ कर देना, आगे से नहीं होगा। और आगे और ज्यादा होता है। कारण? क्योंकि संस्कार बना दिया है। तो बापदादा एक ही बात बच्चों को बार-बार सुनाते हैं कि अभी हर गुण को, हर ज्ञान की बात को संस्कार रूप में बनाओ।

ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं? क्रोध या सहनशक्ति? कौन सा है? सहनशक्ति, शान्ति की शक्ति यह है ना! तो अवगुणों को तो सहज ही संस्कार बना दिया, कूट-कूट कर अन्दर डाल दिया है जो न चाहते भी निकलता रहता है। ऐसे हर गुण को अन्दर कूट-कूट कर संस्कार बनाओ। मेरा निज़ी संस्कार कौन सा है? यह सदा याद रखो। वह तो रावण की जायदाद संस्कार बना दिया। पराये माल को अपना बना लिया। अब बाप के खजाने को अपना बनाओ। रावण की चीज़ को सम्भाल कर रखा है और बाप की चीज़ को गुम कर देते हो, क्यों? रावण से प्यार है! रावण अच्छा लगता है या बाप अच्छा लगता है? कहेंगे तो सभी बाप अच्छा लगता है, यही मन से कह रहे हैं ना? लेकिन जो अच्छा लगता है उसकी बात निश्चय की स्याही से दिल में समा जाती है। जब कोई रावण के संस्कार के वश होते हैं और फिर भी कहते रहते हैं – बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, बहुत प्यार है। बाप पूछते हैं कितना प्यार है? तो कहते हैं आकाश से भी ज्यादा। बाप सुनकरके खुश भी होते हैं कि कितने भोले बच्चे हैं। फिर भी बाप कहते हैं कि बाप का सभी बच्चों से वायदा है – कि दिल से अगर एक बार भी ''मेरा बाबा'' बोल दिया, फिर भले बीच-बीच में भूल जाते हो लेकिन एक बार भी दिल से बोला ''मेरा बाबा'', तो बाप भी कहते हैं जो भी हो, जैसे भी हो मेरे ही हो। ले तो जाना ही है। सिर्फ बाप चाहते

हैं कि बराती बनकर नहीं चलना, सज़नी बनकर चलना। सुनकर के तो सभी बहुत खुश हो रहे हैं। अपने ऊपर हंसी भी आ रही है।

अभी सुनने के समय अपने ऊपर हंसते हो ना! अपने ऊपर हंसी आती है और जब जोश करते हो तब लाल, पीले हो जाते हो। लेकिन बाप ने रिजल्ट में देखा कि बच्चों में एक विशेषता बहुत अच्छी है, कौन सी? पवित्रता में रहना, इसके लिए कितना भी सहन करना पड़ा है, कितना भी आपोजीशन करने वाले सामने आये हैं लेकिन इस बात में 75 परसेन्ट अच्छे हैं। कोई-कोई गसिया (गपोड़ा) भी लगाते हैं लेकिन फिर भी 75 परसेन्ट ने इस बात में पास होकर दिखलाया है। अब उसके बाद दूसरा सबजेक्ट कौन सा आता है? क्रोध। देह-भान तो टोटल है ही। लेकिन देखा गया है कि क्रोध की सबजेक्ट में बहुत कम पास हैं। ऐसे समझते हैं कि शायद क्रोध कोई विकार नहीं है, यह शस्त्र है, विकार नहीं है। लेकिन क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है। क्योंकि क्रोध अनेक आत्माओं के संबंध, सम्पर्क में आने से प्रसिद्ध हो जाता है और क्रोध को देख करके बाप के नाम की बहुत ग्लानी होती है। कहने वाले यही कहते हैं, देख लिया ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को। क्रोध के बहुत रूप हैं। एक तो महान रूप आप अच्छी तरह से जानते हो, दिखाई देता है – यह क्रोध कर रहा है। दूसरा - क्रोध का सूक्ष्म स्वरूप अन्दर में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा होती है। इस स्वरूप में जोर से बोलना या बाहर से कोई रूप नहीं दिखाई देता है, लेकिन जैसे बाहर क्रोध होता है तो क्रोध अग्नि रूप है ना, वह अन्दर खुद भी जलता रहता है और दूसरे को भी जलाता है। ऐसे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा – यह जिसमें है, वह इस अग्नि में अन्दर ही अन्दर जलता रहता है। बाहर से लाल, पीला नहीं होता, लाल पीला फिर भी ठीक है लेकिन वह काला होता है। तीसरा क्रोध की चतुराई का रूप भी है। वह क्या है? कहने में समझने में ऐसे समझते हैं वा कहते हैं कि कहाँ-कहाँ सीरियस होना ही पड़ता है। कहाँ-कहाँ ला उठाना ही पड़ता है – कल्याण के लिए। अभी कल्याण है या नहीं वह अपने से पूछो। बापदादा ने किसी को भी अपने हाथ में ला (Law) उठाने की छुट्टी नहीं दी है। क्या कोई मुरली में कहा है कि भले ला उठाओ, क्रोध नहीं करो? ला उठाने वाले के अन्दर का रूप वही क्रोध का अंश होता है। जो निमित्त आत्मायें हैं वह भी ला उठाते नहीं हैं, लेकिन उन्हों को ला रिवाइज कराना पड़ता है। ला कोई भी नहीं

उठा सकता लेकिन निमित्त हैं तो बाप द्वारा बनाये हुए ला को रिवाइज करना पड़ता है। निमित्त बनने वालों को इतनी छुट्टी है, सबको नहीं।

आज बापदादा थोड़ा आफीसियल शिक्षा दे रहे हैं, प्यार से उठाना क्योंकि बापदादा बच्चों के लिखे हुए, किये हुए वायदे देखकर, सुनकर मुस्कराते रहते हैं। अभी बापदादा ने जो सुनाया कि हर गुण को निजी संस्कार बनाओ। अन्डरलाइन किया? तो अभी से यह कहना – कि शान्त स्वरूप में रहना, सहनशील बनना – यह तो मेरा संस्कार बन गया है। फिर बापदादा जब मिलन मनाने आये, तो इसे अपना निजी संस्कार बनाकर बापदादा के आगे इन 5-6 मास में दिखाना। इसलिए आज रिजल्ट सुना रहे हैं। क्रोध की रिपोर्ट बहुत आती है। छोटा-बड़ा, भिन्न-भिन्न रूप से क्रोध करते हैं। अभी बापदादा ज्यादा नहीं खोलते हैं लेकिन कहानियां बहुत मज़े की हैं। इसलिए आज से क्रोध को क्या करेंगे? विदाई देंगे? (सभी ने ताली बजाई) देखो, ताली बजाना बहुत सहज है लेकिन क्रोध की ताली नहीं बजे। बापदादा अभी यह बार-बार सुनने नहीं चाहते हैं फिर भी रहम पड़ता है तो सुन लेते हैं। तो अब से यह नहीं कहना कि बाबा वायदा तो किया लेकिन.... फिर-फिर आ गया, क्या करें! चाहते नहीं हैं, आ जाता है। आप ही माया को समझा दो, क्रोध को समझा दो। तो यह पुरूषार्थ भी बाप करे और प्रालब्ध बच्चे लेंगे? यह भी मेहनत बाप करे? तो ऐसा वायदा नहीं करना, जो फिर 5 मास के बाद रिजल्ट देखें। भले आप बताओ नहीं बताओ, बाप के पास तो पहुंचती है। ऐसी रिजल्ट न हो – क्या करें, हो जाता है, सरकमस्टांश ऐसे आते हैं, बात बहुत बड़ी हो गई ना! बाप को भी समझाने की कोशिश करते हैं, बड़े होशियार हैं। कहते हैं बाबा छोटी-मोटी बातें हम पार कर लेते हैं, यह बात ही बड़ी थी ना! अभी दोष किस पर रखा? बात पर। और बात क्या करती है? आई और गई। 5 हजार वर्ष के बाद फिर बात आयेगी। जो 5 हजार वर्ष के बाद बात आनी है, उस पर दोष रख देते हैं। ऐसे नहीं करना। क्या करूं...! यह संकल्प में भी नहीं लाना। बापदादा क्रोध के लिए क्यों विशेष कह रहा है? क्योंकि अगर क्रोध को आपने विदाई दे दी तो इसमें लोभ, इच्छा सब आ जाता। लोभ सिर्फ पैसे और खाने का नहीं होता है, भिन्न-भिन्न प्रकार की, चाहे ज्ञान की, चाहे अज्ञान की कोई भी इच्छा – यह भी लोभ है। तो क्रोध को खत्म करने से लोभ स्वत: खत्म होता जायेगा, अहंकार भी खत्म

हो जायेगा। अभिमान आता है ना – मैं बड़ा, मैं समझदार, मैं जानता हूँ - यह क्या अपने को समझते हैं! तब क्रोध आता है। तो अभिमान और लोभ यह भी साथ-साथ विदाई ले लेंगे। इसीलिए बापदादा विशेष लोभ के लिए न कह करके क्रोध को अन्डरलाइन करा रहा है। तो संस्कार बनायेंगे? अभी सब हाथ उठाओ और सबका फोटो निकालो। (सबने हाथ उठाया) अभी थोड़ी सी मुबारक देते हैं, बहुत नहीं और जब फिर से रिजल्ट देखेंगे फिर वतन के देवतायें भी, स्वर्ग के देवतायें भी आपके ऊपर वाह, वाह के पुष्प गिरायेंगे।

आज से हर एक अपने में देखे – दूसरे का नहीं देखना। दूसरे की यह बातें देखने के लिए मन की आंख बंद करना। यह आंखें तो बंद कर नहीं सकते ना, लेकिन मन की आंख बन्द करना – दूसरा करता है या तीसरा करता है, मुझे नहीं देखना है। बाप इतना भी फोर्स देकर कहते हैं कि अगर कोई विरला महारथी भी कोई ऐसी कमजोरी करे तो भी देखने के लिए और सुनने के लिए मन को अन्तर्मुखी बनाना। हंसी की बात सुनायें – बापदादा आज थोड़ा स्पष्ट सुना रहे हैं, बुरा तो नहीं लगता है। अच्छा–एक और भी स्पष्ट बात सुनाते हैं। बापदादा ने देखा है कि मैजारिटी समय प्रति समय, सदा नहीं कभी-कभी महारथियों की विशेषता को कम देखते और कमजोरी को बहुत गहराई से देखते हैं और फालो करते हैं। एक दो से वर्णन भी करते हैं कि क्या है, सबको देख लिया है। महारथी भी करते हैं, हम तो हैं ही पीछे। अभी महारथी जब बदलेंगे ना तो हम बदल जायेंगे। लेकिन महारथियों की तपस्या, महारथियों के बहुतकाल का पुरूषार्थ उन्हों को एडीशन मार्क्स दिलाकर भी पास विद आनर कर लेती है। आप इसी इन्तजार में रहेंगे कि महारथी बदलेंगे तो हम बदलेंगे तो धोखा खा लेंगे इसलिए मन को अन्तर्मुखी बनाओ। समझा। यह भी बापदादा बहुत सुनते हैं, देख लिया... देख लिया। हमारी भी तो आंखे हैं ना, हमारे भी तो कान हैं ना, हम भी बहुत सुनते हैं। लेकिन महारथियों से इस बात में रीस नहीं करना। अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे। बाप को तरस पड़ता है क्योंकि महारथियों का फाउन्डेशन निश्चय, अटूट-अचल है, उसकी दुआयें एक्स्ट्रा महारथियों को मिलती हैं। इसलिए कभी भी मन की आंख को इस बात के लिए नहीं खोलना। बंद रखो। सुनने के बजाए मन को अन्तर्मुखी रखो। समझा।

आज गर्म-गर्म हलुआ खिलाया है। लेकिन निजी संस्कार बनाओ। मेहनत करते हो, वह भी बापदादा को अच्छा नहीं लगता। बापदादा ने बच्चों का एक वन्डरफुल चित्र देखा। वह चित्र देखेंगे। सुनना चाहते हैं कि बहुत हलुआ खा लिया? कमाल का चित्र है। बापदादा को भी कमाल लगती है। वह चित्र क्या देखा? कि बच्चे कहते एक हैं और करते दूसरा हैं। मुख से कह रहे हैं – हम तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे, राम सीता नहीं, लक्ष्मी-नारायण और करते क्या हैं? कहते तो हैं लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। कहने वालों के मुख में गुलाबजामुन। लेकिन करते क्या हैं? पूछो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे पक्का? कहते हैं हाँ 100 परसेन्ट लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। लेकिन चित्र क्या दिखाते हैं? त्रेता वाले राम के समान युद्ध करते रहते हैं। तीर कमान हाथ में सदा ही है। कहते हैं लक्ष्मी-नारायण बनेंगे लेकिन प्रैक्टिकल में त्रेतायुगी राम समान युद्ध करते रहते हैं। सदा आधा समय युद्ध में, आधा समय योग में। सभी नहीं, लेकिन बहुत हैं। तो बापदादा को यह चित्र देख करके वन्डरफुल चित्र लगता है। जो कहते हो, जो अच्छा-अच्छा सोचते हो वह करना ही है। उसकी सहज विधि सुनाई कि ओरीज्नल निजी संस्कार को इमर्ज करो। संस्कार से स्वत: ही कर्म हो ही जाता है। मेहनत कम सफलता ज्यादा होती है, मेहनत से बच जायेंगे। जैसे आधाकल्प जब विश्व के मालिक बनते हो तो कई प्रकार की मेहनत से स्वत: ही छूट जाते हो। ऐसे इस समय निजी संस्कार बनाने से सहज मेहनत से छूट जायेंगे। समय प्रति समय कमान उठाने की, युद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। निरन्तर योगी, सहज योगी, कर्मयोगी, राजयोगी स्वत: ही बन जायेंगे। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वत: ही होगी। तो ऐसे ही चाहते हो ना?

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारों सबजेक्ट का सार दो शब्द हैं। एक - बाप ही मेरा संसार है। दूसरा - हर गुण, हर शक्ति मेरा निज़ी संस्कार है। तो दो शब्द याद रखना – संसार और संस्कार। मुश्किल है क्या? थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? जब बात आ जाती है फिर तो मुश्किल है? लेकिन बात आपके आगे क्या है? बात बड़ी या बाप बड़ा? कौन बड़ा है? लेकिन उस समय बात बड़ी लगती है। बापदादा के पास ऐसे समय के बच्चों के फोटो बहुत हैं।

म्युज़ियम लगा हुआ है। कभी आना तो देखना। अपना ही फोटो देख लेना। लेकिन अभी समाप्ति समारोह मनाओ। जब आप यह समाप्ति समारोह मनायेंगे तब विश्व परिवर्तन का समारोह आपके सामने आयेगा।

और एक बात सुनायें, सुनने के लिए तैयार हो? बालक मालिक होते हैं ना! तो मालिक से आर्डर लेकर फिर सुनाना होता है। बेहद का हाल है ना। देखो जैसे रूण्ड माला दिखाई है ना। वैसे यहाँ आकर देखो तो रूण्ड माला ही लगती है। सिर्फ आपको फेस दिखाई देगा, बस। तो बेहद के हाल में बापदादा भी आज खुली दिल से बेहद की बातें बता रहे हैं। कल का दिन कौन सा था? (बुद्धवार) तो बुद्धवार की बात है। आज तो सभी रात का खेल देखकर थोड़ा थके हुए थे। थोड़ा सा परेशानी तो हुई ना। (रात को तूफान के साथ बरसात हुई) लेकिन लास्ट समय में तो बहुत कुछ होने वाला है। अगर थोड़ी सी रिहर्सल कर ली तो अच्छा है। थोड़ी रिहर्सल होनी चाहिए। बैग बैगेज समेटना और भागना, दौड़ना – यह तो एक्सरसाइज कराई। वैसे तो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भागती नहीं हैं लेकिन रात को बिस्तर और अटैची लेकर तो भागी। इसलिए यह भी खेल है। एक्सरसाइज तो हो गई ना। टांगे तो चली। यह छोटी-मोटी रिहर्सल तो फाइनल के आगे कुछ भी नहीं है। यह भी अभ्यास होना चाहिए। बापदादा ने कहा है एवररेडी रहो। इसमें भी एवररेडी, बारिस पड़ी सेकण्ड में चल पड़े। कोई डिस्टर्ब हुए? सेकण्ड में सेट हो गये। बापदादा भी समझते हैं जब तक पक्का नहीं बना है तब तक बच्चे कम आवें। लेकिन जितना ही कम कहते हैं उतना ही बढ़ता जाता है। लाल झण्डी दिखाते भी हैं – नहीं आओ, फिर भी आ जाते हो तो देखो खेल। बापदादा को बच्चों का स्नेह देखकर खुशी होती है और सदा यही बच्चों को कहते हैं – आओ बच्चे, आओ। नहीं आओ, कैसे कहेंगे! कह सकते हैं? तो सभी जितने भी आये हो, खुशी से आये हो और खुशी लेकर जाना और टोली के साथ-साथ पहले खुशी बांटना - उसके साथ टोली बांटना। अच्छा।

कल की बात सुनाते हैं। कल वतन में एडवांस पार्टी इमर्ज हुई थी। बापदादा से रूहरिहान कर रहे थे और बापदादा से पूछ रहे थे कि हमें जिस सेवा के अर्थ निमित्त बनाकर भेजा है, वह सेवा कब शुरू होगी? बापदादा ने क्या जवाब

दिया होगा? वह बार-बार यही कह रहे थे कि हमें एडवांस पार्टी में जो जन्म दिलाया है, वह विशेष कार्य के लिए दिलाया है और मैजारिटी अच्छे ते अच्छे योगी तू आत्मायें, ज्ञानी तू आत्मायें, महावीर भी बहुत एडवांस पार्टी में गये हैं और जो दूसरे साथ में गये हैं, उन्हों में भी मैजारिटी ऐसी आत्मायें गई हैं जो स्नेही और गुप्त योगी हैं। मिक्स तो सबमें होते हैं लेकिन आपके हिसाब से जिसको महारथी नहीं कहें, मैजारिटी साधारण कहते हो, वह भी स्नेह के कारण योग में अच्छे पावरफुल रहे हैं। और विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें, योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी। तो वह पूछ रहे थे कि कब हमारी सेवा शुरू होगी? इसमें भी कुछ आत्माओं का, जो गई हैं अलग पार्ट भी है। सभी का एक जैसा नहीं है लेकिन मैजारिटी का नई सृष्टि के स्थापना का पार्ट बना हुआ है। तो रूहरिहान चल रही थी। बापदादा ने तो मुस्कराते हुए उन्हों को दूसरी-दूसरी बातों में बिज़ी कर दिया क्योंकि कब का रेसपान्ड बापदादा को अकेला नहीं करना है, आप सभी को करना है। जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी। इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एक्जैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी को)। है तो सब ड्रामा अनुसार लेकिन कोई विशाल सेवा का एक्जैम्पल भी बनता है। इसलिए क्या करेंगे? जब बापदादा मिले तो सब मन से कहना, कागज का वायदा या मुख का वायदा नहीं, मन से वायदा करके दिखाना कि ''हम सब पुराने संस्कार खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी आत्मायें हैं।'' ठीक है? करेंगे? छोटी-छोटी बातें खत्म करो। ऐसे लगता है जैसे 60 साल का बुजुर्ग और बच्चे माफिक गेंद से खेले। अच्छा नहीं लगता। गेंद क्या, मिट्टी से खेलते हो। देह-अभिमान की मिट्टी से खेलते हो। अभी ज्ञान रत्नों से खेलो, गुणों से खेलो, शक्तियों से खेलो, मिट्टी से नहीं। किसी भी प्रकार का देह-अभिमान, मिट्टी से खेलना है। सुना! वतन का समाचार सुना!

आप सभी की यज्ञ माता, सरस्वती माता उसने विशेष सभी बच्चों को याद-प्यार दिया है। दिया तो सभी ने है लेकिन विशेष यज्ञ माता ने आप सबके लिए बहुत-बहुत दिल से यादप्यार दिया है और यही महामन्त्र याद कराया कि अब घर चलने की तैयारी करो। किनारे सारे छोड़ो, चलो, उड़ो। यज्ञ माता से प्यार है ना! अच्छा।

आज बहुत बातें सुनाई हैं। अभी एक सेकण्ड में एकदम मन और बुद्धि को बिल्कुल प्लेन कर एक बाप से सर्व संबंधों का, बाप ही संसार है – चाहे व्यक्ति संबंध, चाहे प्राप्तियां, यही संसार है .... तो एक ही बाप संसार है, इस बाप की याद में, इस रूप में, इस रस में, इस अनुभव में लवलीन हो जाओ। (बापदादा ने 3 मिनट ड्रिल कराई) अच्छा।

आज टीचर्स भी आई है ना। हाथ उठाओ टीचर्स। जो खास प्रोग्राम प्रमाण भट्ठी में आई हैं वह हाथ उठाओ। विशेष टीचर्स प्रति, बापदादा सदा खुश होते हैं कि चाहे बड़ी, चाहे छोटी लेकिन अपने जीवन के लिए फैंसला करने में बहुत ही अच्छे अपने जज बने हैं, जो फट से अपने जीवन का फैंसला किया कि मुझे यही सेवा की जीवन व्यतीत करनी है। यह वायदा सभी टीचर्स ने किया है ना? या कभी-कभी सोचती हैं कि सोचा नहीं था ऐसा होगा, पहले पता होता तो नहीं करते। ऐसे तो नहीं सोचते? यहाँ एक गीत बजाते हो, बाहर का है या आप लोगों का है, एक गीत बजाते हो उसमें बाप को कहते हो – आपके फूलों से भी प्यार तो कांटों से भी प्यार। यह गाती हो? यह मन में धारणा है? कांटों से प्यार है तो कांटे तो चुभते भी हैं ना। अगर कांटे को प्यार से सम्भाल से उठाओ तो कांटे भी प्यारे लगते हैं और अलबेले पन में कांटे को हाथ लगाओ तो नाराजगी का खून भी निकलता है। तो ऐसे तो नहीं हो ना? आप तो प्यार करने वाले हो ना। छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे कांटे हैं। लेकिन आपको तो कांटों से भी प्यार है क्योंकि कांटे अर्थात् छोटी-छोटी बातें अनुभवी बहुत बनाती हैं।

बापदादा को इस ग्रुप से जो अभी आये हैं और आने वाले भी हैं, उनसे बड़ों से भी ज्यादा प्यार है। क्यों प्यार है? क्योंकि नाम छोटी है लेकिन सेवा बड़ी करते हो। देखो, प्रदर्शनी कौन समझाते हैं, बड़े समझाते हैं या आप समझाती हो? कोर्स कौन कराता है, भाषण अच्छे-अच्छे कौन करता है? आप लोग ही तो करते हो। तो बापदादा, नाम छोटे है लेकिन सेवा में आपको बड़ों

से भी बड़े समझते हैं। सिर्फ घबराना नहीं, घबराना काम कमजोरों का। आप तो बहुत बहादुर हो, महावीर हो, इसीलिए घबराओ नहीं। दिल छोटी कभी नहीं करो, बड़ी दिल। बड़े बाप के बच्चे हैं ना। छोटे बाप के बच्चे हैं क्या! तो छोटी दिल नहीं। न छोटी दिल करो न छोटी-छोटी बातों में घबराओ। सदा यह स्लोगन याद रखो कि देखने में छोटे हैं लेकिन काम बड़ा करके दिखायेंगे। बड़ों के सहयोगी बनेंगे। बड़ों को आंख नहीं दिखायेंगे लेकिन सहयोगी बन विश्व में नाम बाला करेंगे। ऐसी टीचर्स हैं? जो समझती हैं ऐसा ही करते हैं और करेंगे – वह हाथ उठाओ। यह तो बहुत हैं बहादुर। हाथ उठाना बहुत सहज है, देखना! फिर भी बापदादा आपके भाग्य पर खुश होते हैं। आपका भी बाप से बहुत प्यार है ना! तो बाप का भी आपसे बहुत प्यार है, सिर्फ छोटी दिल नहीं करना। कोमल नहीं बनना, महावीर बनना। कभी भी चेहरे पर कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह न हो। निर्माणता अलग चीज है, कोमलता अलग चीज है। निर्माण भले बनो, कोमल नहीं बनो। कोमल कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे लगाओ पानी और बह जाये उसको कहते हैं कोमल। तो कोमल नहीं बनना, कमाल करके दिखाना। बातें तो बड़ों के सामने भी आती हैं, आपके सामने भी आती हैं लेकिन आप और ही ऐसे समझो कि हम एक्जैम्पल बनकर दिखायेंगे। हम ज्ञान और योग में आगे हैं और रहेंगे। बातों की परवाह नहीं करो। कभी भी हर्षितमुख चेहरा बदलना नहीं चाहिए। सदा मन, तन मुस्कराता रहे। समझा! कमाल करके दिखायेंगी? कभी भी मन मुरझाये नहीं, मुस्कराता रहे। हो सकता है?

टीचर्स बोलो–हाँ जी? हाँ जी बोल रही हो या ना जी? मन से बोल रही हो या मुख से? देखो, बापदादा ने विशेष मिलने के लिए प्रोग्राम रखा। तो सदा मुस्कराते रहना तभी आपके पूज्य स्वरूप में यादगार बन जायेगा। सब खुश हैं? बापदादा मिला, बातें की? अभी जो भट्ठी हो उसमें इस ग्रुप की सभी टीचर्स नम्बरवन हो, सेकण्ड नम्बर नहीं हो, सेकण्ड ग्रुप का नाम है, आप सेकण्ड नहीं हो। तो जो सेकण्ड ग्रुप आया है वह सब बात में नम्बरवन हो। अच्छा।

टीचर्स सिकीलधी हैं ना? सेवा तो बहुत करती हैं ना, दिन रात लगी हुई तो हैं। ऐसे ही जो भी यहाँ शान्तिवन में वा मधुबन में, ज्ञान सरोवर में, हॉस्पिटल में, संगम भवन में सेवा पर हैं, सभी तरफ के सेवाधारियों को बापदादा प्यार की मसाज़ कर रहे हैं। जो भी जहाँ सेवा कर रहे हैं, वह सभी अपने को प्यार की

मसाज़ अनुभव करना। नाम कितनों का लेंगे। देखो आप सबकी सेवा है। आप आये तो सेवाधारियों को सेवा का भाग्य दिया। तो पहले तो आप हो। अगर आने वाले आते नहीं तो सेवाधारी किसकी सेवा करते। तो महत्व तो आपका भी है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व बापदादा के लवलीन आत्मायें, सर्व बाप के सेवाधारी आत्मायें, सर्व सहज पुरूषार्थ को अपनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा बाप समान बनने के लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाली, बाप के समीप आत्माओं को बापदादा का बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा–डबल फारेनर्स ठीक हैं? हाथ हिलाओ। बहुत अच्छा–देखो, डबल फारेनर्स हो तो बैठने के लिए भी डबल हाल चाहिए। इसीलिए आपको यह डबल, ट्रिबल हाल में बिठाया है। डबल फारेनर्स को अच्छा लगता है? बापदादा को भी बेहद अच्छी लगती है। लेकिन यह बेहद भी हद हो गई है। अभी से छोटा हो गया है। अभी क्या करेंगी? देखो लास्ट तक फुल बैठे हैं। वृद्धि तो होनी है। अच्छा।

डबल फारेनर्स इस सीजन में खुश हैं? ज्ञान सरोवर में खुश हैं? देखो, डबल फारेनर्स, डबल भाग्यवान हो, सब दादियां आपके लिए ज्ञान सरोवर में आती हैं, आपको आने की मेहनत नहीं करनी पड़ती, वहाँ ही पहुंच जाती हैं। सिकीलधे हो ना। तो सिकीलधे को मेहनत नहीं दी जाती है। तो आपके पास सभी दादियां, दादे आते हैं तो अच्छा लगता है ना। सिर्फ डबल फारेनर्स की सीजन में तो अपने आपको ही देखते हो, कभी भारत वालों को भी तो देखो, इसीलिए अभी मिक्स किया है। अच्छा लगता है मिक्स या अलग? अच्छा। आखिर तो अभी डबल विदेशी हो लेकिन ओरीज्नल तो भारत के हो ना कि विदेश के हो? भारत के हो ना! राज्य कहाँ करेंगे, अमेरिका में, लण्डन में या भारत में? भारत में ही करेंगे ना। इसीलिए भारत और विदेश का संगम है। बापदादा तो आपको इसी रूप में देखते हैं कि आदि भारतवासी हैं और अभी भी भारत में ही रहेंगे, भारतवासी बनेंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।

जगदीश भाई तथा अन्य मुख्य भाईयों से

सेवा में पहला सेवा के निमित्त बनना और सेवा में सरेन्डर होना – ये आपका विशेष पार्ट है। अच्छा है चारों का अपना-अपना पार्ट है। सभी की विशेषता आपनी-अपनी है।

सभी की विशेषता आवश्यक है ना। इनकी विशेषता भी आवश्यक है, आपकी भी आवश्यक है। जैसे बहुत चीजें मिला के अच्छी बन जाती हैं ना टेस्टी, तो ऐसे सभी की विशेषता मिलकर सेवा में टेस्ट आ जाती है।

सभी की विशेषता चाहिए। बहुत अच्छा। दादियों ने कहा और पाण्डवों ने माना – ये बहुत अच्छी बात है, जब भी बुलायें हां-जी, हाँ-जी। आपके संगठन के आधार पर सारा दैवी परिवार चलता है। इसलिए जैसे दादियां निमित्त हैं, वैसे आप भी निमित्त हो। जिम्मेवार हो। हैं या नहीं हैं? सब बात में समझो हम सब सेवा के साथी हैं, यह 10-12 नहीं हैं लेकिन एक हैं, इसमें यज्ञ का शान है। बाप-दादा सभी को एवररेडी देखकर बहुत खुश हैं, कार्य तो बढ़ने ही हैं। कम तो होने नहीं हैं। संगठन की शक्ति बहुत वायुमण्डल को पावर देती है। राइट हैण्ड तो आप लोग हो ना! विशेष राइटहैण्ड हो। ठीक है ना? सोच में तो नहीं हो? नहीं। निमित्त हैं निमित्त बन अंगुली लास्ट तक देनी है। अच्छा।

सब ठीक हैं। सेवा में सफलता है ही ना? वृद्धि भी हो रही है और विधि भी स्पष्ट हो रही है। सहज है ना?

(मोहनी बहन अमेरिका का समाचार सुना रही हैं) दिल का प्यार ले आया है क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना सेवा से प्यार है उतना बाप से भी दिल का प्यार है। तो दिल का प्यार दिल तक पहुंचाता है। बहुत अच्छा किया। यह उड़ती कला की निशानी है। जैसे स्थूल में उड़करके आये ना। तो यह उड़ना, उड़ती कला की विधि को सिद्ध करता है। अच्छी रफतार ठीक है।

वेदान्ती बहन से:- आप छत्रछाया के बीच में हो। सेवा अच्छी चल रही है। डोंट केयर।

सुदेश बहन से:- सभी को प्यार से चलाओ। पहले इन्हों को ठीक करेंगी फिर होगा। पहले इन आत्माओं को पक्का करो और ही एक्स्ट्रा पावरफुल स्टेज से। ठीक।

चक्रधारी बहन से:- रसिया तो अच्छा है। रिजल्ट अच्छी है। धरनी भी अच्छी है। रसिया की धरनी अच्छी है इसीलिए फल जल्दी निकलता है।

जो इस समय शान्तिवन की सेवा में हाजिर हैं वह हाथ उठाओ। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। । अच्छी सेवा कर रहे हो, उमंग और उत्साह से सेवा कर रहे हो और अनेकों की दुआयें प्राप्त कर रहे हो। ऐसे ही सदा सेवा में दुआयें लेते रहना।

अशोक मेहता के बच्चे से:- लक्की है ना? ब्राह्मण परिवार के प्यारे हो। देखो लौकिक परिवार में भी लकी, अलौकिक परिवार में भी लकी। अभी क्या करेगें जाकर? आज क्या पाठ पढ़ा? (गुस्सा कम करेंगे)तो यहाँ गुस्सा छोड़कर जा रहे हो। जब भी गुस्सा आवे ना तो यह हाल इमर्ज करना। बहुत अच्छा। ऐसे ही खिले हुए रूहे गुलाब बनना।

13-11-97

संगमयुग के प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव करो, मास्टर दाता, महा सहयोगी बनो

आज भाग्य विधाता बाप अपने श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य की रेखायें देख-देख भाग्य विधाता बाप भी हर्षित होते हैं क्योंकि सारे कल्प में चक्र लगाओ तो आप जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसी धर्म आत्मा, महान आत्मा, राज्य अधिकारी आत्मा, किसी का भी इतना बड़ा भाग्य नहीं है, जितना आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का है। मस्तक से अपने भाग्य की रेखाओं को देखते हो? बापदादा हर एक बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की श्रेष्ठ रेखा देख रहे हैं। आप सभी भी अपनी रेखायें देख रहे हो? नयनों में देखो तो स्नेह और शक्ति की रेखायें स्पष्ट हैं। मुख में देखो मधुर श्रेष्ठ वाणी की रेखायें चमक रही हैं। होठों पर देखो रूहानी मुस्कान, रूहानी खुशी की झलक की रेखा दिखाई दे रही है। हृदय में देखो वा दिल में देखो तो दिलाराम के लव में लवलीन रहने की रेखा स्पष्ट है। हाथों में देखो दोनों ही हाथ सर्व खजानों से सम्पन्न होने की रेखा देखो, पांवों में देखो हर कदम में पदम की प्राप्ति की रेखा स्पष्ट है। कितना बड़ा भाग्य है!

भाग्य विधाता बाप ने हर एक बच्चे को पुरुषार्थ से, श्रेष्ठ कर्मो की कलम से यह सब रेखायें खींचने की खुली दिल से, खुली छुट्टी दे दी है। जितनी लकीर लम्बी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो, लेकिन समय के अन्दर। जिसको जितनी लम्बी लकीर खींचनी है वह स्वयं ही खींच सकते हो, बाप ने कलम आपके हाथ में दिया है। तो वह लकीर खींचने आती है? खींची है या खींचना नहीं आती है? सभी को आती है? (हाँ जी) बहुत अच्छा। देखो, अभी के तकदीर की लकीर आपको सारे कल्प में भी श्रेष्ठ बनाती है, 21 जन्म तो सदा सम्पन्न और सुखी रहने की रेखा चलती ही है और द्वापर, कलियुग में भी आपके पूज्य बनने की रेखा श्रेष्ठ रहती है। तो इस समय के भाग्य की रेखा सारा कल्प सदा साथ चलती है क्योंकि अविनाशी बाप की अविनाशी रेखा है। तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की रेखा स्मृति में रहती है? रहती तो है लेकिन कभी

इमर्ज रहती है, कभी मर्ज रहती है वा सदा ही इमर्ज रहती है? इसमें कम हाथ उठा रहे हैं। देखना, सदा इमर्ज रहे। इमर्ज रहने की निशानी है कि पुरानी स्मृतियां पुराने संस्कार की रेखायें मर्ज हो जाती हैं। कभी भी पुराने संस्कारों की रेखायें वा पुरानी बातों के स्मृति की रेखायें इमर्ज नहीं हों। मर्ज हों। और मर्ज रहते-रहते समाप्त हो जायें। जहाँ श्रेष्ठ भाग्य की रेखायें इमर्ज हैं, वहाँ पुरानी रेखायें इमर्ज होना असम्भव है। अगर होती हैं तो सिद्ध होता है कि श्रेष्ठ भाग्य की रेखा सदा इमर्ज नहीं रहती। तो क्या समझते हो? इतने श्रेष्ठ भाग्य की रेखायें इमर्ज होनी चाहिए या मर्ज?

बापदादा वर्तमान समय सभी बच्चों को वर्तमान संगमयुग की प्राप्तियों के प्रालब्ध रूप में देखने चाहते हैं। पुरुषार्थ बहुत समय किया, अभी पुरुषार्थ स्वत: चले, मेहनत वाला पुरुषार्थ नहीं। क्या अन्त तक पुरुषार्थ की मेहनत करते रहेंगे? संगमयुग के प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे! भविष्य की प्रालब्ध अलग चीज़ है। वह तो आपकी इस पुरुषार्थ के प्रालब्ध की परछाई है। वह तो आपके पीछे-पीछे आपेही आयेगी। लेकिन विशेष बात है इस समय के प्रालब्ध प्राप्त करने की। ऐसे नहीं – कोई पूछता है कैसे है? क्या हालचाल है? तो अभी तक यही नहीं कहते रहो कि पुरुषार्थ चल रहा है। पुरुषार्थ तो है लेकिन पुरुषार्थ की प्रालब्ध अभी अनुभव करो। वह प्रालब्ध है सर्व शक्ति सम्पन्न, सर्व ज्ञान सम्पन्न, सर्व विघ्न विनाशक मूर्त, यह अभी की प्रालब्ध भविष्य में स्वत: ही प्राप्त होगी। जैसे भविष्य में सिर्फ प्रालब्ध है, पुरुषार्थ समाप्त है। ऐसे अभी बाकी रहे हुए समय में प्रालब्ध स्वरूप का विशेष अनुभव करो। जब प्रालब्ध कहते हैं तो पुरुषार्थ की ही प्रालब्ध होती है। पुरुषार्थ किया है, उस पुरुषार्थ अनुसार ही प्रालब्ध का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन बापदादा बच्चों से क्या चाहते हैं? पूछते हैं ना बापदादा हमसे क्या चाहते हैं? तो बापदादा यही चाहते हैं कि अब थोड़े समय के लिए पुरुषार्थ के प्रालब्ध स्वरूप बन जाओ। बन सकते हो कि पुरुषार्थ की मेहनत अच्छी लगती है? प्रालब्ध वाले बनेंगे? अभी पुरुषार्थ कर रहा हूँ, पुरुषार्थ हो जायेगा, करके दिखायेंगे, यह शब्द समाप्त हों। करके दिखायें क्या, दिखाओ। और कब दिखायेंगे? क्या विनाश के समय दिखायेंगे? इसकी बहुत सहज विधि है कि अब मास्टर दाता बनो। बाप से लिया है और लेते भी रहो लेकिन आत्माओं से

लेने की भावना नहीं रखो – यह कर लें तो ऐसा हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह लेने की भावना है। ऐसा हो तो ऐसा हो। यह लेने की भावनायें हैं। ऐसा हो नहीं, ऐसा करके दिखाना है। हो जाए तो नहीं, लेकिन होना ही है और मुझे करना है। मुझे बायब्रेशन देना है। मुझे रहमदिल बनना है। मुझे गुणों का सहयोग देना है, मुझे शक्तियों का सहयोग देना है। मास्टर दाता बनो। लेना है तो एक बाप से लो। अगर और आत्माओं से भी मिलता है तो बाप का दिया हुआ ही मिलेगा। तो दाता बन फ्राकदिल बनो। देते रहो, देने आता है? या सिर्फ लेने आता है? अब जो जमा किया है वह दो। आपस में ब्राह्मण आत्मायें भी मास्टर दाता बनो। और दे तो मैं दूं, नहीं। मुझे देना है। खजाना है आपके पास? भरपूर है? गुणों से भरपूर है? शक्तियों से भरपूर है? है तो देते क्यों नहीं हो? अपने लिए छिपाकर रखा है क्या? जब खजानों से भरपूर हो तो देते जाओ। यह क्यों करता? यह क्यों कहता? यह सोच नहीं करो। रहमदिल बन अपने गुणों का, अपनी शक्तियों का सहयोग दो – इसको कहा जाता है मास्टर दाता। महा सहयोगी। सहयोगी भी नहीं, महा सहयोगी बनो। महा दाता बनो। तो समझा बापदादा क्या चाहता है?

बापदादा अभी तक बच्चों के पुरुषार्थ की मेहनत देख नहीं सकते। डायमण्ड जुबली समाप्त हुई और डायमण्ड अभी तक बेदाग बनने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। डायमण्ड जुबली अर्थात् हर ब्राह्मण आत्मा (डायमण्ड) चमकता रहे। आप सोचेंगे कि डायमण्ड जुबली हमारी तो थी नहीं, वह तो दादियों की हुई। आपकी हुई या दादियों की हुई, किसकी हुई? यज्ञ के स्थापना के कार्य की डायमण्ड जुबली। सिर्फ दादियों की नहीं, स्थापना के कार्य की डायमण्ड जुबली। तो आप सभी चाहे दो साल के हो, चाहे 12 साल के हो चाहे 50 के हो, लेकिन स्थापना के कार्य के निमित्त तो हो ना या नहीं? निमित्त हो? ब्राह्मण माना ही ब्रह्मा बाप के साथ स्थापना के कार्य के निमित्त आत्मा। वही ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहला सकते हैं। तो ब्रह्माकुमार, कुमारी सभी हो या पुरुषार्थी कुमार कुमारी हो? क्या हो? ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियां अर्थात् जन्म लिया और ब्रह्मा बाप के साथी स्थापना के निमित्त आत्मा बनें। तो ऐसे नहीं सोचना हम तो अभी नये हैं। हम तो अभी छोटे हैं। लेकिन समय के अनुसार जब समय समाप्ति के नजदीक है तो छोटों को, नयों को इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना ही है, अगर

ब्राह्मण हैं तो। अगर क्षत्रिय हैं तो छुट्टी है। लेकिन ब्राह्मण हैं तो ब्राह्मण सो देवता कहा जाता है। क्षत्रिय सो देवता नहीं। तो ब्राह्मण आत्माओं को स्थापना के निमित्त बनना ही है। हैं ही निमित्त। इसलिए अभी मास्टर दाता बनो। दान नहीं करो लेकिन सहयोग दो। ब्राह्मण, ब्राह्मण को दान नहीं कर सकता, सहयोग दे सकता है। तो क्या कहा? महा दाता और महा सहयोगी बनो। अभी एक साल वाला भी है तो भी समय के अनुसार अभी बचपन की बातें समाप्त करो क्योंकि सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। समय की गति प्रमाण, ड्रामा के नियम प्रमाण अभी सभी की वानप्रस्थ अवस्था समीप है।

बापदादा जानते हैं कि बच्चों का बाप से जिगरी स्नेह है। जिगरी स्नेह है ना? या ऊपर-ऊपर का स्नेह है? दिल का स्नेह है तब तो भागकर आये हो ना? देखो बेहद के हाल में, बेहद के बाप के बच्चे, बेहद के रूप में विराजमान हैं। यह हाल अच्छा लगता है ना या दूर लगता है? देखो, बैठने में तो दूर है लेकिन बापदादा अपने दिल की बहुत बड़ी स्क्रीन में आप सब दूर बैठे हुए बच्चों को अति समीप देख रहे हैं। दूर नहीं देख रहे हैं। बापदादा के दिल की स्क्रीन बहुत बड़ी है। अभी तक साइंस वालों ने भी नहीं निकाली है। इसीलिए आप दूर नहीं बैठे हो, बापदादा के दिल में बैठे हो। ऐसे समझते हो? कुर्सी पर बैठे हो, दरी पर बैठे हो या दिल में बैठे हो? दृश्य तो बहुत अच्छा सुन्दर लग रहा है। फुल पीछे तक भरा हुआ है या कुछ खाली है? बापदादा देख रहे हैं - पीछे थोड़ा खाली है।

देखो आप लोगों को बापदादा ने काम दिया था। आप भूल गये होंगे लेकिन बापदादा को याद है। कौन सा काम दिया था? (क्रोध मुक्त का) आज वह नहीं पूछेंगे। पहला चांस लिया है ना तो आज क्रोधमुक्त का पूछेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बापदादा को रिजल्ट पता है। पूछेंगे। आप लोगों से भी वहाँ से रिजल्ट मंगायेंगे। आज छोड़ देते हैं। तो काम दिया था कि 9 लाख तैयार करके दिखाओ। याद है - हर ज़ोन को कहा था। तो किस जोन ने 9 लाख तैयार किये हैं?

बंगाल-बिहार का सेवा का टर्न है। तो बंगाल-बिहार ने 9 लाख तैयार किया है? चुप हैं, बोलते नहीं हैं। चलो एक ज़ोन नहीं, सभी ज़ोन ने, देश विदेश वालों ने मिलकर 9 लाख तैयार किये हैं? विदेश वाले बताओ। 9 लाख हैं?

बापदादा तो अपनी डेट फिक्स करते हैं और उसी फिक्स डेट पर आते हैं। आप भी सब बातों की डेट फिक्स करते हो? यह हाल कब तक बनेगा, फंक्शन कब होगा, यह डेट फिक्स करते हो ना? तो इसकी डेट कौन सी है? फिक्स है? विनाश के इन्ड (अन्त) में या पहले? क्या होगा? क्या सोचा है? कौन सी डेट है? कोई डेट है या अभी फिक्स नहीं किया है? यह भी बाप करे। करना आपको है। बापदादा तो कहेंगे कि शुभ कार्य में देरी नहीं करो फिर क्या करेंगे? चलो, इस सीजन के इन्ड में हो जाए तो भी अच्छा। इतनी हिम्मत है? सिर्फ दाता बन जाओ। अगर दाता बनेंगे तो दाता की भावना से आपकी रॉयल फैमिली और समीप वाली प्रजा बहुत जल्दी बनेंगी। वह लोग तो इन्तजार कर रहे हैं, सिर्फ सदा दाता बनने की देरी है। महान सहयोगी बनने की देरी है। ज्यादा खजाना स्वयं प्रति वा सिर्फ स्वयं की सेवाओं के प्रति लगाते हो। अपने-अपने सेवाओं के ड्युटीज़ में ज्यादा समय लगाते हो। महान दाता बन, बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाओ। विश्व राजा बनना है सिर्फ ज़ोन के वा अपने-अपने ड्युटीज़ के सर्किल के राजा नहीं बनना है। विश्व कल्याणकारी हो। अभी बेहद में जाओ। बेहद में जाने से हदों की बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। मनोबल बहुत श्रेष्ठ बल है, उसको यूज़ नहीं करते हो। वाणी, संबंध, सम्पर्क उससे सेवा में बिजी रहते हो। अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।

आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा है। इसका अभ्यास अभी से करो। चाहे वाणी द्वारा वा संबंध सम्पर्क द्वारा सेवा करते हो लेकिन अब इस मन्सा सेवा का अभ्यास अति आवश्यक है, साथ-साथ अभ्यास करते चलो। समझा क्या करना है? यह मन्सा सेवा वही रंगत दिखायेगी जो स्थापना के आदि में बाप की मन्सा द्वारा रूहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया। और मन्सा सेवा के फल स्वरूप अभी भी देख रहे हो कि वही आत्मायें अब भी फाउण्डेशन हैं। ड्रामा अनुसार यह

बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो कितने पक्के हैं। तो अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित्त बनेंगी। वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे। साक्षात्कार अलग चीज़ है लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे। ऐसा है ना? तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं के आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे। वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ-साथ अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे। इसके लिए यही जो आज सुनाया अभी से प्रालब्ध स्वरूप में स्थित रहो। छोड़ो छोटी-छोटी बातों को, अब ऊंचे जाओ। विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और कराओ। समझा।

अभी सभी अपने अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड में स्थित हो सकते हो? क्योंकि अन्त में एक सेकण्ड की ही सीटी बजने वाली है। तो अभी से अभ्यास करो। बस टिक जाओ। (ड्रिल कराई) अच्छा।

सभी आराम से रह रहे हो? शान्तिवन अच्छा लगता है? सभी को पसन्द है? डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। डबल फारेनर्स को डबल नशा है वा पदमगुणा नशा है? पदमगुणा नशा है वा डबल नशा है? फारेन में तो सुन रहे हैं ना? सभी देशों में सुन रहे हैं? (सेटलाइट-इन्टरनेट द्वारा 50 से भी अधिक देशों में डायरेक्ट बापदादा की मुरली सभी सुन रहे है) देखो फारेन की इन्वेन्शन फारेन में ही पहले काम में आ रही है। बापदादा को खुशी है कि फारेन वाले बापदादा को प्रत्यक्ष करने में सहयोगी बन रहे हैं और आगे भी बनेंगे। दिमाग अच्छा चलाते हैं। इन्वेन्शन अच्छी निकालते हैं इसलिए पहला चांस उन्हों को ही मिला है। तो जो भी अपने-अपने देश में सुन रहे हैं। बापदादा सभी बच्चों को इस हाल में फरिश्तों के रूप में हाजिर नाजिर देख रहे हैं। डबल सभा देख रहे हैं। एक साकार और दूसरी फरिश्तों की सभा। भारत में भी चारों ओर के बच्चे इस समय

फरिश्ते रूप में शान्तिवन में पहुंच गये हैं। तो सभी बच्चों को साकार रूपधारी बच्चों से पहले अखुट यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा देख रहे हैं कि कोने-कोने से बच्चे शान्तिवन निवासी बन अव्यक्त अनुभव कर रहे हैं। बहुत अच्छा साधन मिला है और सदा साधन और साधना दोनों साथ रखना। अच्छा।

सर्व चारों ओर के बच्चों को सदा भाग्य की रेखायें इमर्ज रूप में स्मृति में रखने वाली आत्माओं को, सदा अपने संगमयुगी सर्व प्राप्ति स्वरूप प्रालब्ध को अनुभव करने वाले, सदा मास्टर दाता, महा सहयोगी आत्माओं को, सदा मन्सा सेवा द्वारा विश्व के आत्माओं के कल्याणकारी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

इस्टर्न और तामिलनाडु के सेवाधारियों प्रति -

इस्टर्न ज़ोन वा तामिलनाडु दोनों ने मिलकर अपने उमंग-उत्साह से, एक दो के सहयोग से एक दो को आगे रखते हुए जो पार्ट बजाया वह बहुत अच्छा। यह संगठन बहुत शक्ति देता है। सभी की अंगुली से सेवा की सफलता सहज हो जाती है। तो आप सभी जो भी इस्टर्न वा तामिलनाडु के भाई और बहन सेवा में आये हैं, सभी ने जो सहयोग की शक्ति यूज़ करके सभी को जो शान्ति और शक्ति का अनुभव कराया, स्नेह का अनुभव कराया वह बहुत अच्छा है और आगे भी अच्छा रहेगा। इसलिए सभी की तरफ से बापदादा भी मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। ओम् शान्ति।

28-11-97

बेहद की सेवा का साधन – रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा नज़र से निहाल करना

आज बापदादा अपने अनेक कल्प के मिलन मनाने वाले लाडले, सिकीलधे बच्चों से फिर से मिलन मनाने आये हैं। अव्यक्त मिलन तो सदा मनाते ही हो लेकिन अव्यक्त से व्यक्त रूप में मिलन मनाने के लिए सभी बच्चे भारत वा विदेश से फिर से अपने घर पहुंच गये हैं। बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर बच्चे अपने-अपने स्थान पर भी मिलन मना रहे हैं। यह मिलन रूहानी अलौकिक मिलन है। इस मिलन में बापदादा और बच्चों के स्नेह का साकार स्वरूप है।

आज बापदादा अपने बच्चों की रूहानी पर्सनैलिटी को देख रहे हैं। हर एक बच्चे की रूहानी पर्सनैलिटी कितनी श्रेष्ठ है। ऐसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा बाप है। आप भी अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को जानते हैं ना? सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी की पर्सनैलिटी। नम्बरवार है लेकिन फिर भी विश्व की सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ है। तो बापदादा हर एक के मस्तक से पर्सनैलिटी की झलक देख रहे हैं। प्युरिटी के साथ-साथ सबके चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है। और पर्सनैलिटी क्या होती है? जो खजानों से सम्पन्न होते हैं, उसकी भी पर्सनैलिटी होती है लेकिन कितने भी बड़े-बड़े सम्पन्न आत्मायें हों, आपके आगे वह सम्पन्न आत्मायें भी कुछ नहीं हैं क्योंकि वह भी अविनाशी सुख-शान्ति के खजाने से खाली हैं। आपके पास जो सम्पत्ति है उसके आगे अरब-खरब-पति भी बाप से सुख-शान्ति मांगने वाले हैं और आप सदा अविनाशी खजानों से भरपूर हो। वह खजाने आज हैं कल नहीं लेकिन आपका खजाना न कोई लूट सकता है, न कोई आत्मा खजाने को हिला सकती है। अखुट है, अखण्ड है। ऐसी पर्सनैलिटी वाले आप बच्चे हो। सबसे ऊंचे ते ऊंची पर्सनैलिटी वाले फिर भी आत्माओं द्वारा, विनाशी धन द्वारा, विनाशी आक्यूपेशन द्वारा पर्सनैलिटीज़ बनती हैं वा कहलाई जाती हैं। लेकिन आपको ऊंचे ते ऊंचे परम आत्मा ने श्रेष्ठ पर्सनैलिटी वाले बना दिया।

तो अपने ऊंची पर्सनैलिटी का रूहानी नशा रहता है? रहता है तो हाथ हिलाओ।

बापदादा को इतने श्रेष्ठ पर्सनैलिटी वाले बच्चे देख कितनी खुशी होती है। आपको भी होती है? बापदादा बच्चों की ऐसी श्रेष्ठता को देख क्या गीत गाते हैं, जानते हो? आप भी गाते हैं, बाप भी गाते हैं। बाप का गीत सुनाई देता है या टेप का गीत सुनाई देता है? बापदादा की टेप न्यारी होगी ना, आटोमेटिक है। चलाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती। और दिल का गीत दिल वाले ही सुन सकते हैं। सिर्फ कान वाले नहीं, दिल वाले। तो सभी दिल वाले हो ना? दिलवाला मन्दिर में आपका चित्र है ना? सभी ने अपना चित्र देखा है? बापदादा तो सदा बच्चों के चित्र और चरित्र देखते रहते हैं। तो आज पर्सनैलिटी को देख रहे थे। सदा यह पर्सनैलिटी स्मृति में इमर्ज रहे। है ही, नहीं। है, दिखाई देवे। अनुभव में आये। सदा ऐसी पर्सनैलिटी में रहने वाले की निशानी क्या होगी? जिस निशानी से समझ जाएं कि यह अपने पर्सनैलिटी में है? अगर यह रूहानी पर्सनैलिटी इमर्ज रूप में रहती है तो उनके नयन, उनका चेहरा, चलन, संकल्प और संबंध सब प्रसन्नता वाले होंगे। सदा प्रसन्नचित, प्रश्न चित नहीं, प्रसन्न-चित। अगर प्रश्न चित है तो चलन भी पर्सनैलिटी वाली नहीं। चेहरे पर भी प्रसन्नता की झलक नहीं। कुछ भी हो जाए, पर्सनैलिटी वाले की प्रसन्नता छिप नहीं सकती। मर्ज नहीं हो सकती। प्रसन्नचित आत्मा; कोई कैसी भी आत्मा परेशान हो, अशान्त हो उसको अपने प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न कर देगी। जो बाप का गायन है ''नजर से निहाल करने वाले'', वह सिर्फ बाप का नहीं है आपका भी यही गायन है। और अभी समय प्रमाण जितना समय समीप आ रहा है तो नज़र से निहाल करने की सेवा करने का समय आयेगा। सात दिन का कोर्स नहीं होगा, एक नज़र से प्रसन्नचित हो जायेंगे। दिल की आश आप द्वारा पूर्ण हो जायेगी। तो सभी क्या समझते हो? आदि सेवा के रत्न क्या समझते हैं? ऐसी सेवा कर सकते हो ना?

अभी देखो आप लोगों ने 40 वर्ष सेवा की या ज्यादा भी की, कोई का एक दो साल कम भी होगा, किसका ज्यादा भी होगा। अभी आप लोगों ने अपने साथियों को यह सेवा सिखा दी और निमित्त भी बना दिया। अभी आप क्या करेंगे? वो सेवा तो वह भी कर रहे हैं। आप आदि रत्न हो तो न्यारी और प्यारी सेवा करेंगे ना? अभी फिर उत्सव मनायेंगे कि नज़र से निहाल कितने

किये। 9 लाख में से कितने बनाये? आगे तो 33 करोड़ भी हैं, 9 लाख तो उसके आगे कुछ नहीं हैं। बीज तो यहाँ ही डालना है ना? तो देखेंगे कि आदि सेवा के रत्न अब और क्या कमाल दिखाते हैं। यह कमाल तो दिखाई, सेवाकेन्द्र बनाये, अच्छे-अच्छे प्रोग्राम किये, उसकी तो पदमगुणा मुबारक है। दो प्रकार के बच्चे हैं जो पहले वाले हैं वह हैं स्थापना के निमित्त बच्चे और आप लोग हो विशेष सेवा के आदि के बच्चे। यह (दादियां) हैं जड़ स्थापना वाले और आप सब (सेवा के आदि रत्न) हैं पहला-पहला तना। तो तना तो मजबूत होता है ना। तना पर ही सब आधार होता है। तना से ही सब शाखायें निकलती हैं। जड़ वाले तो सूक्ष्म में शक्ति देते हैं लेकिन जो प्रैक्टिकल में होता है, दिखाई देता है, वह तना दिखाई देता है। तो दादियां अभी गुप्त हो गई हैं, सकाश देने वाली और प्रैक्टिकल में स्टेज पर आने वाले आप निमित्त बनें, (सम्मान समारोह में आई हुई सभी बड़ी बहिनों से बापदादा ने हाथ उठवाया) इसीलिए बापदादा काम दे रहे हैं। समारोह तो बहुत अच्छा मनाया ना। बापदादा ने सब देखा। सजी हुई मूर्तियों को देखा। उस समय तो आप लोगों को भी यही रूहानी अनुभव हो रहा था कि हम चैतन्य मूर्तियां हैं। ऐसे ही लग रहा था जैसे सजी हुई मूर्तियां मन्दिरों से शान्तिवन में पहुंच गई हैं।

तो बापदादा अभी बच्चों से चाहते हैं कि अभी फास्ट सेवा शुरू करो। जो हुआ वह बहुत अच्छा। अब समय प्रमाण औरों को ज्यादा वाणी का चांस दो। अभी औरों को माइक बनाओ, आप माइट बनके सकाश दो। तो आपकी सकाश और उन्हों की वाणी, यह डबल काम करेगी। तब ही 9 लाख सहज बन जायेंगे। अभी आप सभी चाहे फंक्शन में बैठे या और भी महारथी हैं तो महारथियों की अभी सेवा है – सर्व को सकाश देना। बेहद की सेवा के मैदान में आना। जब बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर सकते हैं, कर रहे हैं तो क्या आप एक स्थान पर बैठे बाप समान बेहद की सेवा नहीं कर सकते हो? आदि रत्न अर्थात् फालो फादर। बेहद में सकाश दो। कई बच्चे अपने से भी पूछते हैं और आपस में भी पूछते हैं कि बेहद का वैराग्य कैसे आयेगा? दिखाई तो देता नहीं है, लेकिन बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वत: ही आयेगा क्योंकि यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की

बात – यह सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी कैसे आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही। तो यह बेहद की सेवा इतना बिजी कर देगी जो बेहद का वैराग्य स्वत: ही दिल से आयेगा। प्रोग्राम से नहीं। यह करें, यह करें – यह प्लैन तो बनाते हो, लेकिन बिजी बेहद की सेवा में रहना – यह सबसे सहज साधन है क्योंकि जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले तो ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा। अभी यह नहीं सोचो कि इतने सेन्टर के जिम्मेवार हैं वा ज़ोन के जिम्मेवार हैं! आप सभी को स्टेट के राजा बनना है या विश्व का? क्या बनना है? विश्व का ना? आदि रत्न हो तो विश्व को सकाश देने वाले बनो। अगर 20 सेन्टर, 30 सेन्टर या दो अढ़ाई सौ सेन्टर या जोन, यह बुद्धि में रहेगा तो यह भी तना का काम नहीं है। यह तो टाल टालियां भी कर सकती हैं। आप तो तना हो। तना से सबको सकाश पहुंचती है। आप सभी भी यह सोचते हो कि बेहद का वैराग्य आना चाहिए, यह तो बहुत अच्छा। अभी विनाश हो जाए। लेकिन 9 लाख ही तैयार नहीं किये, तो सतयुग के आदि में आने वाली संख्या ही तैयार नहीं है और विनाश हो गया तो कौन आयेगा? क्या 2-3 हजार पर राज्य करेंगे? 4-5 लाख पर राज्य करेंगे? इसलिए अब बेहद की सेवा का पार्ट आरम्भ करो। पाण्डव क्या समझते हैं? बेहद की सेवा करेंगे ना? पाण्डव तैयार हैं? अभी यह हद की बातें बेहद में जाने से आपेही छूट जायेंगी। छुड़ाने से नहीं छूटेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

बापदादा जानते हैं कि नाज़ुक परिस्थितियों में निमित्त बनी आत्माओं ने सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है। लेकिन आप सभी का फाउण्डेशन वा सेकण्ड का परिवर्तन का मूल अनुभव यही है कि ब्रह्मा बाप को देखा और ब्राह्मण बन गये। सेवा का वरदान मिला और सेवा में लग गये। बापदादा ने सभी के अनुभव भी सुने। अच्छे अनुभव सुनाये। तो जैसे आप लोगों का अनुभव है, ब्रह्मा बाप को देखा और सोचना भी नहीं पड़ा। सहन करने का भी अनुभव नहीं हुआ कि सहन कर रहे हैं। बड़ी बात नहीं लगी। ऐसे अभी हर श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा को देखें और आत्मा में (ब्राह्मण में) ब्रह्मा बाप देखें। यह है सेवा का फास्ट साधन, क्या ब्रह्मा बाप ने आपको कोर्स कराया? कोर्स तो पीछे किया। लेकिन देखा और हो गये।

तो जैसे ब्रह्मा बाप में बाप समाया हुआ था इसीलिए मेहनत नहीं लगी। ऐसे आप सभी भी बापदादा को अपने में समाते हुए नज़र से निहाल करो। जो आप सबका अनुभव है, अनुभवी हो। देखा और फ़िदा हो गये। जैसे अभी सोचते हैं, ट्रेनिंग लेते हैं फिर ट्रायल पर आते हैं, फिर कोई चला जाता है कोई रहता है। इतनी मेहनत आपने ली? ट्रेनिंग की क्या? ट्रायल पर रहे क्या? बस आये और खो गये। ऐसी सेवा जब एक ब्रह्मा बाप ने की तो आप इतने ब्राह्मण आत्मायें नहीं कर सकती हो क्या? आपकी पर्सनैलिटी अपना बना दे। ब्रह्मा बाप की भी पर्सनैलिटी थी ना। चाहे सूरत की, चाहे सीरत की लेकिन पर्सनैलिटी थी तब आकर्षित हुए। तो फालो फादर। जब बाप ने आपको आदि में निमित्त बनाया तो जो आदि के हैं, सेवा के निमित्त वा स्थापना के फाउण्डेशन उनको अन्त तक सेवा में रहना ही है। तबियत के कारण शरीर से चक्कर नहीं लगा सकते लेकिन मन से तो लगा सकते हो? उसमें तो खर्चा भी नहीं, बीजा लेने की भी जरूरत नहीं। भाग दौड़ की भी जरूरत नहीं। लेटे-लेटे भी कर सकते हो। क्या समझते हो? अब ऐसा कोई प्लैन बनाओ। नया पाठ शुरू करो। अभी एक फंक्शन तो मना लिया ना। जो सेवा की उसका प्रत्यक्ष फल मिल गया। अभी नई सेवा करो। अच्छा।

बापदादा सिर्फ सामने वालों को नहीं कह रहे हैं, सभी बच्चों को कह रहे हैं। विदेश में भी जो सुन रहे हैं उन्हों को भी कह रहे हैं। जहाँ भी सुन रहे हैं, चाहे शान्तिवन में सुन रहे हैं, चाहे ऊपर पाण्डव भवन में, चाहे विदेश में, जहाँ भी हैं वहाँ बापदादा सभी के लिए कह रहे हैं। अब बेहद के सेवाधारी बनो। समय बेहद की सेवा में लगाओ। बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं वा दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमजोर आत्मायें हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो और उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या के वश आत्मायें चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमजोर हैं, शक्ति नहीं है, तो वह कहाँ से शक्ति लायें? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकता क्योंकि कमजोर आत्मा है। तो क्या करेंगे? कमजोर आत्मा को दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते

हैं तो आप सबमें शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना – दाता बनो। वह असमर्थ हैं, उन्हों को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज राकेट हैं। आपको पुरुषार्थ में समय भी देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना – वह सीखो और सिखाओ। अपना नेचरल अटेन्शन और दुआयें, अटेन्शन भी टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नेचरल हो। नॉलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वत: सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसीलिए कहा कि पर्सनैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित। यह क्यों, क्या, कैसे। यह के के की भाषा समाप्त। दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें – इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो। यह ऐसा, यह वैसा – ऐसा नहीं। सब अच्छा। यह हो सकता है? दुआयें देने आती हैं? लेने तो आती हैं, देने भी आती हैं? देंगे नहीं तो लेंगे कैसे? दो और लो। यह करे नहीं, मैं करूं। ब्रह्मा बाप का सदा स्लोगन रहा, ब्रह्मा बाप बार-बार याद दिलाते रहे - जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। जब दूसरे करेंगे तब मैं करूंगा .... यह स्लोगन नहीं। जो मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे। नहीं तो स्लोगन चेंज कर दो और जगदम्बा माँ का विशेष स्लोगन रहा – हुक्मी हुक्म चला रहा है। वह चला रहा है, हम निमित्त बन चल रहे हैं। तो दोनों स्लोगन सदा याद रखो, इमर्ज। है ही, सुना है ... याद तो रहता है...., नहीं। कर्म में दिखाई दे। तो क्या करेंगे? दुआयें लेंगे, दुआयें देंगे कि ग्लानी करेंगे, फील करेंगे – यह ऐसा, यह वैसा? नहीं। उसको दुआयें दो। कमजोर है, वशीभूत है। भाषा और संकल्प बदली करो। यह संकल्प मात्र भी न हो कि यह बदले, नहीं। मैं बदलूं। और बातों में तो मैं मैं का आता है लेकिन जिस बात में मैं आना चाहिए, उसमें और करे तो करें, यह क्या? अच्छा काम होगा तो कहेंगे मैं। और ऐसा कोई काम होगा तो कहेंगे इसने किया, इसने कहा। उल्टा हो गया ना। कोई क्या भी करता है, मुझे क्या करना है, मुझे क्या सोचना है, मुझे क्या कहना है, इसमें मैं-पन लाओ। बॉडी कान्सेस वाला मैं नहीं, सेवा का मैं। तो ऐसे ही श्रेष्ठ

वायब्रेशन फैलाओ। अभी वाणी कम काम करती है, दिल का सहयोग, दिल के वायब्रेशन बहुत जल्दी काम कर सकते हैं। तो यह हो सकता है?

अगर हो सकता है तो शुभ कार्य में देरी क्यों? अब से हो सकता है? पाण्डव सुनाओ। फिर वहाँ जाकर नहीं बदल जाना। वहाँ जाकर कहेंगे – बापदादा तो कहते हैं लेकिन साकार में तो हम हैं ना। बापदादा को क्या पता, क्या होता है। ऐसे नहीं कहना। मातायें क्या कहेंगी? बापदादा बच्चों को सम्भाले तो पता पड़े, ऐसे सोचेंगी? बापदादा ने आप बड़ों को सम्भाला, छोटे क्या बड़ी बात हैं। तो वहाँ जाकर बदल नहीं जाना। आप लोगों का एक गीत है ना – बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम। यह गीत पक्का है, राइट है? अगर ठीक है तो हाथ उठाओ। फिर तो आपकी जो 21वीं सेंचुरी की कान्फ्रेन्स है ना वह प्रैक्टिकल हो जायेगी। ठीक है ना! प्रैक्टिकल में सृष्टि को नक्शा दिखाओ। यह होगा, होगा नहीं, हो गया है। क्या हुआ? अगर मानों आपने ग्लानी या डिस्ट्रबेन्श सहन भी कर लिया, समा भी लिया तो आपका सहन करना, समाना, आपके लिए अपनी राजधानी निश्चित होना। आपको क्या नुकसान हुआ? फायदा ही हुआ। देखने में आता है - बड़ा मुश्किल है। बात बहुत बड़ी है लेकिन आपने सहन किया, समाया और आपका स्टैम्प लग गया, आपकी राजधानी बन गई। तो फायदा हुआ या नुकसान हुआ?

अभी इस सीज़न में बापदादा ऐसा चारों ओर का स्वरूप देखने चाहते हैं। हर सीजन में वही बातें सुनना अच्छा नहीं लगता। वही कथायें, कथायें, कथायें... तो बापदादा भी बच्चों से प्रश्न करते हैं कि आखिर यह बातें कब तक? या तो समय बता दो कि एक साल और चाहिए, दो साल और चाहिए। इसकी भी डेट तो फिक्स करो। फंक्शन की डेट तो जल्दी फिक्स हो गई। सभी के फंक्शन की डेट फिक्स कर ली है, इस फंक्शन की डेट कौन सी है?

सभी दूर-दूर से प्यार से आये हैं। बापदादा विदेश को भी देख रहा है। भिन्न टाइम होते भी बहुत प्यार से समय देकर सुन रहे हैं। (विदेश में 200 स्थानों पर सैटलाइट द्वारा मुरली सुन रहे हैं) देखो यह भी फास्ट गति है ना। यहाँ का आवाज विदेश में 200 स्थान पर पहुंच रहा है, यह भी आवाज की गति फास्ट है ना। यह भी इन्वेन्शन है ना। तो आप साइलेन्स के पावर की गति फास्ट नहीं कर सकते हो? साइन्स ने भारत का आवाज विदेश तक पहुंचाया और आप

अपने दिल की शुभ भावनायें आत्माओं को नहीं पहुंचा सकते हो! पहुंचा सकते हैं ना? नहीं तो साइन्स आगे चली जायेगी, साइलेन्स की पावर थोड़ा कम दिखाई देगी। इसलिए साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। सभी में है। एक ब्राह्मण भी नहीं है जो कहे कि मेरे में साइलेन्स की शक्ति नहीं है। सभी में है, कितने ब्राह्मण हैं? इतने ब्राह्मणों की सकाश क्या नहीं कर सकती? सभी में साइलेन्स की शक्ति है? तो अभी एक मिनट में सभी अपने साइलेन्स की शक्ति इमर्ज करो। एकदम साइलेन्स मन से, तन से इमर्ज करो। **(बापदादा ने डेड साइलेन्स की ड्रिल करवाई)**

अच्छा। चारों ओर के सर्व विशेष आत्माओं को सदा रूहानी पर्सनैलिटी के नशे में रहने वाली आत्माओं को, सदा बेहद की सेवा में स्वयं को बिजी रखने वाली निमित्त विश्व कल्याणकारी आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप और जगदम्बा का स्लोगन साकार में लाने वाली, ऊंच ते ऊंच नज़र से निहाल करने की सेवा में सदा रहने वाली बाप समान आत्माओं को बापदादा और जगदम्बा माँ का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों तथा बड़े भाईयों से

सभी का दिल का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। अभी दिल का उमंग-उत्साह इमर्ज करना है। संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे करते हैं। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में समाने की शक्ति और कल्याण की भावना इसको इमर्ज करना पड़ेगा, तभी संकल्प साकार में होंगे। यह बातें तो एक सागर की लहरे हैं, लहरों को क्या देखना। वह तो अभी-अभी उठती हैं अभी-अभी मर्ज हो जाती हैं। लेकिन सागर समान समाने की शक्ति, साइलेन्स की पावर की शक्ति रत्न पैदा करेगी। तो अच्छा है। अभी आप लोगों की सकाश चाहिए। कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। तो आपका पुरुषार्थ स्वत: ही जमा होता जायेगा। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है। सैलवेशन लेना नहीं है, सैलवेशन देना है। देने में लेना समाया हुआ है। ठीक है ना। फाउण्डेशन तो पक्का है। बापदादा की सकाश तो है ही। अभी आप आत्माओं के सकाश की आवश्यकता है। बाप की डायरेक्ट इतनी पावर लेने की हिम्मत

नहीं है, बाप तो दे रहे हैं लेकिन कमजोर आत्मा ले नहीं पाती है, उन्हों को आप लोगों का सहयोग चाहिए। बस पाठ पक्का कर लो – आज के दिन कितनी आत्माओं को नि:स्वार्थ सहयोग दिया। आप देना शुरू करेंगे, करते भी हो लेकिन और अन्डरलाइन। तो सबके पास वह लहर फैलेगी।

(भूपाल भाई से)– शान्तिवन कितना बड़ा हो गया। अब सारे भारत के सेवाकेन्द्रों से, पाण्डव भवन से, ज्ञान सरोवर से, चारों ओर से शान्तिवन बड़ा हो गया है। तो बड़ी दिल। अच्छा है, मेहनत भी अच्छी कर रहे हैं।

अभी यू.पी. का टर्न है ना। यू.पी. वाले हाथ उठाओ, जो सेवा में हैं खड़े हो जाओ। बहुत अच्छा। सेवा का प्रत्यक्ष फल है खुशी। तो खुशी हो रही है ना? यह प्रत्यक्ष फल अविनाशी रहे। सभी अच्छे सेवा का सबूत दे रहे हैं इसीलिए बापदादा कहते हैं सबूत देने वाले सपूत बच्चे। तो कितनों की दुआयें ली? दिल से सेवा करना अर्थात् दुआओं का दरवाजा खुलना। तो सेवा की अर्थात् दुआयें ली। तो दुआयें जमा करते जाओ। अच्छा।

आदि रत्न भी अच्छा सबूत दे रहे हैं। मधुबन वाले भी सेवा में अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। मधुबन वाले तो सदा बापदादा के साथ का अनुभव सहज करने वाले हैं। मधुबन अर्थात् मधुबन का बाबा। तो मधुबन वाले सदा बाप के साथ हैं। सेवा के लिए बापदादा सदा दिल से दुआयें देते हैं। हर एक बच्चों की सेवा बापदादा सदा देखते हैं। हर एक सेन्टर की सेवा का रिकार्ड बापदादा के पास रहता है। मधुबन का अपना, विदेश का अपना, भारत का अपना, बापदादा तो गीता पाठशालायें भी देखते हैं। आप लोग तो दो चार पांच जगह में चक्कर लगाते हो, बापदादा तो गीता पाठशाला का भी चक्कर लगाते हैं। अच्छा गीता पाठशाला वाले उठो, खड़े हो जाओ। मुबारक हो। तीन पैर देकर तीनों लोकों के मालिक बन गये। चतुर निकले ना। दिया तीन पैर और लिया तीन लोक। बापदादा तो आपकी गीता पाठशालायें, क्लासेज़ का भी चक्कर लगाते हैं। दादियों को टाइम नहीं मिलता है ना इसीलिए बापदादा चक्र लगाते हैं। इसलिए तो अव्यक्त बने हैं ना। (दादी जी से) आपका काम भी अभी अव्यक्त रूप में बापदादा करता है।

बापदादा सब नोट करते हैं, गीता पाठशाला वाले, क्लास कराने वाले किस विधि से चलते हैं, किस विधि से सोते हैं, किस विधि से खाते-पीते हैं, सब नोट

करता है। कहाँ-कहाँ ठीक नहीं होता है। गीता पाठशाला या कहाँ भी सेवा करने वाले हैं, वह स्थान विधि पूर्वक हो, स्वच्छ और मर्यादा पूर्वक भी हो। और जो भी दिनचर्या है, वह ब्राह्मण जीवन के नियम प्रमाण हो, ऐसे चलाओ नहीं, चलता है ....। बापदादा ज्यादा कहते नहीं हैं, समझते हैं थोड़ा मुश्किल लगेगा, इसीलिए कुछ बातें तो छोड़ देते हैं। छोड़ना चाहिए नहीं लेकिन छोड़ देते हैं। ऐसे कभी नहीं समझना कि कौन देखता है, फिर भी हिम्मत रखकर प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बने हैं, यह बापदादा को देखकर खुशी होती है। बाकी चेक करना यह आपका काम है। बाप नहीं कहेंगे, आपका काम है। अगर बाप कहेंगे या दादियां कहेंगी ना तो चार-चार पेज का पत्र आयेगा, ऐसा है, ऐसा है... इसलिए बापदादा कहते नहीं हैं। इशारा देते हैं कि मर्यादापूर्वक अपने आपको चेक करो और चेंज करो। अच्छा। सभी एक दो से प्यारे हो ऐसे नहीं जो आगे बैठे हैं वह प्यारे हैं। आप उन्हों से भी प्यारे हो। अच्छा–ओम् शान्ति।

14-12-97

व्यर्थ और निगेटिव को अवाइड कर अवार्ड लेने के पात्र बनो

आज बापदादा अपने परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को देख रहे हैं। परमात्म प्यार आनंदमय झूला है जिस सुखदाई झूले में सदा झूलते रहते हैं। परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दु:खों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता है। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न है, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता है। ऐसे श्रेष्ठ परमात्म प्यार के आप कितनी थोड़ी सी आत्मायें पात्र हो। ऐसी श्रेष्ठ पात्र आत्माओं को बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। जैसे बाप हर्षित होते हैं वैसे बच्चे भी हर्षित होते हैं लेकिन नम्बरवार। बापदादा तो यही हर बच्चे को दिल से वरदान देते हैं कि सदा परमात्म प्यार के झूले में झूलने वाले अविनाशी रत्न भव। इस प्यार के झूले से मन रूपी पांव नीचे नहीं करो क्योंकि सारे विश्व की आत्माओं से परम आत्मा के लाडले हो, प्यारे हो। तो बापदादा यही बच्चों को दुआयें देते हैं इसी परमात्म प्यार में लवलीन रहो। ऐसे लवलीन आत्माओं के पास कोई भी पर-स्थिति वा माया की हलचल आ नहीं सकती। नीचे पांव रखते हो तो माया भी भिन्न-भिन्न खेल खेलने आती है, भिन्न-भिन्न रूप धारण कर आकर्षित करती है। लवलीन आत्माओं के सर्व शक्तियों के आगे माया आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देता है। तो आप सब जो विशेष आत्मायें हो, सभी ब्राह्मणों को बापदादा द्वारा जन्मते ही तीसरा नेत्र मिला हुआ है। लेकिन बाप देखते हैं कभी-कभी बच्चों का तीसरा नेत्र बहुत मेहनत का पुरुषार्थ करते-करते थक जाता है और थकने के कारण बंद हो जाता है। माया को भी देखने की आंख बहुत दूरादेशी वाली है, दूर से देख लेती है। अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया, इसलिए माया से घबराओ नहीं। खुशी-खुशी से, सर्व शक्तियों के आधार से उनको विदाई दो। आने का चांस नहीं दो, विदाई दो। वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते-करते थक गई है। आप खुद कमजोरी के कारण माया का आह्वान करते हो, वह थक गई है लेकिन आप आह्वान करते हो तो वह भी चांस ले लेती है। अभी शक्तिहीन हो गई है। आप सबका अनुभव क्या कहता है? अभी माया में

पहले जैसी शक्ति है? उसमें शक्ति है या आप शक्तिशाली हो? वह ट्रायल तो करेगी क्योंकि आप ही आह्वान करते हो तो वह चांस क्यों नहीं देगी। कमजोर बनते क्यों हो? बाप का यह क्वेश्चन है कि मास्टर सर्वशक्तिवान हो या नहीं? सभी मास्टर सर्वशक्तिवान हो? कभी-कभी सर्वशक्तिवान हो या सदा सर्वशक्तिवान हो? क्या हो? सदा शक्तिशाली हो? तो माया को कह दें कि अभी जाओ? आप उसे नहीं बुलाना। बाप माया को कहते हैं अभी समाप्त करो। तो माया बाप को कहती है कि मुझे आह्वान करते हैं। तो बाप क्या करे? अगर किसी भी प्रकार की कमजोरी चाहे मन में, चाहे वचन में, चाहे संबंध-सम्पर्क में आती है तो समझो माया को आह्वान किया। उसको भी आह्वान का वायब्रेशन बहुत जल्दी पहुंचता है।

यह महा उत्सव तो बहुत अच्छे मना रहे हो। लेकिन उत्साह सदा रहे इसलिए उत्सव मना रहे हो। इस वर्ष बहुत उत्सव मना रहे हो ना? (इस ग्रुप में ईश्वरीय सेवा के आदि रत्न भाईयों का सम्मान समारोह तथा टीचर्स बहिनों की सिल्वर जुबली का कार्यक्रम रखा गया है) हर ग्रुप में उत्सव मना रहे हैं तो बाप समझते हैं कि यह वर्ष उत्सव मनाना अर्थात् माया को विदाई देना। ऐसे नहीं गोल्डन चुन्नी पहनकर बैठ जाओ, गोल्डन चुन्नी पहनना माना गोल्डन एजड बनना। दृश्य तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन सदा गोल्डन स्थिति की चुन्नी वा दुपट्टा पड़ा रहे। ऐसे नहीं दुपट्टा उतरा, उत्सव पूरा हुआ और जैसे थे वैसे रहे। यह उत्साह दिलाने का फंक्शन है। तो जिन्होंने उत्सव मनाया है या मनाने के लिए आये हैं वह हाथ उठाओ। बापदादा खुश है। खूब मनाओ लेकिन मनाना अर्थात् बनना और बनाना। उत्सव मनाने समय अपने आपको अन्डरलाइन करो सदा याद और सेवा के उत्साह में रहने वाली आत्मा हूँ। बापदादा को भी दृश्य अच्छा लगता है। तो यह वर्ष बापदादा माया को विदाई देने का वर्ष मनाने चाहते हैं। तो ऐसा उत्सव मनायेंगे ना? कल जो मनायेंगे, ऐसा ही मनायेंगे ना? सिल्वर जुबली मनायेंगे ना? गोल्डन जुबली हो, सिल्वर जुबली हो लेकिन है तो उत्सव ना! ऐसे नहीं सोचना कि हम तो सिल्वर जुबली वाले हैं, पहले गोल्डन वाले बनें फिर हम बनें। ऐसे नहीं सोचना। और जिन्होंने नहीं भी मनाया है, वह भी ऐसे नहीं समझना कि जो उत्सव मनाने वाले हैं उन्हों के लिए बापदादा कह रहे हैं। सभी के लिए कह रहे हैं। ब्राह्मण जीवन का उत्सव तो मनाया है ना! ब्राह्मण तो

सभी बन गये या ब्राह्मण भी बन रहे हैं? बन गये हैं। तो ब्राह्मण जन्म का उत्सव मनाने वाली आत्मायें अर्थात् सदा उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह में लाना। यही ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है। वह ब्राह्मण तो मुख से कथा करते हैं, आप ब्राह्मण मुख से भी बोलते तो उत्साह दिलाने के लिए बोलते हैं। कैसी भी आत्मा हो चाहे आपके विरोधी आत्मा हो, क्योंकि हिसाब-किताब भी यहाँ ही चुक्तू होना है। लेकिन कैसी भी आत्मा हो ब्राह्मणों का काम है उत्साह भरी कहानी सुनाना। उत्साह की बातें सुनाना। वह रोता हो, आप उन्हें उत्साह में नचा दो। जब कोई दिल में उत्साह होता है तो क्या होता है? पांव नाचने लगते हैं। जैसे यह फंक्शन करते हो ना। तो लास्ट में क्या करते हो? सब डांस करते हैं ना। यह तो पांव की डांस है। ब्राह्मण आत्मा सिवाए उत्साह दिलाने और उत्साह में रहने के बिना रह नहीं सकती। उत्साह मिटाने वाली बातें होती हैं और होंगी लेकिन बापदादा इस वर्ष में यही सब बच्चों से शुभ आश रखते हैं कि बीती सो बीती, आज तक जो भी कैसी भी आत्मायें संबंध-सम्पर्क में रही हैं, जैसी भी हैं, चाहे निगेटिव भी हैं, सामना करने वाली भी हैं, ब्राह्मण जीवन को हिलाने वाली भी हैं लेकिन इस वर्ष में निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण समाप्त करो। स्नेह दो, शक्ति दो। अगर स्नेह नहीं दे सकते, शक्ति नहीं दे सकते तो देखते, सुनते, सम्पर्क में आते वेस्ट और निगेटिव बातों को दिल में धारण करने में अवाइड करो। मन और बुद्धि में धारण नहीं हो, अवाइड करो। परिवर्तन करो। निगेटिव को वा वेस्ट को परिवर्तन करके दिल में समाओ। ऐसे दोनों बातों को जो अवाइड करेगा उसको बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बहुत अच्छे ते अच्छा, बड़े ते बड़ा अवार्ड मिलेगा। और आत्माओं को तो अवार्ड देने वाली आत्मायें होती हैं। अवार्ड मिलता है ना? तो यह परमात्म अवार्ड है। अवाइड करो, अवार्ड लो। हिम्मत है? अच्छा।

पाण्डवों ने जिन्होंने फंक्शन मनाया, उन्हों में हिम्मत है? अवार्ड लेंगे? सभी ने हाथ उठाया, आज की डेट अन्डरलाइन करना। आज कौन सी डेट है? (14 दिसम्बर) तो हर मास की 14 तारीख अपने को चेक करना। अच्छा - सिल्वर जुबली वाले जो समझते हैं अवार्ड लेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसे देखा-देखी नहीं उठाओ। शर्म के कारण नहीं उठाओ। बापदादा चांस देते हैं, अगर कोई में हिम्मत नहीं है तो नहीं उठाओ, कोई हर्जा नहीं। बापदादा और सकाश देगा,

ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसे कोई हैं जो समझते हैं और थोड़ी हिम्मत चाहिए? कोई सिल्वर जुबली वाली टीचर्स ऐसी हैं? चलो यहाँ हाथ नहीं उठाओ, शर्म आता हो तो लिखकर देना। जब फंक्शन मनाओ तब देना, समझते हो हमको एक्स्ट्रा हिम्मत चाहिए, तो उसके लिए विशेष ट्युशन रखेंगे। जो पढ़ाई में कमजोर होता है तो क्या करते हैं? ट्युशन रखते हैं ना? अच्छा। मधुबन वाले हाथ उठाओ। खड़े हो जाओ। मधुबन वाले चांस अच्छा लेते हैं। अच्छा – मधुबन वाले अवार्ड लेंगे? सभी ने उठाया? ट्युशन नहीं चाहिए? बहादुर हैं। अच्छा - बापदादा हिसाब लेंगे। मुबारक हो मधुबन वालों को।

बाकी जो कोने-कोने से स्नेही, सहयोगी, संबंध में रहने वाले नये पुराने बच्चे आये हैं, उन्हों को विशेष बापदादा एक तो आने की मुबारक देते हैं, दूसरा मर्यादा में चलने की भी मुबारक देते हैं। कम से कम एक साल तो नये भी मर्यादापूर्वक चले हैं तब यहाँ पहुंचे हैं। कोई चतुर भी होंगे लेकिन मैजारिटी तो मर्यादा को पालन करने वाले हैं। तो प्रवृत्ति में रहते मर्यादा में चलने वाली, मर्यादा रखने वाली आत्माओं को मर्यादा की भी मुबारक है।

अच्छा – मातायें हिम्मत रखती हो कि हम माया को विदाई देंगे? अगर हाँ तो एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा - प्रवृत्ति वाले पाण्डव, हिम्मत है? अवार्ड लेना है? एक हाथ की ताली बजाओ। बापदादा को भी खुशी होती है, देखो बेहद का हाल, बेहद का नशा चढ़ाता है ना। आराम से बैठने की जगह तो है ना? अभी आपका उल्हना होगा कि दूर से देख नहीं सकते हैं। लेकिन अभी तो फिर भी आप बहुत आराम से बैठकर सुन तो सकते, टी.वी. में देख तो सकते। जब 9 लाख तैयार करेंगे तो क्या होगा? फिर बैठने की जगह मिलेगी? इसीलिए जो जितना पहले आया वह भाग्यवान है। तो जैसे अभी आप लोग अपने से पहले वालों का भाग्य गाते हो कि आप बहुत अच्छे हैं। ऐसे बापदादा कहते हैं कि अभी जो आप आये हो ना, उन्हों को भी पीछे वाले कहेंगे, आप बहुत भाग्यवान हैं। वृद्धि तो होनी है ना? नहीं तो राजधानी कैसे बनेगी?

तो यह वर्ष विदाई और बधाई का है और इस वर्ष में विशेष जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करने वालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद भी मिलेगी। सिर्फ दृढ़ रहना। बीच-बीच में ड्रामा पेपर लेगा लेकिन संकल्प में

दृढ़ रहना, संकल्प रूपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, निर्भय बनो। ब्राह्मण आपस में सम्बन्ध में निर्भय नहीं बनना, माया से निर्भय बनो। संबंध में

तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ। जिसको कहा जाता है कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ।

बापदादा को एक बात पर कभी-कभी हंसी आती है। पता है कौन सी बात? जानते हो? एक तरफ तो चैलेन्ज करते हैं - बाबा हम प्रकृति जीत बनेंगे। प्रकृति को भी परिवर्तन करेंगे, यह कहते हो ना? प्रकृति को बदलेंगे ना? ऐसी चैलेन्ज करने वाले प्रकृति को परिवर्तन कर सकते हैं। लेकिन जब सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई बातें होती हैं तो उसको समाधान नहीं कर सकते। परिवर्तन नहीं कर सकते। हंसी की बात है ना – प्रकृति जड़ है उसके लिए तो चैलेन्ज है लेकिन ब्राह्मण आत्माओं को परिवर्तन करना, वह नहीं होता है। और फिर क्या सोचते हैं? वह हो नहीं सकता, यह होना ही नहीं है। हो ही नहीं सकता, बदल ही नहीं सकता। तो प्रकृति को कैसे बदलेंगे? खुद बदलकर औरों को बदलो। चलो वह रांग है, 100 परसेन्ट रांग है। लेकिन आपका वायदा क्या है? बाप से क्या वायदा किया है? स्व परिवर्तन से विश्व का परिवर्तन करेंगे? यह वायदा है या भूल गये हैं? हाँ तो सब करते हो। कैसी भी बातें हों, बातों को बदलने के लिए मदद भले लो लेकिन यह बदलना ही मुश्किल है, यह सर्टीफिकेट नहीं दो। किसने आपको अथॉरिटी दी है सर्टीफिकेट देने की? तो यह सोचना कि यह तो होना ही नहीं है, यह तो ठीक होगा ही नहीं। किसने आपको जज बनाया? ऐसे ही जज की कुर्सी पर बैठ जाते हो? या तो वकील बनते, बहुत कायदे कानून बताते, बहस करते, ऐसा नहीं ऐसा। ऐसा नहीं ऐसा। न वकील बनो, न जज बनो। यह अथॉरिटी बापदादा ने दी नहीं है, जो निमित्त हैं उनका सहयोग लो। वह निमित्त आत्मायें भी बापदादा की राय से करती हैं। अपनी मनमत नहीं चलाती हैं।

तो इस वर्ष में यह सब बातें समाप्त करो अर्थात् मन से परिवर्तन करो, अवाइड करो, ऊपर पहुंचाया, जिम्मेवारी खत्म। आपसे परिवर्तन नहीं होता तो निमित्त आत्माओं तक पहुंचाना यह आपका फ़र्ज है। फिर खुद लॉ हाथ में नहीं उठाओ, तभी अवार्ड के पात्र बनेंगे। तो सदा उत्साह में रहो और उत्साह बढ़ाओ, यही स्मृति में बापदादा इमर्ज कर रहे हैं। जब स्वयं उत्साह में रहेंगे तो सभी को हाथ में हाथ अर्थात् मन के स्नेह का हाथ में हाथ ले नाचेंगे, खुश

रहेंगे। स्थूल हाथ नहीं, मन से स्नेह के सहयोग का हाथ। इसको ही हाथ में हाथ मिलाना कहा जाता है। स्नेह क्या नहीं कर सकता और यह परमात्म स्नेह है, परमात्म प्यार है। वह क्या नहीं कर सकता! असम्भव ब्राह्मण डिक्शनरी में है ही नहीं। उत्साह वाला कभी भी किसी भी बात में निराश, दिलशिकस्त नहीं होता।

तो यह पाण्डव जो विशेष उत्सव मना रहे हैं, वह क्या करेंगे? हर एक पाण्डव यह दृढ़ संकल्प करो कि मुझे परिवर्तन करने की जिम्मेवारी है क्योंकि आदि पालना वाले हो ना? तो ब्रह्मा बाप ने क्या किया? जिम्मेवारी उठाई ना? या कहा यह तो बदलना ही नहीं है? यह तो होना ही नहीं है? नहीं। इतनी आत्माओं का परिवर्तन करके दिखाया ना? चलो दूसरों को नहीं देखो, अपने को तो देख सकते हो, आपका परिवर्तन तो किया? या आपकी कमजोरियां देखी? नहीं देखी। तो ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले निमित्त हो, फॉलो ब्रह्मा को करने के लिए। इसमें ऐसे नहीं समझो - यह तो बड़ों की जिम्मेवारी है, हम तो डायरेक्शन पर चलने वाले हैं। नहीं। स्व-परिवर्तन से सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने की जिम्मेवारी हर छोटे बड़े की है। जब बापदादा पूछते हैं क्या बनेंगे? तो सभी क्या कहते हैं? विश्व राजन बनेंगे। छोटा-मोटा भी नहीं, विश्व महाराजा बनेंगे। तो जब विश्व महाराजा बनने की जिम्मेवारी है तो सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन करने की जिम्मेवारी नहीं है? हर एक आत्मा बाप की पालना का रिटर्न - परिवर्तन करने में जिम्मेवार है, सहयोगी है। ऐसे है? यह ग्रुप तो पालना लेने वाला है। तो पालना लेना उसका रिटर्न है - बाप समान पालना देना, इसमें छोटे नहीं बनो। इसमें हर एक बड़ा है। चाहे एक साल वाला भी है तो भी जिम्मेवार है। तो आप तो 30 साल से पुराने हो। तो बापदादा इस ग्रुप को परिवर्तक ग्रुप कहते हैं। चलो कहाँ झुकना भी पड़े, क्या ब्रह्मा बाप को झुकना नहीं पड़ा? विरोध नहीं देखा? सबसे ज्यादा गाली तो ब्रह्मा बाप ने खाई। आपोजीशन सबसे बड़ा ब्रह्मा बाप ने देखा। अगर दो चार भी आपोजीशन में हैं तो क्या बड़ी बात है? तो समझा यह ग्रुप कौन सा है? परिवर्तक ग्रुप। ठीक है ना? नाम पसन्द है? काम पसन्द है? सिर्फ नाम नहीं, काम भी।

अच्छा - सिल्वर जुबली वाला ग्रुप क्या करेगा? यह तो हैं ही निमित्त टीचर्स। तो यह सिल्वर जुबली मनाने वाला ग्रुप सदा अपने उत्साह के फीचर्स, हर्षित, खुश रहने के फीचर्स द्वारा अनेक आत्माओं को हर्षायेंगे। टीचर्स का काम

ही है, रोता कोई आवे और नाचता जावे। परेशान कोई आवे और अपनी शान में स्थिति हो जाए। परेशान का अर्थ ही है, शान से परे हो जाता है। तो टीचर्स का काम है परेशान को शान में स्थित करना। यह है सिल्वर जुबली मनाने वालों की सेवा। ऐसे नहीं खुद ही परेशान हो। कई ऐसे जिज्ञासु कहते भी हैं कि बाहर से परेशान होकर आते हैं और कभी-कभी कोई-कोई सब नहीं हैं, कोई-कोई टीचर ही परेशान होती हैं, तो हमको क्या शान में स्थित करेंगी। लेकिन नहीं, टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे। बोलने का टाइम नहीं हो, कोई हर्जा नहीं। एक सेकण्ड में अपने हर्षित दिल से, हर्षित मन से परमात्म स्नेह से (आत्मा का स्नेह नहीं) परमात्म स्नेह द्वारा, दृष्टि द्वारा उसको भी हर्षित बना दे। टीचर्स अगर कभी परेशान होते भी हो गलती से, होना नहीं चाहिए लेकिन गलती से हो भी जाते हो तो फौरन बापदादा से कनेक्शन जोड़कर, रूहरिहान करके उसी समय अपने को ठीक करो। यहाँ बापदादा से कनेक्शन करने का ड्रामा दिखाया ना? (कल बम्बई के छोटे बच्चों ने बापदादा से रूहरिहान का एक ड्रामा किया था) तो आप बापदादा से कनेक्शन नहीं कर सकते हो क्या? आपके पास वायरलेस सेट नहीं है क्या? आजकल तो सेटेलाइट है ना, वह तो फौरन हो जाता है। तो टीचर्स के पास है? सबके पास है सिर्फ समय पर यूज़ करो। समय पर सिर्फ स्मृति का स्विच आन करो बस। फिर देखो सेकण्ड में परिवर्तन होता है या नहीं। जिस समय कोई ऐसी बात हो तो यह ड्रामा याद करना। लगाना कनेक्शन। तो समझा सिल्वर जुबली वालों को क्या करना है? बापदादा को तो टीचर्स सबसे ज्यादा याद रहती हैं। क्यों? जो भी सेवा के निमित्त हैं तो ब्रह्मा बाप की भुजाएं बनकर निमित्त हैं। तो बाप समान सेवा में हैं ना। इसलिए ऐसे निमित्त सेवाधारी बापदादा को सदा याद हैं। ऐसे नहीं समझना कि जिन्हों की गोल्डन जुबली हुई वह याद हैं, आप नहीं। पहले आप। छोटों के ऊपर और ही ज्यादा स्नेह होता है। इसलिए अभी मुझे बदलना है, मुझे बिगड़ी को बनाना है, दूसरा बिगाड़े, मेरा काम है बनाना। यह शिकायत नहीं, यह बिगाड़ते हैं ना, यह करते हैं ना। नहीं। वह बिगाड़ने में होशियार हैं, आप अपने काम में होशियार हो। बिगाड़ने वाला होशियार, बनाने वाला कम क्यों? आप होशियार हो जाओ, बिगाड़ने वाला क्या भी करे। तो बिगड़ी को बनाने वाले बाप समान आप आत्मायें हो। यह काम करेंगे तो हाथ हिलाओ। करेंगे,

पक्का? या वहाँ जाकर कहेंगे दादी क्या करें? शिकायत तो नहीं करेंगे? आज सब शिकायत का फाइल यहाँ शान्तिवन के डायमण्ड हाल में खत्म करके जाओ। हर्षित रहना है और हर्षित बनाना है। ठीक है ना? सिल्वर जुबली वालों से मिले ना? अब शिकायत तो नहीं होगी ना, हमसे तो मिले नहीं? आज दो ग्रुप हैं। लेकिन बाप को पाण्डव भी प्यारे हैं तो टीचर्स भी प्यारी हैं। तो क्या समझती हो? हो सकता है? कांध हिलाओ। पाण्डव हो सकता है कि होना ही है? क्या कहेंगे, हुआ ही पड़ा है? एक एक कांध हिलाओ। यही कहो हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। बापदादा की आशाओं के सितारे आप बच्चे हो। तो आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा? अच्छा।

मातायें सब खुश हो? कोई तकलीफ तो नहीं हुई? (सभी ने तालियां बजाई) इन्हों को यह दो हाथ की ताली बजाना अच्छा लगता है। अच्छा पाण्डव सब ठीक हैं? कोई तकलीफ नहीं? शान्तिवन अच्छा बना है, पसन्द है? बापदादा तो खुश होते हैं कि सभी बच्चों के सहयोग से यह शान्तिवन बना है। आप सबके सहयोग से यह स्थान बना है। इसलिए शान्तिवन के सर्व सहयोगी आत्माओं को बापदादा पदमगुणा मुबारक देते हैं।

डबल फारेनर्स हाथ उठाओ, देखो डबल फारेनर्स से हर सीजन बहुत अच्छी सज जाती है। डबल फारेनर्स मधुबन के श्रृंगार हो। आपको देख करके सभी को बहुत खुशी होती है। क्यों खुशी होती है, जानते हो? क्योंकि आप फारेनर्स बहुत फारेन क्लचर की दीवारें तोड़कर आये हो, यह जो गीत बजता है ना - वह आप डबल फारेनर्स के लिए बहुत अच्छा है। भारत वालों ने दीवारें तोड़कर आने की हिम्मत रखी लेकिन डबल फारेनर्स ने डबल दीवारें तय करके अपना विशेष पार्ट नूंध लिया। तो जहाँ भी डबल फारेनर्स हैं, सुन रहे हैं, उन सबको भी बापदादा पदमगुणा मुबारक देते हैं। डबल फारेनर्स इस ब्राह्मण परिवार के विशेष डायमण्ड हो। तो डायमण्ड चमकता है, कितना प्यारा लगता है। ऐसे डबल फारेनर्स इस ब्राह्मण परिवार में ब्राह्मण युग में बहुत-बहुत चमकते हुए विशेष आत्मायें हैं। फारेन के पत्र भी आये हैं, तो जिन्होंने भी पत्र भेजे हैं, बापदादा के पास तो सबके दिल की बातें पहुंच ही जाती हैं। उमंग-उत्साह और तीव्र पुरुषार्थ की खुशबू अच्छी आ रही है। अभी समय जैसे जैसे बीतता जाता है, तो बापदादा देख रहे हैं कि डबल फारेनर्स मैजारिटी अभी नालेजफुल अच्छे

बन गये हैं। माया को परखने की नज़र अब अच्छी तेज हो रही है। इसलिए बापदादा पत्रों से खुशबू लेते हैं और सच्ची दिल वाले हैं। गिरने की भी सच्चाई लिखते हैं तो उड़ने की भी सच्चाई लिखते हैं। साफ दिल हैं। तो जहाँ साफ दिल है, तो बापदादा सदा कहते हैं साफ दिल मुराद हांसिल। जो उमंगें, आशायें रखते हैं वह प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् मुराद हांसिल हो जाती है। बापदादा की मदद को कैच करने में अच्छे हैं इसलिए पत्र भेजने वाले वा अपने अपने स्थान पर सुनने वाले वा चारों ओर के डबल फारेनर्स को बापदादा दिल से पदमगुणा यादप्यार, मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बाम्बे के सेवाधारी ग्रुप हाथ उठाओ। अच्छा किया है। बाम्बे को तो बापदादा नर-देसावर कहते हैं। कमाने वाला बच्चा। बापदादा बाम्बे को सदा याद करता है। अच्छी हिम्मत से कर रहे हो, सब सन्तुष्ट हैं इसकी मुबारक। बाम्बे में अच्छे-अच्छे महारथी हैं, एक दो से आगे हैं। कोई किसी से कम नहीं है। बापदादा विशेषता के आधार से कहते हैं। अच्छी हिम्मत की। बापदादा को खुशी है कि बाम्बे सेवा की स्टेज पर आया। अच्छा लग रहा है ना? सेवा की स्टेज अच्छी है ना? अच्छा। हर एक अपने नाम से समझे कि मेरे को मुबारक और याद-प्यार स्पेशल है। सिर्फ नाम नहीं ले रहे हैं। अगर नाम लेंगे तो माला बन जायेगी। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म प्यार के सुखमय, आनंदमय झूले में झूलने वाली लकी और लवली आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा परमात्म अवार्ड लेने के पात्र हीरो पार्टधारी आत्माओं को, सदा बापदादा की पालना का रिटर्न देने वाले बाप के दिलतख्त नशीन आत्माओं को बापदादा का पदमगुणा, अरब-खरब से भी ज्यादा यादप्यार और नमस्ते।

दादी जानकी तथा सर्व दादियों को दृष्टि देते हुए:-

अच्छी ड्युटी ली है? सभी को खुशी में नचाने की ड्युटी अच्छी है। अभी यही चाहिए। शिक्षा सुनने कोई नहीं चाहता। तो सभी आदि रत्न यह ड्युटी विशेष बजाओ। कोई कैसा भी हो लेकिन आपके सामने आने से खुशी में नाचना शुरू कर दे। डायरेक्ट दाता के बच्चे हो ना और पहली रचना हो। तो आदि रचना का प्रभाव तो है ना। तो बापदादा भी आदि रत्नों को विशेष स्नेह देता है स्पेशल। अभी ऐसे साथियों को तैयार करो जो वायुमण्डल फैलायें। अच्छा। ओम् शान्ति।

31-12-97

इस नये वर्ष को मुक्ति वर्ष मनाओ, सफ़ल करो – सफ़लता लो

आज बापदादा अपने नव जीवन की श्रेष्ठ आत्माओं को, नव युग रचता आत्माओं को नये वर्ष की मुबारक दे रहे हैं। दुनिया के लिए नया वर्ष आरम्भ हो रहा है, आप बच्चों के मन में नव युग याद आ रहा है। जैसे नया वर्ष कल आने वाला है, ऐसे नव युग भी कल आने वाला है। ऐसे स्मृति आती है कि हमारा नया युग आया कि आया? जैसे आज नये वर्ष के लिए मनुष्य आत्माओं के दिल में खुशी है, अल्पकाल का उत्साह है, ऐसे आप आत्माओं को नव युग आने की सदाकाल की खुशी है। ऐसे लगता है कि बस आज और कल की बात है। आज पुराना युग है, कल नया युग सामने खड़ा है। ड्रामानुसार आज और कल की बात है, ऐसे स्पष्ट स्मृति अनुभव होती है? या सिर्फ नया वर्ष मनाने आये हो? नया वर्ष नव युग की याद दिलाता है। यह उमंग-उत्साह दिल में रहता है कि कल हम क्या होंगे? अपनी नई शरीर रूपी ड्रेस सामने आती है? याद है आपका नया शरीर नये युग में कैसा सुन्दर था? कैसा युग था, कैसे राज्य था, कैसे प्रकृति दासी थी, सतोप्रधान थी! उस राज्य अधिकारी स्थिति की स्मृति स्पष्ट है? दिखाई दे रही है, वह नई दुनिया कितनी सुन्दर है? एक सेकण्ड में अपने राज्य अधिकार का अनुभव कर सकते हो या कर रहे हो? बस एक सेकण्ड में नव युग में चले जाओ। जाना आता है? कितने वार यह राज्य अधिकार प्राप्त किया है, याद है? अनुभव करो अपना राज्य कितना प्यारा है! न्यारा भी है तो प्यारा भी है। तो सेकण्ड में बस हमारा राज्य और हमारा विश्व राज्य अधिकारी स्वरूप स्मृति में आ जाए। वे लोग नये वर्ष में एक दो को अल्पकाल की गिफ्ट देते हैं और बाप गिफ्ट देते हैं नव युग के, विश्व राज्य के अधिकार की। यह अविनाशी गिफ्ट इस समय बाप द्वारा आप सबके लिए अटल भावी बन जाती है। जिस भावी को कोई टाल नहीं सकता। अचल है, अखण्ड है। तो ऐसी गिफ्ट मिल गई है ना? तो यह गिफ्ट सम्भाल कर रखना, कोई डाकू यह गिफ्ट ले नहीं जाये। सबके पास डबल लॉक है ना? आजकल सिंगल लॉक नहीं चलता, डबल लॉक चाहिए। गाडरेज का लॉक नहीं, गॉड का लॉक चाहिए। तो गॉड ने ऐसा लॉक दिया है जो कोई भी तोड़ नहीं सकता।

अगर अलबेले हो जायेंगे तो डाकू आयेगा। डाकू भी होशियार होते हैं, उन्हों को पता पड़ जाता है कि इनका लॉक आज ढीला है, इसलिए अलबेले नहीं होना।

तो इस नये वर्ष में स्व के प्रति और सेवा के प्रति कोई नया प्लैन बनाया है? कान्फ्रेन्स करनी है, डायलॉग करना है, वह तो है ही। नया प्लैन क्या बनाया है? बापदादा इस नये वर्ष में, देश वा विदेश में वैरायटी वर्ग की विशेष आत्माओं का एक गुलदस्ता देखने चाहते हैं। वर्गों की सेवा तो बहुत की है ना, अभी हर वर्ग का ऐसा एक-एक रत्न तैयार करो, एक भी वर्ग मिस नहीं हो, क्यों? अभी जब समय समीप आ रहा है तो कोई भी वर्ग वाले उल्हना नहीं दें कि हमारा वर्ग रह गया। एक-एक वर्ग में विशेष एक-एक क्वालिटी का हो जो माइक का काम कर सके, क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है तो सर्व वर्ग वाले, सर्व धर्म वाले सबके मुख से एक आवाज निकले कि बाप आ गया, क्योंकि इस संगमयुग में ही सभी धर्म स्थापक आत्माओं वा सर्व वर्ग की आत्माओं में बीज पड़ना है। वह इतनी पावर अपने में ले जायेंगे जो फिर अपने-अपने समय पर वर्ग वा धर्म के इन्वेन्टर बनेंगे। तो सब बीज आपको तैयार करने हैं, जो समय पर अपने-अपने डिपार्टमेंट के निमित्त बनेंगे क्योंकि बीज बाप है और आप ब्राह्मण आत्मायें तना हो, सर्व आत्मायें बीज और तना द्वारा ही निकलते हैं। तो ऐसा गुलदस्ता बाप के सामने लाओ, विदेश वाले भी और देश वाले भी। एक-एक सैम्पुल लाओ, सैम्पुल से अन्य अनेकों स्वत: ही बनते हैं। लेकिन एक-एक पावरफुल माइक बनें, ऐसे बीज कहो, धर्म या वर्ग कहो वा वैरायटी फूलों का गुलदस्ता कहो तैयार होना चाहिए। एक भी मिस नहीं हो तब कहा जायेगा विश्व कल्याणकारी वा सर्व आत्माओं के निमित्त उद्धार करने वाली आत्मायें। एक शाखा भी कम नहीं, सर्व शाखायें चाहिए। चाहे आपके नव युग में कई वर्ग नहीं होंगे लेकिन उन आत्माओं में भी द्वापर में या कलियुग में जो इन्वेन्टर निमित्त हैं, उन्हों को शक्ति आप द्वारा ही मिलनी है। जैसे सभी धर्म पितायें आपके आगे बाप का झण्डा, प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, वैसे ही सर्व वर्ग वाले भी प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, तब कहेंगे सर्व के सहयोग से सुखमय दुनिया की स्थापना। सहयोगी बन रहे हैं लेकिन उनमें से अब विशेष आत्मा को सहयोग में आगे बढ़ाओ, निमित्त बनाओ। निमित्त बनाने का बीज डालो। समझा क्या करना है? विदेश में भी अभी

आई.पी. या वी.आई.पी. के कनेक्शन तो सहज हो गये हैं ना। मुश्किल नहीं है ना? मुश्किल है या सहज है? तो आप सभी जब दूसरे न्यु ईयर में फिर आयेंगे तो अगले न्यु ईयर की सौगात बापदादा ऐसा गुलदस्ता देखने चाहते हैं। एक साल है, कम नहीं है। देश वाले भी करेंगे, विदेश वाले भी करेंगे ? (हाँ जी) अवश्य करेंगे। कहो हुआ ही पड़ा है। सिर्फ निमित्त बनना है। डबल विदेशी बोलो? सब विदेशी ताली बजाओ। अच्छा-देखेंगे पहले कौन तैयार करता है - देश या विदेश? और कितना बड़ा गुलदस्ता तैयार करते हैं? ठीक है ना? चारों ओर सुन रहे हैं। देश वाले भी सुन रहे हैं, विदेश वाले भी सुन रहे हैं। अभी उमंग आ रहा है, उन्हों के मन में प्लैन बन रहा है - यह करेंगे, यह करेंगे। अच्छा - यह तो हुआ विश्व सेवा।

स्व के लिए क्या करेंगे? वह भी तो प्लैन बनेंगा ना? क्योंकि अगर स्व कल्याण का श्रेष्ठ प्लैन नहीं बनायेंगे तो विश्व सेवा में सकाश नहीं मिल सकेगी। इसलिए बापदादा सबके दिलों के उमंग-उत्साह को जानते हुए यही कहेंगे कि हर एक उत्सव में बच्चों ने चाहे गोल्डन जुबली वाले, चाहे डायमण्ड जुबली वाले, चाहे सिल्वर जुबली वाले, चाहे और भी जो जुबलियां होनी हैं, सभी ने दिल से, उमंग-उत्साह से अपने मन में यह बाप से वायदा किया है कि हम बाप समान बनकर ही दिखायेंगे। सभी ने यह वायदा किया है ना? डबल फारेनर्स ने वायदा किया है? (सभी ने हाथ हिलाया) अच्छा, मुबारक हो। वायदा तो बहुत मीठा, बहुत अच्छा, बहुत प्यारा, बहुत शक्तिशाली किया है। अभी सिर्फ निभाते रहना। वायदा करने वाले उस समय बहुत उमंग-उत्साह से करते हैं, हिम्मत भी बहुत अच्छी रखते हैं फिर क्या होता? कभी माया चूहे के रूप में आ जाती, कभी बिल्ली के रूप में आ जाती, बिल्ली क्या करती है? म्याऊं-म्याऊं करती है ना। तो बच्चे क्या करते हैं? मैं मैं मैं, तो यह बिल्ली की म्याऊं-म्याऊं नहीं करना। चूहा क्या करता है? चूहा बेसमझ होकर जो आता है वह खा लेता है, काट लेता है। तो माया भी बच्चों के खजानों को काटकर खा लेती है। कभी शेर आ जाता है, शेर क्या करता है? निर्भय वालों को भय पैदा कर देता है। सर्वशक्तिवान बच्चों को दिलशिकस्त बना देता है। ऐसे नहीं करना, आने नहीं देना, डबल लॉक लगाकर ही रखना। इस वर्ष किसी को भी आने नहीं देना।

यह वर्ष सर्व बातों से मुक्त वर्ष मनाओ। मुक्ति वर्ष। जब यह मुक्ति वर्ष

मनायेंगे तब मुक्तिधाम में जायेंगे। इसके लिए क्या करेंगे? बहुत छोटी सी बात है, बड़ी बात नहीं है। बापदादा सिर्फ छोटा सा स्लोगन दे रहे हैं ''सफल करो सफलता लो''। समझा! सफल करो, सफलता लो। क्या सफल करना है? जो भी आपके पास है, अपनी जो प्रापर्टी है ना - समय, संकल्प, श्वांस वा तन-मन-धन सफल करो, व्यर्थ न गंवाओ, न आइवेल के लिए सम्भालकर रखो। संकल्प को भी सफल करो। एक-एक संकल्प - यह आपकी प्रापर्टी है। जैसे धन स्थूल प्रापर्टी है, वैसे सूक्ष्म प्रापर्टी है समय, श्वांस, संकल्प। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जाये, सफल हो। चाहे मन्सा सेवा द्वारा, चाहे वाचा द्वारा, चाहे कर्म द्वारा - चेक करो, सफल कितना किया? जमा कितना किया? और बापदादा इस वर्ष यह विशेष वरदान दे रहे हैं - सफल करो और पदमगुणा सफलता का अनुभव करो। यह प्रत्यक्ष फल सहज प्राप्त कर सकते हो, सिर्फ सच्ची दिल से। सच्ची दिल पर भोलानाथ बाप बहुत सहज राज़ी हो जाता है, इसलिए सफल करो। ज्ञान धन, शक्तियों का धन, गुणों का धन हर समय सफल करो। सफल करना आता है वा किनारे करना वा सम्भालने बहुत आता है? किनारे नहीं करो, लगाओ। जब कहते हो कि अचानक सब होना है, एवररेडी बनना है। तो जो भी है उसको सफल करो। बापदादा को नहीं चाहिए, अपने लिए जमा करो। बापदादा तो दाता है लेकिन सफल करना अर्थात् जमा करना क्योंकि बापदादा ने समय प्रमाण जमा का खाता देखा, हर एक बच्चे के जमा का खाता बापदादा के पास है। तो जमा के खाते में क्या देखा? कई बच्चे समझते वा कहते बहुत हैं कि हमारा यह भी जमा है, यह भी जमा है, बाहर से जमा का खाता बहुत वर्णन करते हैं लेकिन बाप के जमा के खाते में जो जितना कहते हैं, समझते हैं उससे बहुत कम जमा है। क्यों? वही पहला पाठ ''मैं और मेरा-पन''। मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय, वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा। और मैं मेरा बोलेंगे तो ट्रांसफर होकर व्यर्थ के खाते में जमा हो जायेगा। यह ऑटोमेटिक मशीनरी बहुत फास्ट है, आप लोगों को पता भी नहीं पड़ता

है। इसकी चेकिंग भी बहुत सच्चे दिल से, मैं-पन से न्यारे होकर करने वाले कर सकते हैं। जब आप आदि रत्न आदि में स्थापना में निकले, सेवा में निकले तो क्या भाव रहता था? क्या बोल निकलता था? मैं-पन था? बाबा-बाबा कहा तभी वारिस बाबा के बने, जो आज सेवा के आदि बनें, यह बाबा-बाबा कहने का सबूत है।

अभी बापदादा के पास वारिस क्वालिटी बहुत कम आती हैं, क्यों? बाबा और मैं-पन मिक्स है। इसलिए इस वर्ष में बापदादा खुली दिल से वरदान दे रहे हैं - **जितना जमा करने चाहो उतना कर लो, कर लो, कर लो।** सफल करो सफलता मूर्त बनो। अच्छा।

अभी कौन सा उत्सव मनाया? सिल्वर जुबली। सिल्वर जुबली वाले हाथ उठाओ। जिन्हों की सेरीमनी मनाई वह हाथ उठाओ। डबल सेरीमनी मनाई है। भारत की भी तो विदेश की भी। अच्छा है यह सेरीमनी मनाना अर्थात् अपने आपको पक्की प्रतिज्ञा की स्टैम्प लगाना। सेरीमनी मनाई, बापदादा को भी दृश्य अच्छा लगता है। साथ-साथ जो संकल्प करते हो, उसको ऐसी आलमाइटी गवर्मेन्ट की स्टैम्प लगाओ जो सदा अविनाशी, अटल रहे। मनाना अर्थात् वायदा निभाना। तो ऐसी पक्की स्टैम्प लगाई? या कच्ची स्टैम्प लगाई है? पक्की लगाई? यह सिल्वर जुबली वाले कुमार, हाथ तो अच्छा हिला रहे हैं, पक्की मनाई है? अच्छा है। यह दृश्य भूल नहीं जाना। कभी भी कुछ भी कमजोरी आये तो अपने उत्सव का फोटो सामने लाना। हर एक का फोटो निकालते हैं ना। सबको मिलता है? तो ऐसे फोटो नहीं निकलता है, मतलब से निकलता है। फोटो इसीलिए निकलता है कि जब ऐसा कोई समय आवे तो फोटो सामने रखना, ऐसे नहीं आलमारी में बन्द रख दो जो समय पर भी याद नहीं आवे। यह सबसे बड़ी सौगात है, यह स्मृति दिलाने की निशानी है।

तो यह जो सिन्धी ग्रुप आया है वह हाथ उठाओ। अच्छा - आपने उत्सव मनाया? फोटो निकला? अभी क्या करेंगे? सम्भालकर रखेंगे ना? इस ग्रुप का हेड कौन है? (नारी भाई और गोविन्द भाई) हेड तो पावरफुल है। अभी इस ग्रुप को बहुत-बहुत-बहुत पक्का रखना, सम्भालना। उत्सव मनाया है सदा उत्साह में रहने के लिए। यह ज्ञान, योग का उत्साह कम नहीं हो। सदा बढ़ता रहे। शक्तियों में जिम्मेवार कौन है? (त्रिमूर्ति है) सभी की युनिटी बहुत है। अमर रहना। अमर

भव। अच्छे हैं। देखो, बापदादा सिन्धी ग्रुप को क्यों आगे रखता? वैसे तो सभी हैं ना? सभी एक दो से आगे और प्यारे हैं लेकिन खास सिन्धी ग्रुप को आगे क्यों रखता? इस सिन्धी ग्रुप को चैरिटी बिगन्स एट होम...., जहाँ से स्थापना हुई, उस कुल को जगाना है। इसलिए बापदादा आप सभी को विशेष याद भी करता, निमित्त भी बनाया है तो निमित्त बन अपने लौकिक कुल सिन्धियों को जगाओ, रह नहीं जावें। फिर भी ब्रह्मा बाप का स्थापना का कार्य सिन्ध में हुआ है। तो जहाँ स्थापना हुई वह आत्मायें वंचित नहीं रह जायें। बापदादा को भी उन आत्माओं पर तरस पड़ता है। ब्रह्मा का तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना। इसलिए ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को निमित्त बनाया है। समझा जिम्मेवारी, है या नहीं? यह होशियार है। देखो जब स्थापना हुई तो पहला परिवार ब्रह्मा बाप का और साथ में आपका (नारी भाई का) परिवार निमित्त बना। पता है ना? तो अभी आप क्या करेंगे? (उत्तर बहुत अच्छा देता है) बापदादा कहते हैं आपके मुख में गुलाबजामुन। गुलाब नहीं। सिर्फ गुलाब क्या करेंगे, गुलाबजामुन खायेंगे ना। ऐसे नहीं एक को कह रहे हैं, सभी को निमित्त बनना है और दूसरा है सावित्री का परिवार। आप लोगों को पता है, आपका परिवार सेवा में पहले निमित्त बना है। विशेष सेवा को आगे बढ़ाया है तो अभी क्या करना है? फालो लौकिक माँ बाप। तो फालो करना है? अभी बापदादा देखेंगे दोनों परिवार क्या कमाल करके दिखाते हैं। अच्छा है, निमित्त बने हो, जैसे माँ बाप निमित्त बनें, बड़े निमित्त बनें, ऐसे फालो करो। ठीक है ना। देखो स्पेशल बापदादा आपसे मिल रहा है। तो लक है ना। अच्छा।

अभी कुमार क्या करेंगे? (कुमार 5 हजार आये हैं) बहुत अच्छा। कुमार कोई नई कमाल करके दिखाओ, ऐसी कमाल दिखाओ जो असम्भव को सम्भव करके दिखाओ। कुमारों को बापदादा विश्व की स्टेज पर एक्जैम्पुल बनाकर खड़ा करने चाहते हैं। ऐसे कुमार हीरो पार्ट बजायेंगे? पक्का या हाथ उठाने तक? देखो हीरो पार्ट बजाने वाले बेदाग हीरा होना चाहिए। डबल हीरो। बेदाग हीरा भी और हीरो पार्टधारी भी। ऐसे हैं?

डबल फारेनर्स क्या कमाल करेंगे? डबल फारेनर्स ऐसी कमाल करके दिखाओ जो ऐसी आत्माओं को सन्देश दो जो भारत के लिए माइक बनें, क्योंकि भारत के माइक का भी प्रभाव है लेकिन फारेन के माइक का प्रभाव

डबल पड़ेगा। तो डबल फारेनर्स को ऐसे माइक तैयार करने हैं। करेंगे? अगले वर्ष माइक आना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ भाषण करके चले जायें, नहीं। संबंध में समीप हों। भले ज्ञान, योग में नियमित नहीं बनें लेकिन मानें कि सचमुच यह ईश्वरीय कार्य है और जीवन बनानी ऐसी चाहिए लेकिन मेरे में हिम्मत कम है। उसमें भी कोई हर्जा नहीं, औरों के निमित्त माइक बनते-बनते स्वयं बन ही जायेगा। वैसे सीधा स्टूडेन्ट नहीं बनेंगे लेकिन सेवा के बल से दूसरों के निमित्त बनते, उसके प्रभाव से बन जायेंगे। तो सुना डबल फारेनर्स ने? अभी देखेंगे कौन सा देश निमित्त बनता है। जो भी देश निमित्त बने, फिर उसको अवार्ड देंगे।

डबल विदेशी वहाँ भी सुन रहे हैं, उन्हों की भी दिल में आ रहा है, ढूंढ रहे हैं किसको निमित्त बनायें। अच्छा। फारेन के यूथ ग्रुप हाथ उठाओ। (20 देशों से 170 यूथ ने रिट्रीट में भाग लिया है) अच्छा किया। अभी विदेश के यूथ ऐसी सेवा करके अपना ग्रुप तैयार करो, तो फिर जब महात्माओं का सम्मेलन होगा ना, उसमें आप सभी यूथ ग्रुप को निमन्त्रण देंगे। तो आप यूथ के आगे यह महात्मायें जो हैं वह सिर झुकावें, समझा। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो।

(यूथ ग्रुप के मास्टर, जापान के ली भाई से) अच्छा ग्रुप तैयार किया है। अभी ऐसा तैयार करो जो भारत के महात्मायें ब्रह्मचर्य में रहना असम्भव वा मुश्किल समझते हैं, उन्हों को यह यूथ अपने अनुभव से सुनावें कि मुश्किल नहीं है, सहज है और हम सहज योगी, सहज ब्रह्मचारी बने हैं। तो ऐसे पक्के ब्रह्मचारी योगी आत्मायें इन्हों का प्रभाव, उन्हों पर भी पड़ेगा। यह भी प्रत्यक्षता का एक निमित्त दृश्य बनेगा। गवर्मेन्ट को भी दिखायेंगे कि यह यूथ देखो, अपनी मन्सा द्वारा भी विश्व कल्याण के निमित्त हैं। ठीक है ना? अभी पक्का ग्रुप चाहिए। ऐसे नहीं गवर्मेन्ट और सन्यासियों के आगे रखें और कुछ समय के बाद फिर फेल हो जायें। नहीं। पक्के हों। ऐसा पक्का ग्रुप बापदादा को बताना जो गैरन्टी करे कि हम अचल, अडोल, अविनाशी ब्राह्मण आत्मायें हैं। कुछ भी हो जाए हिले नहीं। तो ऐसा ग्रुप बापदादा के सामने लाना। ठीक है ना? अच्छी हिम्मत वाले हैं। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद है ही है। अच्छा। मुबारक हो।

भारत के यूथ भी ऐसे तैयार हों। ऐसे पक्के यूथ तैयार करो। आज पक्के कल कच्चे नहीं। (सभी ने वायदे लिखकर दिये हैं) बापदादा लिखतें तो बहुत

देख चुके हैं। (सभी हंसने लगे) हंसते हैं। वायदे के पत्र बापदादा के पास सभी के बहुत जमा हैं। तो भारत के यूथ बताओ जो आज वायदा किया है, वह फाइल में रहेगा या फाइनल रहेगा? क्या होगा? फाइनल होगा या फाइल में रहेगा? जो पक्के हैं वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। यह वीडियो आप लोगों को भेजा जायेगा। फाइनल वायदा करने वाले एक्जैम्पुल बनेंगे। बाकी फाइल तो बापदादा के पास बहुत-बहुत हैं। समझा। फाइल में नहीं रखना, फाइनल बनकर दिखाना। अच्छा।

अच्छा – (दिल्ली वालों ने मेला सम्भाला है) सभी को अच्छी सेवा की लाटरी मिली है। तो दिल्ली वालों ने सेवा की लाटरी ले ली और हर समय के लिए सेवा की नूँध, नूँध ली। सेवा पसन्द है? दिल्ली वाले जो सेवा में आये हैं वह उठो। आगरा वाले उठो। अच्छा है, सहयोगी बनना अर्थात् समीप आना। विशेष आत्माओं के समीप आने का चांस मिलता है और साथ-साथ सेवा का बल समय पर कार्य में आता है। तो जमा भी करते हो और श्रेष्ठ आत्माओं के समीप भी आते हो। अनेक ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क में आते, तो नजदीक आने का यह साधन अच्छा है। सभी को चांस दिया है, अच्छा किया। दिल्ली वालों को पसन्द है ना! अच्छा।

(रतन भाई लण्डन तथा अन्य दो भाईयों से)– ईश्वरीय सेवा का कोई भी कार्य होता है, उसका लक्ष्य आत्माओं को बाप के समीप सम्बन्ध में लाना है। उन्हों का किसी भी प्रकार से जमा कराने का साधन है। तो सभी इसी लक्ष्य से सेवा के निमित्त हो ना? यही लक्ष्य है ना? तो बापदादा देखेंगे कितनी आत्माओं का भविष्य बनाने के निमित्त बने हैं। ग्रुप ले आयेंगे ना? अच्छा गुलदस्ता ले आना। फाउण्डेशन का गुलदस्ता ले आना। पसन्द है? जो कार्य होता है उसमें सेवा समाई हुई है। सिर्फ निमित्त बनना होता है। तो अच्छा किया है। अभी बापदादा के आगे गुलदस्ता ले आना। ठीक है ना? अच्छा उमंग है। हिम्मत वाले को बाप की मदद मिलती ही है। तो कार्य की मुबारक हो और इनएडवांस गुलदस्ते लाने की भी मुबारक। अच्छा।

सभी की मुबारक सुन-सुनकर सब खुश हो रहे हैं तो आप सभी को कितनी मुबारक मिली? अरब खरब से भी ज्यादा मुबारक है। अच्छा।

सर्व नव युग के विश्व अधिकारी, नव जीवन द्वारा विश्व परिवर्तक आत्माओं

को, सदा सफल करने से सफलतामूर्त बनने वाली आत्माओं को, सदा अपने किये हुए वायदों को साकार स्वरूप देने वाले अचल, अखण्ड स्वरूप आत्माओं को, सदा उत्सव में रह औरों को भी उत्सव द्वारा उत्साह दिलाने वाले आत्माओं को, बापदादा का नये वर्ष और नये युग के स्थापना की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। साथ-साथ हिम्मत रख सर्व बच्चे आगे बढ़ने वाले हिम्मते बच्चे और मददे बाप ऐसे सर्व बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(रात्रि १२ बजे के बाद बापदादा ने
सभी बच्चों को पुनः नये वर्ष की बधाई दी)

सर्व विश्व के कोने-कोने में, विश्व के चारों ओर विशेष नव जीवन में रहने वाले सभी को नये वर्ष के साथ-साथ नव युग की भी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। ब्राह्मण बच्चों के लिए तो हर दिन, हर सेकण्ड नया है। तो अभी पुराने वर्ष की विदाई है और नये वर्ष को बधाई हो। ऐसे सदा हर सेकण्ड जो भी संकल्प करो, कर्म करो हर कर्म, संकल्प बधाई वाले हो। जो भी सम्पर्क में आये वह सदा बधाई हो, बधाई हो, यही गीत गाते रहें। इस नये वर्ष में सभी को जो भी मिले वा जो भी साथ में रहते हैं, उन्हों को सदा खुशी की, दिलखुश मिठाई खिलाते रहना और सदा खुशी में मन से नाचते रहना और सेवा में सभी को खुशी का खजाना भर-भरकर बांटते रहना। तो ऐसे नये जीवन, नये उमंग-उत्साह की चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष के साथ-साथ मुबारक हो, मुबारक हो। गुडनाईट और गुडमार्निंग।

अच्छा। ओम् शान्ति।